# सेवासदन - प्रेमचन्द

**अनुक्रमणिका :-**

1. 'सेवासादन' उपन्यास के 'सुमन' का चरित्र - चित्रण कीजिए।
2. 'सेवासदन' उपन्यास में 'गजाधर' के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।
3. 'विट्ठलदास' का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. 'पद्मसिंह' के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालिए।
5. सदन के चरित्र पर और उसकी दुर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
6. 'सेवासदन' उपन्यास की समस्याओं एवं समाधान प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

# 'सेवासदन' उपन्यास

## 1. 'सेवासदन' उपन्यास के 'सुमन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा
3. विलासिता के प्रति आकर्षित
4. रूपगर्विता
5. सुशिक्षित एवं चतुर नारी
6. संघर्षमय जीवन
7. निर्लिप्त जीवन
8. स्वाभिमान तथा बुद्धिमत्ता
9. धार्मिक - पथ
10. उपसंहार

### 1. प्रस्तावना :-

सुमन 'सेवासदन' उपन्यास की नायिका है। उपन्यास की वह सर्वाधिक शक्तिशलिनी है। अतुलित सौन्दर्य एवं सेवाभाव के समन्वय पात्र के रूप में वह उपन्यास में प्रस्तुत होती है। चंचल होते हुए भी वह चित्त की दुर्बलताओं को दूर करने की क्षमता रखती है। मांसल सौन्दर्य के साथ वह अत्यन्त अन्तर्दृष्टि रखती है।

### 2. अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा :-

सुमन मुग्ध मनोहरकारिणी अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा है। उस का सौन्दर्य चंचल स्वाभिमान युक्त होता है। लम्बे-लम्बे केश, कुन्दन का दमकता हुआ मुखचन्द्र, चंचल, सजीव मुस्कराती हुई आँखें, कोमल चपल गात, ईंगुर-सा भरा हुआ शरीर, अरुण वर्ण कपोल आदि से शोभित अतुलित सौन्दर्य की राशि के रूप में सुमन प्रस्तुत होती है। सुमन के लावण्यमय सौन्दर्य पर भोली बाई भी चकित होकर कहती है, ''अब तक सेठ बलभद्रदासजी मुझ से कन्नी काटते

फिरते थे, इस लावण्यमयी सुन्दरी पर भ्रमर की भाँति मण्डराएँगे। सुमन का सौन्दर्य 'सेवासदन' उपन्यास में आकर्षण का एक केन्द्र - बिन्दु है। सारी घटनाएँ तथा अन्यपात्र सुमन से प्रभावित हैं।''

**3. विलासिता के प्रत आकर्षित :-**

सुमन में भोग - विलास के प्रति अद्‌भुत ललक दिखाई देती है। भोग-विलास को वह सम्मान समझती है। भोलीबाई के ऐश्वर्य से प्रभावित होकर वह पति गजाधर से कहती है, ''वह चाहे तो हम - जैसों को नौकर रखले।'' इस सम्बन्ध में उपन्यासकार प्रेमचन्द स्वयं कहते हैं,''उसने गृहिणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्द - भोग की शिक्षा पायी थी।''

सुमन में कुशल गृहिणी के लक्षण नहीं है। इसी कारण वह पति गजाधर के अल्पवेतन को वह खोमचे वालों की वस्तुओं को अकेले ही खा कर समय से पहले समाप्त कर देती है। पति गजाधर सुमन के रूपलावण्य पर मुग्ध हो वह सदा पत्नी को प्रसन्न रखना चाहता था। घर का सरारा काम वह स्वयं करता था। लेकिन सुमन ने गृहिणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्द-भोग की शिक्षा पायी थी। सुमन की मोहिनी सूरत ने पति को वशीभूत कर लिया था। किन्तु सुमन जिह्वा-रस भोगने के लिए पति से कपट करती रहती है। उसके सौन्दर्य की चर्चा मुहल्ले में भी फैल जाती है। पडोसियों के बीच सुमन सौन्दर्य की रानी मानी जाती है।

पति गजाधर द्वारा सुमन घर से निकाल दी जाती है, तो विपत्ति के समय उसकी मनोवृत्तियाँ और भी प्रबल हो उठती हैं। वेश्या बनना वह अपना सौभाग्य समझती है। सुमनबाई बनने पर उसका आत्मकथन है - '' मेरा तो यह अनुभव है कि जितना आदर मेरा आज हो रहा है, उसका शतांश भी नहीं होता था। एक बार मैं सेठ चिम्मन लाल के ठाकुर द्वार पर झूला देखने गयी थी, सारी रात बाहर खडी भी गती रही, किसीने भीतर न जाने दिया, लेकिन कल उसी ठाकुर द्वार में मेरा गाना हुआ तो ऐसा जान पडता था, मानो मेरे चरणों से मन्दिर पवित्र हो गया। ''

विट्‌ठलदास के द्वारा दिये गये ज्ञान से प्रभावित हो वह वेश्या मार्ग को हेय समझकर कहती है, - ''आप सोचते होंगे कि भोग विलास की लालसा से कुमार्ग में आयी हूँ, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। मैं ऐसी अन्धी नहीं कि भले - बुरे को पहचान न कर सकूँ। मैं जानती हूँ कि मैंने - अत्यन्त निकृष्ट कर्म किया है। लेकिन मैं विवश थी, इस के सिवा मेरे और कोई रास्ता न था।''

सुमन का यह आत्म-कथन नारी की दयनीय दशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। प्राय: तत्कालीन समाज में अपनी रक्षा का अन्य मार्ग न देख कर इन विचारों के अन्तर्द्वन्द्व में स्त्रियाँ वेश्या बन जाने के लिए बाध्य हो जाया करती थीं। गजाधर का यह कथन इसकी पुष्टि करती है- ''मेरी असज्जनता और निर्दयता सुमन को चंचलता और विलास लालस ने मिलकर हम दोनों का सर्वनाश कर दिया।''

कथानक की चरम परिणति में अपनी दुर्दशा का श्रेय विलास - प्रवृत्ति को त्याग देते हुए समुन कहती - ''नहीं, मैं किसी को दोष नहीं दे सकती, बुरे कर्म तो मैंने किए हैं, उनका फल कौन भोगेगा? विलास - लालसा ने मेरी यह दुर्गति की। मैं कैसी अन्धी हो गई थी, केवल इन्द्रियों के सुख-भोग के लिए अपनी आत्मा का नाश कर बैठी।'' प्रेमचन्द लिखते हैं - यह सुमन है या उसका शव, अथवा उसकी निर्जीव मूर्ति? उस वर्णहीन मुख पर विरक्ति, संयम तथा आत्म-त्याग की निर्मल शान्तिदायिनी ज्योति झलक रही थी।

### 4. रूपगर्विता :-

सुमन का चंचल स्वभाव उसे अस्थिर करता है और उसके गृहिणी स्वरूप को भी विकृत कर देता है। वह अपने इसी स्वभाव को समस्त आपत्तियों का कारण मानती है। सुमन अपने अन्तस से कहती है - ''हाँ! प्रभो! तुम सुन्दरता देकर मन को क्यों चंचल बना देते हो? मैंने सुन्दर स्त्रियों को प्राय: चंचल ही पाया। कदाचित, ईश्वर इस युक्ति से हमारी आत्मा की परीक्षा करते हैं, अथवा जीवन-मार्ग में सुन्दरता रूपी बाधा आग में डाल कर उसे चमकाना चाहते हैं, पर हाँ। अज्ञानवश हमें कुछ नहीं सूझता, यह आग हमें जला डालती हैं, वह बाधा हमें विचलित कर देती है।''

इस प्रकार सुमन अपने आत्मकथन द्वारा व्यक्त कर देती है कि स्त्री का गौरव, सौन्दर्य एवं महत्त्व स्थिरता में है।

### 5. सुशिक्षित एवं चतुर नारी :-

सुमन सुशिक्षित, विदुषी एवं चतुर नारी है। वह समय - समय पर धार्मिक पुस्तकों, रामायण आदि का अध्ययन करती रहती है। उसमें किसी बात को समझाये जाने पर अच्छे और बुरे का अन्तर करने की अद्‌भुत क्षमता है। वेश्या बन जाने पर रातों में वह सदैव ज्ञान - चक्षु, खोल कर इस तथ्यपर मनन करती है - 'जो शान्तिमय सुख सुमन को प्राप्त है, क्या वह मुझे मिल सकता है? असम्भव! जहाँ तृष्णा-सागर है, वहाँ शान्ति - सुख कहाँ है?

आदर एवं निर्लज्जता के सम्बन्ध में कहे गये कथन भी उसके सांसारिक ज्ञान के परिचायक हैं – आज चाहे समझते हों कि आदर और सम्मान की भूख बडे आदियों को ही होती है, किन्तु दीन दशावाले प्राणियों को उसकी भूख और भी अधिक होती है, क्यों कि उनके पास इन को प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है। वह इनके लिए चोरी, छल–कपट, सब कुछ कर बैठते हैं। आदर में वह सन्तोष है जो धन और भोग – विलास में नहीं है।'

''यहाँ आकर मुझे मालूम हो गया है कि निर्लज्जता सब कष्टों से दुस्सह है और कष्टों से शरीर को कष्ट होता है, इस कष्ट से आत्मा का संहार हो जाता है।''

सुमन के प्रति विट्ठल दास का कथन है – ''सुमन, तुम वास्तव में विदुषी हो।''

**6. संघर्षमय जीवन :-**

'सेवासदन' उपन्यास में सुमन ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो समस्त आपत्तियों का सामना स्वयं करती है। अपने द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए स्वयं तैयार है।

''मैं सहानुभूति की भूखी थी, वह मुझे मिल गयी। अब मैं अपने जीवन का भार आप लोगों पर नहीं डालूँगी आप केवल मेरे रहने का प्रबन्ध कर दें जहाँ मैं विघ्न– बाधा से बची रह सकूँ।''

''मैं परिश्रम करूँगी। अपनी निर्लज्जता का कर आप से न लूँगी।''

**7. निर्लिप्त जीवन :-**

सुमन सब कुछ क्रीडापूर्वक करती है और बडे ही विनोदपूर्ण ढंग से परिस्थितियों के साथ स्वयं आनन्दित रहती है। दालमण्डी छोडते समय वह अपने प्रेमियों को बिदा करती है। उस समय प्रकृति हास्य से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होती है।

वह सिगरेट की एक डिबिया मँगवाती है और वारनिश का एक बोतल मँगाकर ताक पर रख देती है और एक कुर्सी का एक पाया तोड कर कुर्सी छज्जे पर दीवार के सहारे रखदेती है। पाँच बजते – बजते मुंशी अनुलवफा का आते है। इधर–उधर की बातें करने के पश्चात सुमन बोलती है – ''आइए, आज आप को वह सिगरेट पिलाऊँ कि आप भी याद करें।'' सुमन सलाई रगडकर अबुलवफा की दाढ़ी का सर्वनाश कर देती तो हँसी उसके ओठों पर आ जाती है। इस प्रकार विनोद क्रीडा में वह सब कुछ भूल कर हास्य का आनन्द लेती है।

**8. स्वाभिमान तथा बुद्धिमत्ता :-**

सुमन बडी स्वाभिमानिनी है। वह किसी के सामने अपने को ही मानकर नहीं आती, पडोसियों ने उसके सौन्दर्य रीति, व्यवहार और गुणों पर मुग्ध हो कर उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। अपने इस गुण के कारण ही वह प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व चाहती है। पडोसियों के मध्य वेश्या बन जाने पर दालमण्डी में इसी प्रवृत्ति के कारण आधिपत्य स्थापित कर पाती है। आश्रम में सेवाधर्म का पालन करके पति के घर सारे कष्ट झेल कर भी रानी बन कर सम्मान से रहने वाली महत्त्वाकांक्षी प्रवृत्ति का प्रदर्शन करती है। वह मानिनी सगर्वा नारी के रूप में विलसित चरित्रवाली है।

सुमन चंचल प्रकृति की नायिका है, जिसके कारण उसकी बुद्धि आच्छन्न हो गई थी और वह भोली के आश्रय तक आ पहुँचती थी, किन्तु उसके बौद्धिक रूप का जागरण भी उपन्यास के घटनाक्रम में बुद्धिमत्ता की ओर इंगित करता है। विट्ठलदास की धार्मिक बातों से उसके उच्छृंखल बौद्धिक विचारों में परिवर्तन आता है। वह अपने झोंपडे में सन्तुष्ट रहती है। अन्त में प्रत्युपकार करने की भावना भी उस में जागरित होती है।

**9. धार्मिक पथ :-**

सुमन वेश्या जीवन के कारण समाज में तिरस्कृत होती है। चंचलता और तृष्णा से विरक्त हो वह धार्मिक पथ का अनुसरण करती है। धन की अपेक्षा वह सेवा - निरत हो जीवन को परिवर्तित कर देती है। उसका त्यागमय जीवन और सेवा-भाव उसे अत्यन्त ऊँचे स्थान पर बैठा देते हैं।

**10. उपसंहार :-**

अन्त में गजानन्द सुमन की प्रशंसा में कहता है, ''मैं ने तुम्हें आश्रम में देखा, सदन के घर में देखा, तुम सेवाव्रत में मग्न थीं, तुम्हारे लिए ईश्वर से यही प्रार्थना करता था। तुम्हारे हृदय में दया है, प्रेम है, सहानुभूति है और सेवा - धर्म के यही साधन हैं, तुम्हारे लिए उसका द्वार खुला है।''

अपनी इसी भावना के द्वारा सुमन 'सेवासदन' को आदर्शमय तथा उन्नत अवस्था पर पहुँचा देती है। निस्स्वार्थ त्याग वृत्ति से उसका चरित्र प्रकाशित होता है।

उपन्यास में सुमन एक सुन्दर, चंचल और अभिमानिनी के रूप में दर्शाती है। अन्त में आकर केशहीना, आभूषण हीना और रूप लावण्य के स्थान पर पवित्रता की ज्योति के रूप में दिखाई देती है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

# 2. 'सेवा सदन' उपन्यास में 'गजाधर' के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. क्रोधी प्रवृत्ति
3. निर्धनता
4. अव्यवस्थित चित्त
5. सामाजिक व्यंग्य
6. आत्मोद्धार का मार्ग
7. उपसंहार

**1. प्रस्तावना :-**

'सेवासदन' नायिका प्रधान उपन्यास है। नायक निश्चित करना कठिन है, परन्तु उपन्यासकार की विचारधारा को अभिव्यक्त करने वाला पात्र गजाधर होने के कारण उसी को इस उपन्यास का नायक कहना उचित होगा। जीवन पर्यन्त दुखों को भोगते हुए कथानक की चरमसीमा के समय सुखद और त्यागमय जीवनकी ओर वह अग्रसर होता है। नायिका भी आजीवन अलग मार्ग पर चलकर अन्त में नायक के उपदेशों से प्रभावित होकर उसी का अनुसरण करती है। इसके अलावा कथानक में स्थान - स्थान पर गजाधर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: वही नायक होने का आदर पात्र है।

**2. क्रोधी प्रवृत्ति :-**

गजाधर वस्तुत: क्रोधी स्वभाव वाला है। पत्नी सुमन के गृह-निर्वाह में कुशल न होने केकारण और अत्यन्त शंकालु स्वभाववाला होने के कारण उसका क्रोध व्यक्त होता रहता है। छोटी - छोटी बातों पर वह सुमन पर क्रोध प्रकट करता है, जैसे - ''रूपये तो तुमने खर्च कर दिये, अब बताओं कहाँ से आये ? ...... तो मैं डाका तो नहीं मार सकता।'' आदि छोटी - छोटी बातों पर उसका क्रोधी स्वभाव प्रकट होता जाता है। उसके क्रोध का प्रधान कारण गृहस्थी में आर्थिक संकट है।

सुमन भोली बाई के घर जाकर देर से लौटती गजाधर और उत्तेजित होता है। वह सुमन को डाँटता है और सुमन भी अपना समाधान देती जाती है।

गजाधर :- तुम इतनी रात तक वहाँ बैठी क्या कर रही थी ? क्या लाज - शर्म बिलकुल घोलकर पी ली है ?

सुमन :- उसने कई बार बुलाया तो चली गयी। कपडे उतारो, अभी खाना तैयार हुआ जाता है। आज तुम और दिनों से जल्दी आये हो।

गजाधर :- पहले यह बताओ कि तुम वहाँ मुझ से पूछे बिना गयी क्यों ? क्या तुमने मुझे बिलकुल मिट्टी का लोंदा ही समझ लिया है ?

सुमन :- सारे दिन अकेले इस कुप्पी में बैठे भी तो नहीं रहा जाता।

गजाधर :- तो इसलिए अब वेश्याओं से मेल - जोल करोगी ? तुम्हें अपनी इज्जत-अबरू का भी कुछ विचार है ?

सुमन :- क्यों, भोली के घर जाने में कोई हानि है ? उसके घर तो बडे-बडे लोग आते हैं, मेरी क्या गिनती है !

गजाधर :- बडे-बडे भले ही आवें, लेकिन तुम्हारा वहाँ जाना बडी लज्जा की बात है।

छोरी सी बात पर भी इस प्रकार गजाधर अवांछित गति से उग्र रूप धारण कर सुमन पर टूट पडता है। धर्म का महत्त्व वह धन से कहीं बडा मानता है।

एक दिन गजाधर नियमानुसार रातनौ बजे धर आता है। किवाड बन्द था। पता लगा सुमन सुभद्रा के धर गयी है। दस बज गये तो उसने खाना परसा। लेकिन क्रोध में कुछ खाया न गया। उसने सारी रसोई उठाकर बाहर फेंक दी और भीतर विवाड बन्द करके सो रहा। किन्तु नीन्द न लगी तो वह द्वार पर स्वयं बैठता है। सुमन एक बजे घर पहुँचती है तो गजाधर उसे उसी वक्त बाहर कर देता है।

**गजाधर स्वभावतः**

कृपण है। जलपान की जलेबियाँ उसे विष के समान लगती हैं। दाल में घी देख कर उसके हृदय में शूल होने लगता है। दरवाजे पर दाल-चावल फेंका देख कर शरीर में ज्वाला सी लग जाती है। खाने - पीने में भी अधिक व्यय हो जाने पर गजाधर को कष्ट का अनुभव होता है। सुमन की अनुपस्थिति में उसका संशयशील हृदय खा - पीकर बराबर की गर्व दशा में बहुत दु:खी रहता है।

**3. निर्धनता :-**

गजाधर निर्धन है। उसकी आर्थिक कमजोरी सुमन के लिए शाप बन जाती है। फल स्वरूप प्रत्येक परिस्थिति में घटित होने वाली घटना को वह इसका मूल कारण मानती है। इस दशा पर सुमन की उक्तियों से गजाधर का हृदय धक - धक करता है।

''इतने रूपयों में बरकत थोडे ही हो जायेगी।''

× × ×

''वह चाहे तो हम जैसों को नौकर रख लें।''

ये उक्तियाँ निर्धन चरित्र का सफल और यथार्थ चित्रण देती हैं। स्वयं गजानन्द का कथन भी उसकी निर्धनता को द्योतित करता है - ''निर्धन था, इसीलिए आवश्यक था कि मैं धन के अभाव को अपने प्रेम और भक्ति से पूरा करता। मैं ने इसके विपरीत उस से निर्दयता का व्यवहार किया। उसे वस्त्र और भोजन का कष्ट दिया।''

**4. अव्यवस्थित चित्त :-**

गजाधर अव्यवस्थित -चित्त का व्यक्ति है। परिणाम के बारे में सोचे बिना ही वह कार्य करता है। पत्नी सुमन के प्रति वह दुर्व्यवहार करता है - ''अपने गहने-कपडे लेती जा, यहाँ कोई काम नहीं है।'' कहते हुए वह पत्नी को घर से निकाल देता है।

**5. सामाजिक व्यंग्य :-**

गजाधर सामाजिक व्यंग्य भी करता है। वेश्या -नाच की माँग किए जाने पर वह जन समूह को सम्बोधित करता है, ''देखिए - चलो मैं नाचदिखाऊँ'' - ''चलो मैं नाच दिखाऊँ। देवताओं का नाच देखना चाहते हो? देखो, सामने वृक्ष की पत्तियों पर निर्मल चन्द्र की किरणें कैसी नाच रही हैं। देखो, तालाब में कमल के फूल पर पानी की बूँदे कैसी नाच रही हैं। जंगल में जाकर देखो, मोर पर - फैलाये कैसे नाच रहा है। क्यों यह देवताओं का नाच पसन्द नहीं है? अच्छा चलो, पिशाचों का नाच दिखाऊँ - तुम्हारा पड़ोसी दरिद्र किसान जमींदार के जूते खाकर कैसा नाच रहा है। तुम्हारे भाइयों के अनाथ बालक क्षुधा से बावले होकर कैसे नाच रहे हैं। अपने घर में देखो, विधवा भावज की आँखों में शोक और वेदना के आँसू कैसे नाच रहे हैं। क्या यह नाच देखना पसन्द नहीं? तो अपने मन को देखो, कपट और छल कैसा नाच रहा है। सारा संसार नृत्यशाला है। उसमें लोग अपना - अपना नाचु नाच रहे हैं।

क्या यह देखने के लिए तुम्हारी आँखें नहीं हैं? आओ, मैं तुम्हें शंकर का तांडव नृत्य दिखाऊँ। किन्तु तुम वह नृत्य देखने योग्य नहीं हो। तुम्हारी काम - तृष्णा को इस नाच का क्या आनन्द मिलेगा। हाँ! अज्ञान की मूर्तियो! विषयभोग के सेवको! तुम्हें नाच का नाम लेते हुए लज्जा नहीं आती! अपना कल्याण चाहते हो तो इस रीति को मिटाओ। कुवासना को तजो, वेश्या - प्रेम का त्याग करो।''

गजाधर के इस उपदेश में जो शक्ति है, वास्तव में वही उसे इस उपन्यास के नायक पद पर प्रतिष्ठित करने वाली है। उसका लोगों को वेश्या का नृत्य देखने से वर्जित करने का ढंग कितना सुन्दर है। दूसरी भाषा में उसके द्वारा लोगों को कुप्रवृत्ति से अलग करना उसके श्रेष्ठ चरित्र का परिचायक है।

## 6. आत्मोद्धार का मार्ग :-

सुमन को निकालने के पश्चात् अकस्मात् उसके स्वभाव में कुछ परिवर्तन आता है और वह पहले की अपेक्षा कुछ अधिक उदार प्रकृति वाला हो जाता है। गत जीवन का स्मरण कर वह सेवा - धर्म स्वीकार कर लेता है। निर्वाण मार्ग पर चलने के लिये सेवा - धर्म ही श्रेष्ठ है। यह सिद्ध करने वाला गजानन्द का कथन - ''अज्ञान अविद्या के अन्धकार में पड़े हुए मेरे पास अपना उद्धार करने का साधन न रहा, न ज्ञान था, न विद्या थी, न भक्ति की सामर्थ्य थी। मैंने अपने बन्धुओं की सेवा करने का निश्चय किया। यही मार्ग मेरे लिए सबसे सरल था। तब से मैं यथाशक्ति इसी मार्ग पर चल रहा हूँ और अब मुझे अनुभव हो रहा है आत्मोद्धार के मार्गों में केवल नाम का अन्तर है। मुझे इस मार्ग पर चलकर शान्ति मिली है और मैं तुम्हारे लिये भी यह मार्ग सबसे उत्तम समझता हूँ।'' अक्षरश: सत्य प्रतीत होता है। नि:स्वार्थ भावना का महत्त्व समझाते हुए नायिका को भी इस मार्ग के लिए प्रेरित करना उसके नायकत्व की पुष्टि करता है।

उपन्यासकार ने 'उन्होंने निर्धनों की कन्याओं का उद्धार करने के निमित अपना जीवन अर्पण कर दिया, इस अन्तिम परिच्छेद में यह लिखकर उसके त्यागमय व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाल दिया है।

## 7. उपसंहार :-

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि गजाधर के चरित्र में मानवीय कमजोरियाँ भी उसकी चारित्रिक श्रेष्ठता को प्रभावित नहीं करतीं। एक साधारण सामाजिक दरिद्र मनुष्य के रूप में उसके स्वभाव का जो रूप होना चाहिए, वह प्रेमचन्द ने बड़े ही शान्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यासकार की अद्‌भुत वर्णनात्मक क्षमता तो है ही, गजाधर के चरित्र को ऊँचा भी उठाती है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

# ३. 'विट्ठलदास' का चरित्र - चित्रण कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. समाज सुधारक
3. हिन्दू जाति के प्रति अनुराग
4. देश भक्त
5. न्यायप्रिय
6. नारी सहृदयता

## 1. प्रस्तावना :-

'सेवासदन' उपन्यास में विट्ठलदास एक आदर्श चरित्रवान के रूप में प्रस्तुत होते हैं। उनका आदर्श उनके पुरुषार्थ, जाति-सेवा, समाज-सेवा, देश-प्रेम, निस्सायों की सहायता करने, सुधारक तथा सेवा संस्थाएँ स्थापित करने, न्यायप्रियता, स्त्रियों के प्रति आदर भाव में व्यक्त होता है। उच्च शिक्षा न पाकर भी वह समाज में सर्वमान्य बनते हैं। पद्मसिंह के वे घने मित्र हैं।

## 2. समाज - सुधारक :-

विट्ठलदास अपने शुरू किए हुए कार्य को पूरी लगन एवं पुरुषार्थ से पूरा करते हैं। अनाथालयों के लिए चन्दा जना करने एवं विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति का प्रबन्ध करने में वह अपना सुख और स्वार्थ भी भूल जाते थे। वह सत्य के मार्ग पर पूरी ईमानदारी से चलने वाले पात्र हैं। वह निःस्वार्थ सेवा के प्रतीक हैं। पद, मान आदि का उन्हें लोभ नहीं है। उनके विषय में उपन्यासकार कहता है -

''वह चाहते थे कि महाशयजी को म्युनिसिपैलिटी में कोई अधिकार दे, पर विट्ठलदासजी राजी नहीं होते। वह निःस्वार्थ कर्म की प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ना चाहते । उनका विचार है कि अधिकारी बनकर वह इतना हित नहीं कर सकते जितना पृथक् रहकर कर सकते हैं।''

### 3. हिन्दू जाति के प्रति अनुराग :-

हिन्दुओं के प्रति विट्ठलदासजी के हृदय में एक विशेष अनुराग है। वह हिन्दू जाति में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील जागरूक नागरिक की भाँति सदेव संलग्न दिखाई देते हैं। हिन्दू जाति की मर्यादा को बचाने के लिए विट्ठलदास का कथन देखिये – ''सुमन तुम सच कहती हो, बेशक हिन्दू–जाति अधोगति को पहुँच गयी और अब तक वह कभी भी नष्ट हो गयी होती, पर हिन्दू–स्त्रियों ही ने अभी तक उसकी मर्यादा की रक्षा की है। उन्हीं के सत्य और सुकीर्ति ने उसे बचाया है। केवल हिन्दुओं की लाज रखने के लिए लाखों स्त्रियाँ नाना प्रकार के कष्ट भोगकर, अपमान और निरादर सहकर पुरुषों की अमानुषीय क्रूरताओं को चित्त में न लाकर हिन्दू जाति का मुख उज्जवल करती थीं। यह साधारण स्त्रियों का गुण था और ब्राह्मणियों का तो पूछना ही क्या? पर शोक है कि यही देवियाँ अब इस भाँति मर्यादा का त्याग करने लगीं। सुमन मैं स्वीकार करता हूँ कि तुमको घर पर बहुत कष्ट था। माना कि तुम्हारा पति दरिद्र था, क्रोधी, चरित्रहीन था, माना कि उसने तुम्हें घर से निकाल दिया था, लेकिन ब्राह्मणी अपनी जाति और कुल के नाम पर यह सब दुःख झेलती हैं। आपत्तियों को झेलना और दुरावस्था में स्थिर रहना, यही सच्ची ब्राह्मणियों का धर्म है, पर तुमने वह किया जो नीच जाति की कुलटाएँ किया करती हैं। सुमन, तुम्हारे इस कर्म ने ब्राह्मण जाति ही का नहीं, समस्त हिन्दू–जाति का मस्तक नीचा कर दिया।'' उनके हिन्दू–जाति के सच्चे संरक्षक होने एवं ब्राह्मणों के प्रति विशेष आदर भाव को सूचित करता है।

### 4. देशभक्त :-

विट्ठलदास देश के उत्थान के लिए अपने कर्त्तव्यों के प्रति पूरी तरह सजग हैं। आदर्श एवं सच्चे देशभक्त के रूप में उनका चरित्र अनुकरणीय है। देश की उन्नति के लिए किये गये प्रयासों में यह दृष्टव्य है –

''मेरा पहला उद्देश्य है, वेश्याओं को सार्वजनिक स्थान से हटाना और दूसरा वेश्याओं के नाचने – गाने की रस्म को मिटाना।''

''कृषकों की सहायता के लिए एक कोष स्थापित करना एवं बीज और रुपये नाम मात्र सूद पर उधार देना।'' ''विवाह में इतने रुपये आपने पानी में डाल दिये। किसी शुभ कार्य में लगा देते तो कितना उपकार होता।'' इसके अतिरिक्त अकाल के समय सिर पर आटे का गट्ठर लादकर गाँव–गाँव घूमना तथा अपनी सारी सम्पत्ति देश को अर्पण करना उनके सच्चे देश–प्रेमी होने का सूचक है।

5. **न्यायप्रिय :-**

विट्ठलदास न्याय के पथ से हटने वाले का साथ छोड़ देते थे। चाहे वह उनका मित्र ही क्यों न हो। वह न्याय-पथ पर अटल रहते थे। उनकी न्यायप्रियता पर प्रकाश डालते हुए उपन्यासकार का कहना है, ''अब सारे शहर में उनका कोई मित्र न था।'' अर्थात् सारे मित्र न्याय-पथ से बिचलित हो गये थे। सुमन के सम्बन्ध में संस्था को न बताने पर वह अपने बारे में कहते हैं - ''मेरे उद्देश्य चाहे कितना ही प्रशंसनीय हो, पर उसे गुप्त रखना सर्वथा अनुचित था।'' यह स्वकथन उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा को भी द्योतित कर रहा है।

6. **नारी सहृदयता :-**

विट्ठलदास स्त्रियों के प्रति अत्यन्त सहृदय हैं। उनके प्रति आदर-सम्मान की भावना से वह पूरी तरह पूर्ण हैं। उपन्यास में नारी जब-जब दयनीय दशा को पहुँचती है, यह तब-तब उसके उन्मूलन के लिए सुझावों को देते हुए कार्यान्वित करते हैं। सुमन की पतित दशा को देखकर निकले उनके उद्गार - ''स्त्रियों को अगर ईश्वर सुन्दरता दे तो धन से वंचित न रखे। धन-हीन सुन्दर चतुर स्त्री पर दुर्व्यसन का मन्त्र शीघ्र ही चल जाता है।'' सत्य के कितने निकट है, यह समझने की बात है। स्त्रियों की दुरावस्था का कारण वह उनकी निर्धन स्थिति को मानते हैं।

विवाहित शान्ता को लाने के लिए वह पद्मसिंह से कहते हैं -

**विट्ठलदास :-** शान्ता को बुला लाइए।

**पद्मसिंह :-** सारे घर से नाता टूट जायेगा।

**विट्ठलदास :-** टूट जाय, कर्त्तव्य के सामने किसी का भय?

**पद्मसिंह :-** भैया को अप्रसन्न करने का साहस एवं सामर्थ्य मुझमें नहीं।

**विट्ठलदास :-** अपने यहाँ न रखिए, विधवाश्रम में रख दीजिए, यह तो कठिन नहीं, स्त्रियों का उद्धार करना वह एक धर्म - कार्य मानते थे।''

उपन्यासकार विट्ठलदास को आदर्श चरित्रवान व्यक्ति के रूप में प्रतिनिष्ठित करने में पूरी तरह सफल हुआ है।

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

# 4. पद्मसहिं के चरित्र-चित्रण पर प्रका डालिए।

## 1. प्रस्तावना :-

पद्मसिंह एक आचारवान् और विचारवान् व्यक्ति हैं। सत्यता एवं उदारता जैसे गुणों का उनमें स्वभाव से ही अंकर जमा हुआ है और वह अंकुर एक लहलहाते पौधे के रूप में प्रस्फुटित भी हुआ है। इसी कारण वह उपन्यास के मुख्य पातों में एक विशेष स्थान भी रखते हैं, परन्तु अपने कोमल और उदार हृदय के कारण वह अपनी आदर्शवादी विचारधारा के प्रति ऐसे अवसरों पर निर्बल दिखाई देते हैं, जहाँ उन्हें ऐसा नहीं होना चाहिए था। यही कारण है कि वह मित्रों की व्यंग्योक्ति के भय से मुजरे का प्रबन्ध करते हुए दिखाई देते हैं और लोकापवाद के भय से सुमन को आश्रय नहीं दे पाते। पद्मसिंह के घर में घटित होने वाली यही घटना उपन्यास के कथानक का केन्द्र-बिन्दु बन जाती है। इसके परिणामों एवं दुष्परिणामों से पद्मसिंह का चरित्र पूर्णयता प्रभावति है। इसलिए उपन्यास के अंत तक घटना से उत्पन्न दोषों के लिए वह स्वयं को अपराधी भी ठहराते हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमें उनके चरित्र का मूल्यांकन करना भी उचित होगा। वह सत्यवादी हैं, परन्तु आत्मग्लानिपूर्ण उनका सुमन के लिए पश्चाताप निश्चय ही उनकी भूरुता से लड़ने की जैसे वास्तविक भूमिका है। वेश्याओं के नाच के विषय में पूछे जाने पर वह अपने को दोषी मानते हुए कहते हैं – ''अब क्या एक घर जलाकर वही खेल खेलता रहूँगा? उन दिनों मुझे न जाने क्या हो गया था, मुझे अब यह निश्चय हो गया है कि मेरे उसी जलसे ने सुमन को घर से निकाला।''

## 2. गरीबों के प्रति उदार भावना :-

गरीबों के प्रति पद्मसिंह के हृदय में अतुलित सहानुभूति पाई जाती है। उनके इस कथन – ''जो धन गरीब बाजे वाले, फुलवारी बनाने वाले, आतिशबादी वाले पाते हैं वह 'मुरे कम्पनी' के हाथों में पहुँच गया। मैं इसे किफायत नहीं कहता, यह अन्याय है।'' यहाँ अन्याय शब्द से तात्पर्य गरीबों को पर्याप्त न मिलने से है। विवाह के अवसर पर अन्य वस्तुओं पर धन खर्च करने को वह इसीलिए न्यायसंगत मानते हैं, क्योंकि वह व्यय गरीबों के लिए सहायक सिद्ध होता है। इसलिए सदन के विवाह के समय वेश्या-नृत्य की जगह दीन-दरिद्रों में कम्बल बाँटने एवं कुआँ बनवाने में रुपया खर्च करते हैं।

## 3. आदर्शवादी :-

पद्मसिंह समाज के प्रति अपरने उत्तरदायित्व को समझने वाले व्यक्ति हैं। अत: वह समाज के हर एक वर्ग के साथ खड़े दिखाई देते हैं। जो समाज के किसी व्यक्ति के अन्याय का शिकार है, चाहे

वह घर से निकाली गयी सुमन हो या दालमण्डी की वेश्याएँ या शांता इन सबको वह अपना मानते हैं। वेश्याओं को नगर से दूर रखने के लिए दिये गये उनके प्रस्ताव सराहनीय हैं। मदनसिंह द्वारा वेश्या-नाच पर जोर देने पर पद्मसिंह ने अफना मन्तव्य इस प्रकार दिया - ''एक ओर भाई की अप्रसन्नता थी, दूसरी ओर सिद्धान्त और न्याय का बलिदान। एक ओर अँधेरी घाटी थी, दूसरी ओर सीधी चट्टान मिलने का कोई मार्ग न था। अन्त में उन्होंने डरते-डरते कहा - ''भाईसाहब, आपने मेरी भूलें कितनी बार क्षमा की हैं। मेरी एक बात और क्षमा कीजिए। आप जब नाच के रिवाज को दूषित समझते हैं तो उस पर इतना जोर क्यों देते हैं ?''

**''पद्मसिंह'' :-** यह तो विचार कीजिए कि कन्या की क्या गति होगी ? उसने क्या अपराध किया है ?

**मदनसिंह :-** तुम हो निरे मूर्ख ! संसार में व्यवहार में वकालत से काम नहीं चलता।

**पद्मसिंह :-** लेकिन शोक है कि इस कन्या का जीवन नष्ट हो जायगा।

उपर्युक्त सम्वाद से पद्मसिंह की उच्च आदर्शवादिता पर पर्याप्त प्रकाश पड़ रहा है।

**4. सहृदयता :-**

गाँव-घर की बात करते समय कोई कुर्मी, कहार, लोहार, चमार ऐसा न बचा जिसके सम्बन्ध में पद्मसिंह ने कुछ न कुछ न पूछा हो। छोटे-बड़े सब के प्रति उनके सम भाव ही दिखाई दे रहे हैं। बड़े भाई के बेटे को पुत्र-तुल्य मानने वाले पद्मसिंह सुभद्रा की व्यंग्यपूर्ण वार्ता सुनकर कहते हैं - ''तुम क्या चाहती हो कि सदन के लिए मास्टर न रखा जाय और वह यों ही अपना जीवन नष्ट करे। चाहिए तो यह था कि तुम मेरी सहायता करतीं, उल्टे और जी जला रही हो। सदन मेरे उसी भाई का लड़का है जो अपने सिर पर आटे-दाल की गठरी लादकर मुझे स्कूल में दाखिल कराने आये थे। मुझे वह दिन भूले नहीं हैं। उनके उस प्रेम को स्मरण करता हूँ तो जी चाहता है कि उनके चरणों पर गिर कर घंटों रोऊँ।''

उनके विचारों के सम्बन्ध में उपन्यासकार का कथन हैं - ''हमारे मन के विचार कर्म के पथप्रदर्शक होते हैं. पद्मसिंह ने झिझक और संकोच को त्यागकर कर्मक्षेत्र में पैर रखा। वही पद्मसिंह, जो सुमन के सामने भाग खड़े हुए थे, आज दिन में दोपहर में दालमण्डी के कोठों पर बैठे दिखायी देने लगे। उन्हें अब लोकनिन्दा का भय न था, मुझे लोग क्या कहेंगे इसकी चिन्ता न थी, उनकी आत्मा बलवान् हो गयी थी, हृदय में सच्ची सेवा का भाव जाग्रत हो गया था। कच्चा फल पत्थर मारने से भी नहीं गिरता, किन्तु पककर आप धरती की ओरआकर्षित हो जाता है। पद्मसिंह के अन्तकरण में सेवा

का, प्रेम का भाव परिपक्व हो गया था। अर्थात् कर्मक्षेत्र में उन्होंने अपनी चारित्रिक दृढ़ता पर स्वयं विश्वास करने लगे हैं।''

## 5. उदारता :-

पद्मसिंह म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर बनने पर प्रीतिभोज करना चाहते हैं, जबकि उनके कई मित्र मुजरे पर जोर देते हैं। इस सन्दर्भ में उपन्यासकार ने उनके श्रेष्ठ आचरण पर प्रकाश डाला है- ''यद्यपि वे स्वयं बड़े आचारवान् मनुष्य थे, तथापि कुछ अपने सरल स्वभाव से, कुछ कुसौहार्द्र से और कुछ मित्रों की व्यंग्योक्ति के भय से वह अपने पक्ष पर अड़ न सकते थे।'' यही बात ऐसी थी जो यह दर्शाती है कि वह प्रारम्भ में अपने कर्म-क्षेत्र के आदर्श पक्ष पर मन से खड़े जरूर थे, परन्तु सामाजिक स्नेह और प्रारम्भ में अपने झुकाव के कारण उसे कर्म-क्षेत्र के साथ दृढ़ रूप से संयोजित नहीं कर पाये थे। परन्तु आदर्शवाद की ओर उनका हृदय स्पष्ट रूप से बड़ी ईमानदारी से झुका हुआ था।

पद्मसिंह का यह पत्र उनके श्रेष्ठ आचरण एवम् उच्च विचारधारा पर अच्छा प्रकाश डालता है - ''आपको यह सुनकर असीम आनन्द होगा कि सुमन अब दालमण्डी में एक कोठे पर विराजमान है। आपको स्मरण होगा कि होली के दिन वह अपने पति के भय से मेरे घर पर चली आयी थी और मैंने सरल रीति से उसे इतने दिनों तक आश्रय देना उचित समझा, जब तक उसके पति का क्रोध न शान्त हो जाय। पर इसी बीच में मेरे कई मित्रों ने, जो मेरे स्वभाव से सर्वथा परिचित थे, मेरी उपेक्षा तथा निंदा करनी आरम्भ की। यहाँ तक कि मैं उस अभागिन अबला को अपने घर से निकालने पर विवश हुआ और अन्त में वह उसी पापकुण्ड में गिरी, जिसका मुझे भय था। अब आपको भली-भाँति ज्ञात हो जायेगा कि इस दुर्घटना का उत्तरदाता कौन है। और मेरा उसे आश्रय देना उचित था या अनुचित।'' इस पत्र से मालूम होता है कि वह अपने किये पर किस प्रकार स्वयं कष्ट अनुभव कर रहे थे। यह पत्र उन्होंने अपने उसी मित्र को लिखा था, जिसने सुमन के प्रतिष्ठित करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

## 6. उपसंहार :-

पद्मसिंह-जैसे मनुष्य एक क्षण में ही उस खेल से नहीं निकल पाते, जिसमें रहकर उन्होंने सम्मान पाया हो, लोक में अपना स्थान बनाया हो। उनके मन का आदर्शवाद, यथार्थ कुरूपता को मिटाने का संकल्प, उदारता और मित्रों के साथ जुड़ी भावना के प्रवाह में यदि कभी वह गया तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। वह अपने इसगलत प्रवाह के प्रति सचेत हो गये, यह उनके चरित्र की महानता का द्योतक है कि अन्त तक अपने आदर्शों का निर्वाह करने के लिये अडिग होकर खड़े हो गये।

उच्च विचारधारा का रूप बड़ा स्पष्ट है। वह एक स्थल पर कहते हैं – ''जिन आत्माओं का हम उपदेश से, प्रेम से, शिक्षा से उद्धार कर सकते हैं, वे सदा के लिए हमारे हाथ से निकल जायेंगी। हम लोग स्वयं माया – मोह के अंधकार में पड़े हुए हैं, उन्हें दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं रखते।'' पद्मसिंह की क्षमा और दया में दिखाई देता है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

# 5. सदन के चरित्र पर उसकी निर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रकट कीजिये।

## 1. प्रस्तावना :-

'सेवासदन' में नवयुवक के रूप में सदन के चरित्र का विकास होता है। परिस्थितियों के अनुसार अपने चरित्र में सुधार करने वाला यह एक गतिशील चरित्र के रूप में उमड़ता है। अपने चाचा पद्मसिंह की फैशन की सामग्रियों से प्रभावित होकर यह गाँव छोड़कर शहर जाता है। गाँव को छोड़कर शहर की तरफ दौड़ना उसके फैशन के प्रति होने वाली सहज लालसा वाले गुण को दिखा रहा है, जो एक नवयुवक में होना स्वाभाविक है। उसके चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार ने वेश्या - प्रेम और नये प्रेम (अर्थात् विवाह के पश्चात् होने वाले प्रेम की) सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है। साथ ही धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाओं का सूक्ष्म निरूपण किया है। उसके चरित्र की कतिपय विशिष्टताओं को निम्न शीर्षकों द्वारा भली-भाँति प्रकट किया जा सकता है-

## 2. स्वच्छन्द व्यवहार :-

यौवन-काल की चंचलता और स्वच्छन्दता को सदन के चरित्र-अवलोकन मात्र से ही देखा जा सकता है। उपन्यासकार का यह कथन- ''धीरे-धीरे सदन के चित्त की चंचलता यहाँ तक बढ़ी कि पढ़ना-लिखना सब छूट गया। मास्टर आते और पढ़ाकर चले जाते। लेकिन सदन को उनका मन हर घड़ी बाजार की ओर लगा रहता, वही दृश्य आँखों में फिरा करते, रमणियों के हाव-भाव और मृदु मुस्कान के स्मरण में मग्न रहता।'' सदन की चंचल प्रकृति को स्पष्ट करता है।

## 3. स्वभाव में परिवर्तन :-

सदन के विचार मर्यादा के क्षेत्र के प्रति पूर्णरूपेण उपेक्षापूर्ण हैं, परन्तु घटनाएँ उसकी उस उपेक्षा को दूर करती हैं। वह सामाजिक मर्यादाओं को आदर देने के प्रति ही नहीं, अपितु, अपने विगत जीवन को एक नया मोड़ देने की ओर भी झुकता है। एक समय कभी वह जिस सुमन पर आसक्त था, उसी से यह कहता है - ''बाईजी, आपने पहले ही मेरा मुँह बन्द कर दिया है, इसलिए मैं कैसे कहूँ कि जो कुछ किया मेरे बड़ों ने किया, मैं उनके सिर दोष रखकर अपना गला नहीं छुड़ाना चाहता। उस समय लोक-लज्जा से भी डरता था। इतना तो आप भी मानेंगी कि संसार में रहकर संसार की चाल चलनी पड़ती हैं. मैं इस अन्याय को स्वीकार करता हूँ, लेकिन यह अन्याय हमने नहीं किया, वरन् उस समाज ने किया है, जिसमें हम लोग रहते हैं।'' इस कथन द्वारा हमें उसकी संकुचित विचारधारा का परिचय मिल जाता है।

मर्यादा का क्षेत्र जब विस्तृत अर्थात् उदार हो जाता है तो बदलते हुए विचार स्वत: ही व्यापक हो जाते हैं, तब यह सुधारवादी दृष्टिकोण कर्तव्यपरायणता का रूप धारण कर लेता है। इन्हीं परिवर्तित विचारों का सुन्दर समागम सदन के गतिशील चरित्र में दृष्टव्य है - ''सदन को ऐसी ग्लानि हो रही थी मानो उसने कोई बड़ा पाप किया हो. वह बार-बार अपने शब्दों पर विचार करता है और यही निश्चय करता है कि मैं बड़ा निर्दयी हूँ। मुझे संसार का इतना भय क्यों है ? संसार मुझे क्या देता है ? क्या केवल झूठी बदनामी के भय से मैं उस रत्न को त्याग दूँ, जो मालूम नहीं मेरे पूर्वजन्म की कितनी तपस्याओं का फल है ? अगर अपने धर्म का पालन करने के लिए मेरे बन्धुगण मुझे छोड़ दें तो क्या हानि है ? लोकनिन्दा का भय इसलिए है कि वह हमें बुरे कामों से बचाती है। अगर वह कर्त्तव्य-मार्ग में बाधक हो तो उससे डरना कायरता है....... लोक-निन्दा का भय मुझसे यह अधर्म नहीं करा सकता, मैं उसे मँझधार में न डूबने दूँगा। संसार जो चाहे कहे, मुझसे यह अन्याय न होगा।''

### 4. मनोदशा की पवित्र विचारधारा :-

स्थान-स्थान पर आये हुए अन्तर्द्वन्द्व, सदन की कतिपय चारित्रिक विशेषताओं का प्रकटीकरण कर देते हैं। उदाहरणस्वरूप - ''हाय! मैं कैसा कठोर पाषाण-हृदय हूँ। वह रमणी जो किसी रनिवास की शोभा बन सकती है, मेरे सम्मुख एक दीन, दया-प्रार्थी के समान खड़ी रहे और मैं जरा भी न पसीजूँ? वह ऐसा अवसर था कि मैं उसके चरणों पर सिर झुका देता और हाथ जोड़कर कहता, देवि! मेरे अपराध क्षमा करो!'' गंगा से जल लाता और उसके पैरों पर चढ़ाता जैसे कोई उपासक अपनी इष्ट देवी को चढ़ाता है। पर मैं पत्थर की मूर्ति के सदृश खड़ा अपनी कुल-मर्यादा का बेसुरा राग अलापता रहा। हाँ, मंद बुद्धि! मेरी बातों से उसका कोमल हृदय कितना दु:खी हुआ होगा। यह उसके मान करने से ही प्रकट होता है, उसने मुझे शुष्क, प्रेम-विहीन, घमंडी और धूर्त्त समझा होगा, मेरी ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं। वास्तव में मैं इसी योग्य हूँ। यह अन्तर्द्वन्द्व सदन के प्रत्युत्पन्न मति न होने पर प्रकाश डाल रहा है।

### 5. उपदेशों को धारण करने की दृढ़ता :-

साधारणत: लोग उपदेश सुनते हैं और उन्हें वह जहाँ सुनते हैं वहीं छोड़ भी आते हैं, क्योंकि उन्हें धारण करने की क्षमता नहीं होती। ऐसा कोई विरला ही होता है जो उन्हें धारणा करे, सदन का हृदय और व्यवहार-परिवर्तन उसे उनमें से ही एक बना देता है।

आदर्श समाज के उत्सव एवं विभिन्न व्याख्यानों को सुनने से उसके तार्किक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है और वह सत्यासत्य का निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता आ जाती है। उपन्यासकार का यह कथन – ''अपनी अवस्था के अनुकूल उसकी समालोचना पक्षपात से भरी हुई और तीव्र होती थी उसमें इनती उदारता न थी कि वह विपक्षियों की नेकनीयती को स्वीकार करो।'' उसकी समालोचक दृष्टि को व्यक्त करता है।

## 6. सौन्दर्याकर्षण :-

यौवन के वेग में बहे हुए मनुष्य के स्वाभाविक चरित्र और व्यवहार से वह अछूता नहीं है। वह सुमन के प्रति आकर्षित होता है, क्योंकि सौन्दर्य के प्रति आकर्षण उसकी ही नहीं बल्कि उसकी उम्र के हर युवक की कमजोरी हो सकती है। हृदय-परिवर्तन के बाद वह शान्ता के सौन्दर्य का अभिनन्दन करता है। सुमन की मनोहारिणी मूर्ति उसके कल्पना लोक में सुसज्जित हो जाती है। वह इस सरल सौन्दर्य-मूर्ति को अपना प्रेम अर्पण करने का परम अभिलाषी है। सुमन के प्रति उसके आसक्त होने का कारण भी उसका सौन्दर्य था और था उसका युवक हृदय।

## 7. उपसंहार :-

अपने जीवन में दृढ़ निष्ठा रखने की पक्की लगन से वह ओत-प्रोत है। प्रारम्भ में एक नाव लेकर अन्त में पाँच नावें लेकर स्टीमर लेने की योजना एवं गंगा के किनारे झोंपड़े में व्यवसाय बढ़ाने के लिये रहना उसकी पक्की लगन का द्योतक है।

उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं - ''वह अत्यन्त रूपवान, सुगठित, बलिष्ठ युवक था। देहात में रहा, न पढ़ना, न लिखना, न मास्टर का भय न परीक्षा की चिन्ता, सेरों दूध पीता था, उस पर कसरत का शौक। शरीर बहुत सुडौल निकल आया था। चेहरे पर गम्भीरता और कोमलता के स्थान पर वीरता और उद्दंडता झलकती थी। आँखे मतवाली, सतेज और चंचल थीं। उसने रंग-रूप, ठाट-बाट पर बूढ़े-जवान सबकी आँखे उठ जातीं। युवक उसे ईर्ष्या से देखते, बूढ़े स्नेह से। लोग राह चलते - चलते उस एक आँख देखने के लिए ठिठक जाते। दुकानन्दर समझते किसी रईस का लड़का है।''

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

# 6. 'सेवासदन' उपन्यास की समस्याओं एवं समाधान प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

## 1. प्रस्तावना :-

सेवासदन उपन्यास में दहेज की समस्या, समाज की झूठी नैतिकता, रूढ़िवादिता आदि विविध प्रश्न उभरे हैं। विधवाओं और विशेष-रूप से वेश्याओं के सुधार और आर्थिक निर्वाह की समस्या पर विस्तार के साथ चर्चा की गई है।

प्रस्तुत उपन्यास की कहानी कृष्णाचन्द्र दरोगा की दो पुत्रियों-सुमन और शान्ता की कहानी है। उनकी पत्नी का नाम गंगाजली है। कृष्णाचन्द्र सीधे-साधे आदमी थे। वह घूँस (रिश्वत) नहीं लेते थे। गृहस्थी चलाने तथा अपनी लड़कियों की हर इच्छा को पूरा करने में उनका पूरा वेतन खर्च हो जाता था। वे कुछ बचा नहीं पाये और जब सुमन विवाह लायक हो गयी, तो उनके सामने दहेज की समस्या उत्पन्न हो गयी। परिस्थितियों से विवश होकर उन्हें महन्त रामदास से तीन हजार रुपये घूँस के रूप में लेने पड़े। परन्तु उनकी कलई खुल गई और उन्हें चार वर्ष के कारावास का दण्ड मिला। आर्थिक कठिनाई के कारण सुमन का विवाह विधुर गजाधर प्रसाद नामक पन्द्रह रुपये मासिक पाने वाले क्लर्क से करना पड़ा, जो सुमन से आयु में कहीं बड़ा था। सुमन की चटोरी जीभ और सबसे बढ़-चढ़कर दिखावे की भावनाओं के कारण सुमन और गजाधर का वैवाहिक जीवन शीघ्र ही विपमय हो गया।

## 2. पति परित्यक्त नारी :-

सुमन को पति ने घर से निकाल दिया। वह हारकर पद्मसिंह वकील के घर, जिनकी पत्नी से संयोगवश उसका मेलजोल हो गया था, पहुँचती है। पर वे भी लोकापवाद के भय के कारण उसे अपने यहाँ अधिक समय तक शरण न दे सके। सुमन के घर के सामने भोली नामक एक वेश्या रहती थी। वह शायद उसके प्रति किसी सुषुप्त आकर्षणश वहीं पहुँचती है। भोली को उसने सभ्य समाज में, यहाँ तक कि स्वयं पद्मसिंह की महफिल में भी अपार सम्मान पाते देखा था। अभी तक वह वेश्याओं के सम्बन्ध में यही सुनती आई थी कि उनका जीवन गर्हित होता है, उन्हें ठोकरें खानी पड़ती हैं, पर यहाँ आकर भोली का जीवन और उसे मिलने वाले सुखों को देखकर उसके संस्कार डाँवाडोल होने लगे थे। भोली ने उसकी इस मन:स्थिति का पूरा लाभ उठाया और फलस्वरूप सुमन शीघ्र ही वेश्या बन गयी। पद्मसिंह का भतीजा सदनसिंह सुमन के पास बहुत आने-जाने लगा। सुमन नहीं जानती थी कि वह पद्मसिंह का भतीजा है, जिस दिन उसे सच्चाई का ज्ञान हुआ उसने सदनसिंह को प्रोत्साहन देना बन्द कर दिया।

सदनसिंह ने सोचा वेश्याएँ उपहारों से प्रसन्न रहती हैं, इसलिए वह अपनी चाची का हार चुराकर लाता है और सुमन को उपहार देता है, जिसे वह दूसरे ही दिन पद्मसिंह के यहाँ लौटा आती है।

विट्ठलदास नामक समाज-सुधारक को सुमन के वेश्या बन जाने से बड़ा दुःख पहुँचता है। वह सुमन को समझा - बुझाकर उस जीवन से बाहर निकालना चाहता है, लेकिन सुमन अपने जीवन की दयनीयता, और नारी जीवन की विवशताओं को ऐसे तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है कि विट्ठलदास निरुत्तर हो जाता है। समाज-सुधारकों की सहायता से विधवाश्रम नामक संस्था चल रही थी। सोच-विचार के बाद तय हुआ कि सुमन वेश्यलय छोड़कर विधवाश्रय में जायगी। उधर उसकी छोटी बहिन शान्ता का विवाह सदनसिंह से तय हो जाता है, बारात आती है, पर विरोधियों ने सुमन को लेकर ऐसा प्रचार किया कि बारात लौट गयी और शान्ता का विवाह न हो सका। बनारस में दालमण्डी (विश्याओं के बाजार) को शहर से बाहर ले जाने की बात चल रही थी। वहाँ आकर एक दिन क्वीन्स पार्क में सदनसिंह ने वेश्या-सुधार सम्बन्धी एक भाषण सुना, जिससे उसका मन बदलजाता है। वह सुमन की याद को भुला नहीं पाता, पर अपनी कुत्सित वृत्तियों पर विजय पा लेता है। एक दिन वह सुमन को गंगा - स्नान करते देखता है, पर उसके मुर्झाए हुए चेहरे को देखकर उससे मिलने का उसे साहस नहीं होता और वह बिना मिल ही लौट आता है। जेल से छूटकर आने के बाद कृष्णचन्द्र को सुमन और शान्ता के बारे में ज्ञात होने पर बड़ा आघात पहुँचता है। वे आधी रात को घर छोड़कर निकल जाते हैं। रास्ते में उनकी भेंट सुमन के पति से होती है जो आत्मग्लानि से अभिभूत होकर साधू हो गया था। वह कृष्णचन्द्र से सारी सत्य बातें बताता है और सुमन के पतित होने के पीछे अपने को ही दोषी बताता है। इससे कृष्णचन्द्र के दिल का बोझ कुछ कम होता है, किन्तु वे जीवन के प्रति एक प्रकार से निराश हो चले थे। गजाधर के सो जाने के बाद वे चुपके से उठे और गंगा में छलांग लगाकर डूब गये।

पद्मसिंह का मन भी जीवन के राग-रंग से बड़ा उचट गया था। उन्होंने वकालत को छोड़कर अपना सारा समय समज-सुधार एवं धर्म-सम्बन्धी कार्यों में देना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें एक दिन शान्ता का पत्र मिला, जिसमें उसने उन्हें धर्मपिता कहकर सम्बोधित किया था और अपनी शरण में ले-लेने की विनती की थी। विट्ठलदास के परामर्श से शान्ता बुलाई जाती है और सुमन के साथ विधवाश्रम में रख दी जाती है। एक दिन शान्ता को सदन ने ग्रहण कर लिया। सुमन एक अनाथालय की शिक्षिका बन जाती है, जिसे स्वंय गजाधर ने खोला था और उसकी देखरेख करते थे।

## 3. समस्या :-

इस उपन्यास की प्रमुख समस्या के सम्बन्ध में मतभेद है। प्रायः यह समझा जाता है कि 'सेवासदन' में वेश्या की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। एक सुविज्ञ का कहना है कि 'सेवासदन' उपन्यास में यद्यपि अप्रत्यक्ष रूप से दहेज की समस्या, समाज की झूठी नैतिकता का पाखण्ड, रूढ़िवादिता आदि अनेक प्रश्न आये हैं, परन्तु जिस प्रश्न को लेकर प्रेमचन्दजी ने प्रत्यक्ष रूप से और विस्तार के साथ विचार किया है, वह है – विधवाओं और विशेषतः वेश्याओं के सुधार और आर्थिक निर्वाह का प्रश्न। एक–दूसरे जानकार का कहना है कि उन्होंने इस उपन्यास में अबला स्त्री और मध्य वर्ग की समस्या को लेकर समाज के लगभग समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उपन्यास मूलतः सुधारवादी है, लेकिन प्रेमचन्द ने समाज में फैली हुई बुराइयों का यथार्थ कारण ढूँढ़ निकाला है और उसके लिए व्यक्तियों को दोषी न ठहराकर वर्तमान सामाजिक पद्धति को जिम्मेदार ठहराया है।

कथावस्तु का विस्तृत विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि प्रेमचन्द के हृदय में समाज के उस अंग के प्रति भी सम्मानित स्थान है, जिसे हेय दृष्टि से देखा जाता था। वेश्याओं का समुदाय और अछूतों का जीवन उनके निकट त्याज्य नहीं है। दूसरे शब्दों में, प्रेमचन्दजी भारतीय आदर्शों के अनुकूल आत्मा की अनवरत परिशुद्धि में विश्वास रखते हैं। 'सेवासदन' इसी मंगल आदर्श को सम्मुख रखता है। सुमन जो 'सेवासदन' की मुख्य पात्री है, और जिसका जीवन उपन्यास की समस्त घटनाओं का केन्द्र है, यद्यपि बीच में पथ से विचलित हो जाती है, पर अन्त में वेश्याओं की छोटी लड़कियों के सुकुमार हृदयों का संस्कार करने के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर देती है। वस्तुतः 'सेवासदन' में मध्यवर्गीय समाज की एक ज्वलन्त समस्या – नारी–जीवन की समस्या पर आलोक डाला गया है। समाज की जिन जीर्ण मान्यताओं के कारण मध्यवर्गीय परिवारों का भयानक पतन होता है, वे ही समस्याएँ इस उपन्यास का केन्द्र हैं। दहेज प्रथा, असंगत विवाह, वेश्या–वृत्ति आदि का इसमें सुधारात्मक निरूपणा है। नारी की आर्थिक पराधीनता इन प्रश्नों के मूल में है। सामाजिक परिस्थितियों से विवश होकर अनेक नारियों को वेश्या–वृत्ति के विगर्हित मार्ग का अवलम्बन करना पड़ता है। 'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने वेश्या–समस्या को उठाकर उसके माध्य से नारी जीवन की यातनाओं का चित्रण किया है।

इस उपन्यास की प्रधान समस्या है, अर्थात् भारतीय समाज में स्त्री कितनी पराधीन थी, तथा उस समय वह कितना दयनीय, परवश और निराश्रित जीवन व्यतीत कर रही थी, उसकी पराधीनता, उसकी निस्सहायता से समाज में पशुओं–जैसे स्थिति हो गयी थी, परन्तु सुमन को वेश्या जीवन तक पहुँचाकर तथा बाद में उसे वेश्याओं के सुधार–कार्य में प्रवृत्त करके उपन्यासकार वेश्या–समस्या पर विशेष ध्यान

केन्द्रित करता-सा लगता है। हालांकि सुमन वेश्याओं की प्रतिनिधि नहीं है, वह पीड़ित नारी है जो परिस्थितिवश वेश्या बनी है, परन्तु सुमन स्वयं वेश्याओं का प्रतिनिधित्व भी करती है। वैसे प्रेमचन्द ने इस बात को स्पष्टता के साथ कहा है कि उनका ध्यान वेश्या - समस्या पर ही मुख्यतया केन्द्रित नहीं रहा है। वे चाहते थे कि लड़कियों की शिक्षा सद्‌गृहणियों के निर्माण के दृष्टिकोण से होनी चाहिए। सुमन ने गृहणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्दभोग की शिक्षा, पाई थी। यह प्रेमचन्द को असह्य था। सुमन का हाल यह था कि महीने के दस दिन बाकी रहते थे, किन्तु वह सब रुपये खर्च कर देती थी। वही सुमन अन्त में कहती है, ''हमारा कर्त्तव्य इन कन्याओं को चतुर गृहणी बनाने का होना चाहिए।'' यही वस्तुत: पेमचन्दजी चाहते थे।

पुलिस के चरित्र पर भी प्रेमचन्द ने दारोगा कृष्णचन्द्र के माध्यम से प्रकाश डाला है। पुलिस विभाग कितना भ्रष्ट है और किसी ईमानदार व्यक्ति की वहाँ कितनी दुर्गति हो सकती है, अर्थात् पुलिस विभाग में रिश्वत के लिए बिना कोई व्यक्ति आर्थिक - रूप से सुखी नहीं रह सकता। हमारे समाज का जो परम्परागत वर्ग, धर्माचारी, मठाधीश, धनपति और समाज-सुधार तथा देशानुराग सम्बन्धी लम्बी-लम्बी बातें करने वालों का था, वे कितने खोखले, चरित्रहीन हैं, इसका एक यथार्थ चित्र खींचकर प्रेमचन्द ने समाज पर तीखा व्यंग्य किया है। भोली वेश्या धनपतियों के यहाँ और मठाधीशों के यहाँ जाती है, वहाँ सम्मान पाती है, पर वही लोग व्यक्तिगत-रूप से वेश्यावृत्ति की आलोचना करते हैं। समाज में कितना दम्भ है, मिथ्या गर्व है। इस उपन्यास में उन्होंने अनमेल विवाह की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। सुमन का विवाह किसी अच्छे घर में हो सकता था, पर सुमन के पिता धनी न थे। शान्ता के विवाह के लिए भी कृष्णचन्द्र के साले उमानाथ को बराबर चिन्ता बनी रहती है। सुमन का गजाधर के साथ अनमेल विवाह हुआ था। दोनों की आयु में काफी अन्तर था। सुमन आराम से रहना करती थी। उसकी उमंगों यौवन की ओर उन्मुख थीं, पर गजाधर तीस वर्ष का अधेड़ है, इसलिए दोनों में तनाव हो जाता है।

हिन्दू समाज की कैसी कुप्रवृत्ति है। सुमन ने विट्ठलदास से केवल पचास रुपये प्रतिमाह की माँग की थी, जिसके लिए समाज के हर तबके के लोगों के पास बेचारा विट्ठलदास जाता है, पर सफल नहीं हो पाता। पद्मसिंह अवश्य घोड़ागाड़ी को बेचकर रुपये देने को तैयार हो जाता है, नहीं तो किसी में इतना नैतिक साहस न था। साम्प्रदायिकता से कोई समस्या हल नहीं हो सकती, प्रेमचन्द ने यह चित्रित करने का प्रयत्न किया है।

इस प्रकार नारी समस्या, वेश्या समस्या, पुलिस विभाग की रिश्वत, समाज का खोखलापन, साम्प्रदायिक संकीर्णता, नैतिकता का ह्रास, साहस एवं आत्मविश्वास की कमी, निर्धनता, सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता का अभाव तथा कृषक समस्या आदि समस्याओं की प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में विवेचना की है। यह वस्तुत: उनका पहला उपन्यास है जिसमें प्रेमचन्द ने इतना व्यापक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है।

**4. सुधारवाद :-**

प्रेमचन्द के साहित्य को पढ़ने से स्पष्ट होता है, उनकी प्रवृत्ति सुधारवादी थी, अत: उपन्यास भी लेखक की उस प्रवृत्ति की देन है। वैसे भी लेखक सुधारवादी युग का था। राजनीति के क्षेत्र में नेतागण, समाज में सुधारक-समूह तथा साहित्य-जगत् में लेखक-वर्ग विभिन्न सामाजिक कुप्रथाओं का निवारण करने के लिए प्रयत्नशील थे। 'सेवासदन' में प्रेमचन्द जी क्रान्तिकारी के रूप में नहीं, सुधारक के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। वेश्या-समस्या का समाधान भी उन्होंने प्रस्तुत किया है। अपनी आदर्शवादी जीवनृ-दृष्टि के अनुसार उन्होंने नगर के बाहर उनके निवास का आयोजन कर और स्वस्थ एवं संयमित जीवन-यापन की इच्छुक आत्माओं के लिए आश्रम की स्थापना कर वेश्या - समस्या को सुलझाने का उपाय किया है। प्रेमचन्द ने 'निर्मला' या 'गोदान' में यह दृष्टिकोण नहीं अपनाया था। वस्तुत: वे जीवन के व्याख्याता कम, दृष्टा अधिक थे। उसी दृष्टि से उन्होंने साहित्य का सृजन किया है। इसमें प्रधान कथा दरोगा कृष्णचन्द्र के परिवार से सम्बन्धित है, जिसकी दो शाखाएँ हैं - एक शाखा का सम्बन्ध सुमन से है, दूसरी का सम्बन्ध शान्ता से है। इन दो के अतिरिक्त तीसरा महत्त्वपूर्ण अंश म्युनिसिपैलिटी से सम्बन्धित है। इन तीनों अंशों में सुमन और शान्ता का सम्बन्ध प्रेमचन्द ने अच्छी तरह से निभाया है और तीनों में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है परम्युनिसिपैलिटी वाला अंश अनावश्याक-सा प्रतीत होता है। यदि वह न भी होता, तो मुख्य कथा पर कुछ पहुँचता।

इस कथानक में सुमन के गृहत्याग तक का अंश तो बहुत सुव्यवस्थित है। इसमें तीव्रता भी है, सुसंगठित रूप में आगे भी बढ़ता है, किन्तु उसके बाद भी तो कथानक के सूत्र जैसे बिखर गये हैं। इसीलिए कथानक में सुमन के गृहत्याग के बाद शिथिलता आ गयी है।

प्रेमचन्द ने सुमन को दालमण्डी (वेश्याओं के बाजार) में पहुँचा दिया है, पर वहाँ के उसके जीवन को भली भाँति उभार नहीं पाए हैं। सम्भवत: प्रेमचन्द को सुमन का दालमण्डी में रहना रुचिकर नहीं प्रतीत होता और कदाचित् उनकी सुधार-वृत्ति यहाँ अधिक तीव्र हो गयी है, इसीलिए यहाँ वह स्थान रिक्त - सा प्रतीत होता है। कला की दृष्टि से यह दोष ही है। इसके बाद सुमन की कथा की गति समान रूप से प्रवाहित होती हुई दृष्टिगोचर नहीं होती। सुमन के गृहत्याग की गति पहाड़ी नदी की तरह

उछलती - कूदती-सी प्रतीत होती है, पर उसके बाद लगता है कि वे सुमन की गति को जबरदस्ती घसीटते से प्रतीत होते है। उपन्यास के अन्त में वेश्याओं की तकरीरें निरर्थक हैं। गजाधर जिस प्रकार साधू के वेश में बीच-बीच में आवश्यकतानुसार आ जाता है, वह भी प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का दुर्बल पक्ष प्रस्तुत करता है, हम यह तो जान जाते हैं कि वह गजानन्द है, पर बार-बार वह कहाँ से आ टपकता है, इसे प्रेमचन्द स्पष्ट नहीं कर पाते। यह उनकी कला की दृष्टि से बहुत अच्छी बात नहीं है। उनकी कला में देव-संयोग से घटित होने की आश्यकता पर प्रेमचन्द ने असंतुलित ढंग से बल दिया है। प्रेमचन्द ने अपने अन्य सामाजिक उपन्यासों की भाँति इस उपन्यास में भी हास्य-प्रसंगों की सृष्टि की है।

**5. पात्रों का वैविध्या :-**

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भीड़-भाड़ बहुत अधिक है। यह उपन्यास चरित्र-प्रधान नहीं है। इस उपन्यास की नायिका सुमन के चरित्र-चित्रण में प्रेमचन्द ने अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि और नारी-मनोविज्ञान का परिचय दिया है। सुमन के चरित्र में उसके मानसिक संघर्ष का चित्रण भी उन्होंने सफलतापूर्वक किया है।

सामन्त वर्ग का प्रतिनिधित्व कुँवर अनिरुद्धसिंह करते हैं। वे उच्च शिक्षा-प्राप्त तथा उदार विचारों के व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी कूपमण्डूकता छोड़कर कुछ प्रगतिशीलता को आत्मसात किया है। वे साहित्य-प्रेमी हैं, भाषा-प्रेमी हैं और भारत की दरिद्र जनता के प्रति सहानुभूति रखते हैं। उनके विचार अवश्य उन्नत और उदार हैं, लेकिन अपने उन्नत विचारों को व्यंग्य रूप में कहने के अभ्यस्त हैं, जिसके कारण लोग प्रायः उन्हें गलत समझ जाते हैं। वे बस बातों में तेज हैं, व्यावहारिक रूप में कोई काम नहीं कर सकते। डॉ.श्यामाचरण सरकार द्वारा मनोनीय सदस्य हैं, इसलिए प्रत्येक समस्या पर यही कहते हैं कि पहले सरकार से मशविरा कर लूँ, तब अपनी सदस्य हैं, इसलिए प्रत्येक समस्या पर यही कहते हैं कि पहले सरकार से मशविरा कर लूँ, तब अपनी राय दूँ, वे भी बातों के तेज हैं। वे कुछ पश्चिमी संस्कारों से प्रभावित मालूम होते हैं। भगतराम ठेकेदार हैं। उन्हें अपने रुपये से मतलब है, वेश्या सुधार से उन्हें कोई मतलब नहीं है। वह ग्रामोफोन का रिकॉर्ड है, पैसे को लोभी है, इसीलिए सेठ चिम्मनलाल के विरुद्ध कभी नहीं जाता। वह जाति, समाज या देश के प्रति कर्त्तव्यच्युत रहता है। चिम्मनलाल अपने हृदय की दुर्बलताओं को विनोदशीलता के आवरण में छिपाकर बच जाना चाहता है। वह राजनीति में भाग नहीं लेना चाहता। वह विट्ठलनाथ के विधवाश्रम को तभी तक सहायता देना चाहता है, जब तक कि राजनीति से दूर है। सेठ बलभद्रप्रसाद उस कहावत को चरितार्थ करता है कि हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं। वह समाज-सुधार के सम्बन्ध में बढ़-चढ़कर बातें तो करता है, पर

जब उसका व्यावहारिक पक्ष सामने आ जाता है, तो वह उसमें सहयोग नहीं देता। वह बड़ा निर्भीक और राजनीतिकुशल है। इसी कारण वह जहाँ पद्मसिंह और विट्ठलदास का मुकाबला करता है, वहीं जनता में लोकप्रिय भी रहता है।

गजाधर कृपण और संशयशील है। एक ओर वह निर्धन है, दूसरी ओर सुमन की सब खा-पीकर बराबर कर देने की नीति से परेशान भी रहता है। इसी कारण उसका चित स्थिर नहीं रहता। वह अपने परिश्रम और प्रेम से सुमन के हृदय पर अधिकार प्राप्त करना चाहता है और उसमें असफल होने पर सुमन पर शासनाधिकार करना चाहता है। सुमन की चंचल प्रवृत्ति, इन्द्रियलिप्सा और मुहल्ले की कुछ ऐसी स्त्रियों के साथ उठाना-बैठना देखकर जो उसकी दृष्टि में बुरी थीं, सुमन के चरित्र पर गजाधर को शंका और अविश्वास होने लगता है, यद्यपि इस अविश्वास का कोई आधार नहीं है। यही वस्तुत: गजाधर की गलती थी। धीरे-धीरे संघर्ष बढ़ता है और अन्त में सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। सुमन को घर से निकालने के पश्चात् गजाधर ने थोड़े दिन तक पद्मसिंह की निन्दा की, पर अन्त में वह साधू हो जाता है और गजाधर से गजानन्द बन जाता है। जब वह आवेशरहित होकर ठंडे दिल से अपने पारिवारिक जीवन पर विचार करता है, तो उसे सर्वत्र अपना ही दोष दिखायी पड़ता है। उधर सुमन भी अपना ही दोष देख पाती है। यह वस्तुत: स्वाभाविक भी था। दिल का गुबार निकल जाने के पश्चात् हृदय में इतनी उदारता तो आ जाती है और वह सारे अपराधों की जड़ अपने आपको ही समझने लगता है। गजाधर का साधू-रूप उसका प्रायश्चित ही है। यहाँ पर प्रेमचन्द क्रमश: गजाधर के आत्मबल को विकसित करते हैं। उसने अपनी अदूरदर्शिता से एक नारी के जीवन को नष्ट कर दिया था, इसीलिए पतिता नारियों के लिए वह सेवासदन में जुट गया। उसका अन्तिम रूप प्रभावशाली है।

पण्डित पद्मसिंह शर्मा में तुरन्त किसी निर्णय पर पहुँचने की शक्ति नहीं है और निर्णय पर पहुँच भी जाते हैं, तो उसे व्यावहारिक रूप देने में भी उन्हें काफी समय लग जाता है, जिससे सारा काम बिगड़ जाता है। वे आचारवान् व्यक्ति हैं, पर उनमें अपने सिद्धान्तों पर जमे रहने की दृढ़ता नहीं है। वे जिस बात को उचित समझते हैं, उसे भी व्यावहारिक रूप से करने की उनमें दक्षता नहीं है।

विट्ठलदास पद्मसिंह के मित्र हैं और उनकी कमजोरियों का निराकरण करने में विट्ठलदास का बहुत बड़ा हाथ है। यही कारण है कि शान्ता के विवाह में वे कुछ दृढ़ता दिखाते हैं, और जब शहर में वेश्या-सुधार सम्बन्धी आन्दोलन छिड़ता है, तो उसमें दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखते हैं। जो पद्मसिंह शर्मा अन्तिम निर्णय बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं, वह नारी जाति की दुर्गति देखकर आत्मग्लानि और चिन्ता की मूर्ति बन जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ वे कर्मक्षेत्र में कूद पड़ते हैं।

उनकी शिथिलता यद्यपि जाती नहीं, और कहीं-न-कहीं प्रकट हो जाती है। (विशेष रूप से सदनसिंह के सामने), पर अब वे विचारों में अधिक दृढ़ हो जाते हैं।

पद्मसिंह की पत्नी सुभद्रा उनकी अपेक्षा कहीं अधिक व्यवहारकुशल है। वे स्वयं घर का काम-काज सँभालने में बहुत अधिक दक्ष नहीं हैं। वे पत्नी का कहना बहुत अधिक मानते हैं, पर सदनसिंह के मामले में वे पत्नी की बात भी नहीं मानते, सुभद्रा उन्हें बराबर चेताती है कि सदन पर कुछ नियंत्रण रखना चाहिए। अन्त में प्रेमचन्द ने उनकी आत्मा को बलवान् बनाते हुए कहता है – ''उन्होंने (पद्मसिंह ने) अपनी आत्मा को बलवान् बनाकर हृदय में सेवा का सच्चा भाव जगा लिया है।'' यह सब अनेक संघर्षों के बाद होता है।

विट्ठलदास की सहायता नगर की प्रत्येक संस्था को अवश्य होती थी। केवल इसीलिए नहीं कि वह सद्भावना एवं कल्याण की भावना से प्रेरित व्यक्ति है, बल्कि इसलिए कि उनमें पुरुषार्थ है। वह प्रत्येक कार्य को प्रसन्नचित्त होकर करता है।

उनमें न्यायप्रियता कूट-कूटकर भरी हुई है। विट्ठलदास ही वह शक्ति है, जो पद्मसिंह को आत्मबल प्रदान करती है।

पद्मसिंह के भाई मदनसिंह में परिवार-प्रेम और परिवार की मान-मर्यादा की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। इन्होंने परिवार की मान-मर्यादा रखने के लिए पद्मसिंह का जीवन बना दिया था, लेकिन कभी-कभी मदनसिंह में झूठी मान-मर्यादा के प्रति आवश्यकता से अधिक मोह मिलता है। वे परम्परा एवं रूढ़िवादिता के मोह में पड़कर अपने परिवार की झूठी मर्यादा बनाये रखने के लिए भी उत्सुक प्रतीत हीते हैं। मदनसिंह में वात्सल्य का बाहुल्य है। जिस समय सदनसिंह शान्ता और सुमन को अपने घर ले जाता है, तो मनदसिंह से रहा नहीं जाता और थोड़े दिनों के पश्चात् सदनसिंह के सम्बन्ध में जो विचार वे प्रकट करते हैं, उनमें आक्रोश अवश्य है, पर उस आक्रोश के पीछे भी वात्सल्य छिपा हुआ। वे पुत्र-स्नेह और झूठी मान-मर्यादा के मध्य में डूबते – उतराते रहते हैं और नाती का जन्म होने पर उनसे रुका नहीं जाता और वे सदनसिंह के यहाँ पहुँच जाते हैं, उनका मिथ्याभिमान, झूठी मान-मर्यादा के प्रति मोह सभी कुछ पौत्र-स्नेह के सामने घुटने टेक देता है। उनका चरित्र बड़ा सीधा-सादा और सरल है। अपनी पीढ़ी के व्यक्तियों के वे एक प्रकार से यथार्थ चित्र हैं।

पद्मसिंह का भतीजा और मदनसिंह का पुत्र है – सदनसिंह। बड़े लाड़-प्यार से उसे पाला गया है। बचपन में वह बड़ा ढीठ और लड़ाकू था। वयस्क होने पर वह क्रोधी, आलसी और उद्दण्ड हो जाता

है। वह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, इसमें उसकी माँ का बहुत बड़ा हाथ था। जब उसका गाँव में जी ऊब जाता है तो वह चाचा के यहाँ आता है। यहाँ आकर आनन्दोपभोग करने और इन्द्रिय-सुख भोगने की उसकी इच्छा तीव्र हो जाती है। पद्मसिंह उसे पढ़ाने की कोशिश करते हैं, पर उसका मन नहीं लगता। पद्मसिंह उसे अच्छे मार्ग पर ले चलने का प्रयास तो करते हैं, पर सफलता नहीं मिल पाती, क्योंकि वे सदनसिंह के ऊपर कोई अनुचित दबाव भी नहीं डालना चाहते, इसीलिए उसकी चंचलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। धीरे-धीरे वह स्वयं सुमन के यहाँ पहुँच जाता है। पहले वह सुमन के सामने प्रेमाभिनय करता है और नियंत्रणहीन रसिक बन जाता है। चाची के कंगन चुराता है और बाप से रुपये माँगता है, जो ऐसी परिस्थिति में स्वाभाविक है। वास्तव में प्रेमचन्द ने इस नवयुवक को पतन की ओर से बचाने के लिए सुमन के आश्रय में रखा। सुमन के दालमण्डी छोड़ने के बाद सदनसिंह में परिवर्तन हो जाता है। प्रेमचन्द कहते हैं कि वह अब उच्छृंखल प्रेम के स्थान पर वैवाहिक जीवन के प्रेम को अधिक महत्त्व देने लगा।

सुमन के लिए उसके मन में एक अतृप्त लालसा बनी रहती है, किन्तु सुमन के सम्बन्ध में अब वह पहली-जैसी भावना रखते हुए स्वयं लज्जित होता है और धीरे-धीरे शान्ता की ओर बढ़ता है। अभी तक प्रेमचन्द ने उसके कुपक्ष का ही चित्रण किया था, किन्तु उत्तरार्द्ध में वे धीरे-धीरे उसके चरित्र के सुपक्ष का चित्रण करने लगे हैं। एक बार उसने प्रो. रमेशदत्त का व्याख्यान सुना, जिससे वह बिल्कुल बदल जाता है। उसे अब वेश्याएँ हलाहल विष के समान प्रतीत होती हैं। प्रेमचन्द यहाँ और आगे बढ़ जाते हैं और उसको पूर्णत: आदर्शवादी धरातल पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। अब उसमें शुद्ध और पवित्र भावों का उदय होता है। वह आत्म-सुधार की लहर में डूबने लगता है। अब वह परिश्रम करता है। अब वह परिश्रम करता है। अपने यहाँ सुमन को रखता है और उसकी प्रेरणा से शान्ता को भी साहसपूर्वक ग्रहण कर लेता है तथा अन्त में अपने परिवार और समाज का उपयोगी अंग बन जाता है। उसका अन्तिम रूप हमें चाहे जितना ही आकर्षिक प्रतीत हो, वह बहुत प्रभावपूर्ण नहीं प्रतीत हो, वह बहुत प्रभावपूर्ण नहीं प्रतीत होता, यह स्मरण रखना चाहिए। उसमें न तो स्वाभाविकता ही रहती है और न यथार्थता रहती है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह अपने आन्तरिक पक्ष से प्रेरित होकर कोई कार्य ही नहीं करता और यदि आन्तरिक पक्ष से प्रेरणा ग्रहण करता भी है तो बाद के अंशों में वह उसका आन्तरिक पक्ष नहीं रहता, वरन प्रेमचन्द द्वारा उसके अपने आन्तरिक पक्ष को बदलकर रखा गया दूसरा ही आन्तरिक पक्ष होता है, उसका चरित्र यथार्थवाद से आदर्शवाद की ओर स्वाभाविकता से अविश्वसनीयता, सप्राणता से निर्जीविता, फलस्वरूप असत् से सत् की ओर प्रयाण करने का प्रेमचन्द का यांत्रिक प्रयास मात्र है।

सुमन उपन्यास की नायिका है। बचपन से ही विलास और इन्द्रियसुख की प्रवृत्ति से युक्त साधन न होने पर भी वह अधिकाधिक सुख और वैभव की भावना की ओर बढ़ती है। धीरे-धीरे उसकी लज्जा-शक्ति भी शिथिल पड़ जाती है और वह अपनी अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति में लग जाती है और यहीं से उसके चरित्र का पतन प्रारम्भ हो जाता है। सुमन का जो कुछ भी चरित्र है, वह यही है। उसके चरित्र की गतिशीलता उसके पतन तक ही है। उनके पश्चात् वह सीधे मार्ग पर चलती है, किन्तु उसमें गतिशीलता कम रहती है। वह सुन्दर है चंचल है, साथ ही अभिमानी भी है। कोई भी बात हो, वह सबसे बढ-चढ़कर रहना चाहती है। ऐसी लड़की का विवाह जब गजाधर जैसे व्यक्ति के साथ हो तो उसकी वही गति स्वभाविक रूप से होनी चाहिए जो सुमन की हुई। अत: परिणाम यह होता है कि वह कपटाचरण करने लगती है। अपनी चटोरी जीभ को तृप्त करने के लिए वह अपने पति से छिपकर चाट उड़ाने लगती है। अपनी इसी सगर्वा प्रकृति के कारण वह दिखावापसन्द नारी के रूप में हमारे सम्मुख आती है, वह जब दूसरों कोगहने बनवाते देखती है, तो उसके मन में असंतोष की भावना अधिकाधिक गहरी होती जाती है जो पति की कमाई है, उसे तो वह खा-पीकर खत्म कर देती है। पति के प्रेमपूर्ण शब्दों की अपेक्षा उसे चाट के पत्ते और मिठाई के दोने अच्छे लगते हैं।

अपने सौन्दर्य को साधन बनाकर वह अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों पर विजय प्राप्त करना चाहती है। दूसरा कारण उसका कुसंग था। उसका पड़ौस वेश्याओं का है, और पड़ौस ही नहीं, अपितु वह देखती है कि भोली वेश्या का समाज-सुधारकों, धर्म के ठेकेदारों और पूँजीपतियों के यहाँ बड़ा मान और सम्मान है, जिसकी उसने कभी कल्पना भी न की थी। पद्मसिंह - जैसे व्यक्ति के घर में भोली का सम्मान देखकर उसकी यह धारणा और भी पुष्ट हो जाती है और वह सीमा से बाहर हो जाती है। उसके वेश्या बनने के कारण प्रेमचन्द ने कई स्थानों पर स्पष्ट किये हैं, इसके बाद प्रेमचन्द ने उसे सुधार की ओर प्रवृत्त किया है और बड़े ही धैर्य और संतोष के साथ विट्ठलदास इसका साधन बने हैं। प्रेमचन्द को भी सुमन का वेश्या बनना अच्छा नहीं लगा और उसे वे दालमण्डी से शीघ्र निकालने को प्रस्तुत दृष्टिगोचर होते हैं। सदनसिंह को देखकर सर्वप्रथम उसके मन में नि:स्वार्थ प्रेम की भावना का उदय होता है। वह सदनसिंह के प्रति अपना सर्वस्व लुटा देती है। वेश्या होने पर भी उसके उत्तर संस्कार और सुविचार समूल नष्ट नहीं हो गये थे और सदनसिंह के प्रति जो उसमें उत्तम विचार उत्पन्न हुए वस्तुत: वही उसे पतन के गर्त से निकालने में एक प्रकार से सहायक होते हैं, विट्ठलदास स्थूल साधन है, तो सदनसिंह सूक्ष्म साधन।

सदनसिंह के माध्यम से उसे उस प्रेम का अनुभव होने लगता है, जिसका अनुभव वेश्याएँ कभी नहीं कर पातीं। सुमन की आत्मा का पूर्ण संहार इसी वास्तविक प्रेम के कारण कभी नहीं हो पाता, जैसे कि प्रेमचन्द के चरित्र-चित्रण का सामान्य नियम है। वे किसी चरित्र में केवल अच्छाई या केवल बुराई नहीं हो पाता, जैसे कि प्रेमचन्द के चरित्र-चित्रण का सामान्य नियम है। वे किसी चरित्र में केवल अच्छाई या केवल बुराई नहीं देखना चाहते। यहीं से प्रेमचन्द सुमन के अन्तर्मन के मनुष्यत्व की आभा चमकाने लगते हैं और वह आत्मसुधार द्वारा ऐसी नारी बन जाती है जो किसी भी सभ्य समाज में आदर एवं सम्मान प्राप्त कर सकती है। शान्ता के विवाह के अवसर पर उसी के कारण गड़बड़ी होती है, जिससे उसे बड़ी पीड़ा होती है। इसी प्रकार का कोई अन्य अवसर भी जब आता है तो उसे बड़ा खेद होता है और अपने किये पर बड़ा पश्चाताप प्रकट करती है। कई बार उसने डूबने की चेष्टा की, उसका चरित्र एक संघर्ष के रूप में है और वह संघर्ष भी अपने मन से है। वह सेवा-मार्ग को अपनाती है। सेवा के द्वारा वह आत्मोद्धर की चेष्टा भी करती है। प्रेम की पवित्रता को वह समझने लगती है। प्रेम की ऐसी पवित्रता, जो दूसरों का भी उद्धार कर सकती है। विपत्तियों की आग में तपकर व्यक्ति शुद्ध हो जाता है, शान्ता का चरित्र इस बात का द्योतक है, वह पर-कातर हो जाता है और उसमें दु:खी जनों के प्रति सहानुभूति की भावना आ जाती है। वह दारोगा कृष्णचन्द्र की छोटी लड़की है। प्रेमचन्द प्रारम्भ में किसी पात्र के सम्बन्ध में जो विशेषता हमें बता देते हैं, उसी का विकास शेष भाग में करते हैं। इसी प्रकार शान्ता के सम्बन्ध में भी उन्होंने उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख प्रारम्भ किया है। वह प्रारम्भ के सम्बन्ध में भी उन्होंने उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख प्रारम्भ किया है। वह प्रारम्भ में ही गम्भीरस गुणी और संतोषी है। अपने मामा के यहाँ अपनी माँ गंगाजली की मृत्यु हो जाने से और निराश्रित हो जाने के बावजूद उसकी आत्मिक शक्ति दिन-प्रतिदिन बलवती होती गई। उसमें प्रारम्भ से ही जो सहनशीलता दृष्टिगोचर होती है, वह निरन्तर विद्यमान रहती है। जब सुमन के कारण उसका विवाह नहीं होता, तो भी उसमें शोक, मनोमालिन्य या क्रोध का आभास तक नहीं मिलता और वह उस समय भी गम्भीर ही रहती है। उसकी आँखों में एक निर्मल ज्योति उत्पन्न हो जाती है। उसने अपने जीवन में यह गम्भीर आघात सहन किया, जिससे उसमें एक स्वर्गीय आभा का प्रस्फुटीकरण होता है। प्रेमचन्द ने उसके हृदय में सदनसिंह के प्रति स्नेह को उभारकर उसके प्रेम को और भी दिव्य रूप में प्रकट किया है। यह प्रेम ही उसे ऊपर उठा देता है। मामी के दुर्व्यवहार के बावजूद उसके प्रति हृदय में क्रोध या विद्वेष उत्पन्न नहीं होता। उसके हृदय में नयी स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है और जब तक पद्मसिंह और विट्ठलदास उसे आकर नहीं ले जाते, वह मामा के यहाँ गम्भीरता और सन्तोष के साथ रहती है।

शान्ता की सबसे बड़ी विशेषता है - कर्मण्यता और सहिष्णुता। उसका चरित्र भारतीय नारी का चरित्र है। प्रेमचन्द ने इसमें सुमन और शान्ता दोनों के चरित्रों के रूप में नारी-शिक्षा के दो चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं। बारात के लौट जाने पर भी वह अपने को सदन की ही विवाहित समझती है। वह इस आशा में परिपूर्ण थी कि वह किसी दिन अपने पति की सेवा करने की अधिकारिणी बनेगी। वह जिन्दगी में केवल रोना ही नहीं जानती, जागरूक भी है और साहस एवं आत्मविश्वास से विषमताओं का सामना करना भी जानती है। अपना भला किसमें है, वह खूब जानती है। यही प्रवृत्ति उसे आगे चलकर सफलता प्रदान करती है।

पद्मसिंह की पत्नी का नाम सुभद्रा है। वह पति की अपेक्षा अधिक व्यवहारकुश्ल, विनम्र, दयापूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण है। वास्तव में प्रेमचन्द और 'जयशंकर प्रसाद' के नारी - दुष्टिकोणों में समता है। दोनों ममता, स्नेह, करुणा एवं त्याग को नारी के आवश्यक गुण स्वीकार करते है। सुभद्रा का व्यवहारकुशल रूप मदनसिंह के सन्दर्भ में प्रकट होता है। पद्मसिंह की-सी कमजोरी सुभद्रा में नहीं है। सदनसिंह को लेकर दोनों में तनाव हो जाता है, पर इसे लेकर दोनों में मनमुटाव नहीं होता। सुभद्रा अभद्रता की सीमा तक नहीं जाना चाहती। वह अपनी पति-भक्ति में कोई भी अन्तर नहीं आने देती। वह एक विचारशील नारी है। उसका हृदय उदार और उच्च विचारों से पूर्ण है। वह गाली का उत्तर गाली से दिये जाने में विश्वास नहीं रखती। वह हर एक मनुष्य को मनुष्य के रूप में ही मानना चाहती है, देवता के रूप में नहीं मानना चाहती। कभी भी उसने सुमन के प्रति घृणा-भाव प्रकट नहीं किया। उसका वेश्या हो जाना सुभद्रा के लिए पीड़ादायक अवश्य था, पर वह यह भी विश्वास करती थी कि सुमन का नैतिक विकास एक दिन अवश्य होगा।

वेश्या के रूप में भोली का चरित्र धन को महत्त्व देने वाला है। गंगालजी सती-साध्वी स्त्री है और अपने पति कृष्णचन्द्र को कुमार्ग पर जाने से बचाती है तथा धन-संचय की शिडा देती है। वह अधिक व्यवहारकुशल है। जाह्नवी बड़ी कर्कशा, तेज-मिजाज और शुष्क स्वभाव की है। उसमें उदारता नाममात्र को नहीं है। भामा में वात्सल्य भी ऐसा है जो सदनसिंह को ले डूबने बाला है। मिस कान्ति पश्चिमी भावना से ओत-प्रोत लड़की है।

प्रेमचन्द ने अपनी उन बहुत-सी त्रुटियों का परिमार्जन इस उपन्यास में कर दिया है, जो उनके पिछले उपन्यास में लक्षित होती थीं। इसकी भाषा अधिक सव्यवस्थित, प्रभावमय और स्वाभाविक है।

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

# ‘रंगभूमि’ उपन्यास - प्रेमचन्द

**अनुक्रमणिका :-**

1. ‘रंगभूमि’ उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए।
2. ‘रंगभूमि’ उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।
3. ‘रंगभूमि’ में व्यक्त कथा–शिल्प तथा कला–सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए।
4. ‘रंगभूमि’ में व्यक्त तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत कीजिए।
5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ‘रंगभूमि’ उपन्यास में दर्शित समस्याओं का मूल्यांकन कीजिए।
6. ‘रंगभूमि’ उपन्यास में व्यक्त ‘आदशोन्मुखी यथार्थवाद’ का मूल्यांकन कीजिए।
7. ‘रंगभूमि’ में सूरदास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
8. प्रेमचन्द की उपन्यास –कला का मूल्यांकन कीजिए।

# 'रंगभूमि' उपन्यास

**- प्रेमचन्द**

**प्रश्न :-**

## 1. 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. उपन्यास का प्रमुख उद्‌देश्य
3. कथाक्रम
4. राष्ट्रीय दृष्टिकोण
5. 'रंगभूमि' जीवन का प्रतीक
6. गाँधीजी का प्रभाव

### 1. प्रस्तावना :-

'रंगभूमि' उपन्यास का कथानक दो सूत्रों में चलता है। एक ओर कारी के कुँवर भरतसिंह और रानी जा ह्नवी, जौन सेवक और मिसेज सेवक, राजा महेन्द्रसिंह और इन्दु नामक परिवारों और ताहिर अली और कुल्सूम के परिवार की समाज और राजनीति सापेक्ष कथा है। दूसरी ओर काशी के निकट पाँडेपुर के सूरदास, जगधर, बजरंगी, नायकराम पण्डा, ठाकुरदीन, भैरो और उसकी पत्नी सुभागी की कहानी है उपन्यासकार प्रेमचन्द ने दोनों कथा - सूत्रों का समन्तय उपस्थित किया है।

### 2. उपन्यास का मुख उद्‌देश्य :-

नौकर शाही और पूँजीवाद तथा देशी राज्यों के साथ जनवाद का संघर्ष चित्रित करना उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

कुँवर भरतसिंह की पुत्री इन्दु और पुत्र विनय है। जौन सेवक की पुत्री सोफिया और पुत्र प्रभु सेवक है। इन्दु राजा महेन्दुसिंह की पत्नी है। जैनब और रकिया ताहिर अली की विमाताएँ है। ताहिर अली अपने सौतेले भाई माहिर अली की शिक्षा और परिवार पालन के लिए आर्थिक कष्ट सहन करते-करते अन्त में गबन करता है और उसका मालिक जौन सेवक उसकी सजा कर देता है।

### 3. कथाक्रम :-

'रंगभूमि' उपन्यास में ताहिर अली और उसके परिवार की कथा एक प्रकार से स्वतन्त कथा है। शेष कथा में सेवा-समिति की देश -सेवाओं, जसवंत नगर के माध्यम द्वारा देशी रियासतों की शोचनीय दशा, पाँडेपुर में पूँजीवाद के भयंकर परिणामों, सूरदास की जमीन, झोंपडी और अन्त में पाँडेपुर का जौन सेवक द्वारा अपने कारखाने के लिए हथिया लिया जाना, विनय और सोफिया के प्रेम माध्यम द्वारा धार्मिक स्वतन्त्रता, मिसेज सेवक के अभारतीय दृष्टिकोण द्वारा धार्मिक संकीर्णता, कुँवर भरतसिंह का संपत्तिपर प्रेम, जौन सेवक की धन-लोलुपता, इन्दु और राजा महेन्द्रसिंह का संघर्ष और अन्त में राजा साहब का सूरदास की मूर्ति के नीचे दब कर मरना सूरदास की सत्यनिष्ठा और अन्त में गोली खाकर मृत्यु की गोद में जाना और ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित पात्रों द्वारा ग्रामीण जीवन की अनेक समस्याओं- मद्यपान, निराश्रिता नारी आदि का विवरण हुआ है।

### 4. राष्ट्रीय दृष्टिकोण :-

उपर्युक्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याएँ माध्यम मात्र है। प्रेमचन्द का दृष्टिकोण वास्तव में राष्ट्रीयता से और व्यापक जीवन से सम्बन्धित है। उपन्यासकार का राष्ट्रीय दृष्टिकोण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार है। उनकी आकांक्षा है कि भारतवासी सभी व्यक्तिगत कामनाओं और आकांक्षाओं से ऊपर उठकर नि:स्वार्थ भाव से देश की सेवा में निमग्न हों। उस समय देश को सब प्रकार से जागरण करने की आवश्यकता थी। देश की नवीन आवश्यकताओं, आशाओं और आकांक्षाओं की प्रतिमूर्ति विनय की माता रानी जाह्नवी है। प्रेमचन्द को स्वदेशानुरागी संन्यासियों की आवश्यकता थी। गार्हस्थ्य जीवन संकीर्णता और वासना पर आधारित न होकर निरन्तर प्रसारोन्मुख हो। जीवन स्वार्थ में लिप्त न होकर विनय और सोफी प्रेम की रानी जाह्नवी उस समय तक शंका की दृष्टि से देखती रही, जब तक उसे यह विश्वास न हो गया कि उनका प्रेम वासना पर आधारित नही है। वह प्रेम विनय के स्वदेशानुराग में बाधक बनेगा।

### 5. 'रंगभूमि' जीवन का प्रतीक :-

'रंगभूमि' उपन्यास में जीवन के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण अत्यन्त उदात्त है। उपन्यास के नामकरण में ही उनका दृष्टिकोण निहित है। जीवन क्रीडा क्षेत्र है, रंगभूमि है। वहाँ हर एक व्यक्ति खेल खेलने आया है। किन्तु खेल खेलते समय "क्यों धरम-नीति को तोडे ?" संसार में प्राय: लोग खेल खेल की तरह नहीं खेलते, घाँधली करते हैं। प्रेमचन्द का कहना है कि भले ही दृष्टि जीव पर रहे, पर हार

से कोई घबराये नहीं, ईमान नहीं छोडे। वही सच्चा मार्ग है और कीर्तिपय है। सूरदास और जौन सेवक दोनों ने अपना-अपना पात्र निभाया। सूरदास ने सच्चे अर्थ में जीवन को रंगभूमि समझा। भौतिक जगत में हारकर भी आत्मिक दृष्टि वह सुखी था। उसके मन में कभी मलिनता न आयी। जीत और हार दोनों को उसने प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। खेल में सदैव नीति का पालन किया। प्रतिद्वन्द्वी पर कभी छिपकर उसने चोट नहीं की। दीन-हीन होने पर कभी छिपकर उसमें आत्मबल था, हृदय क्षमा, माँस न होने पर भी हृदय में विनय, शील और सहानुभूति भूरपर थी।

जॉन सेवक के अनुसार जीवन और संसार संग्राम क्षेत्र है, समर-भूमि है। इसी कारण उसने छल, कपट कपट, गुप्त आघात आदि सभी अवगुणों का आश्रय लिया। भौतिक रूप से विजयी होने पर भी आत्मग्लानि से वह पीडित ही रहा।

### 6. गाँधीजी का प्रभाव :-

'रंगभूमि' उपन्यास में निहित प्रेमचन्द के दृष्टिकोण पर गाँधीजी का प्रभाव स्पष्टतया लक्षित है। यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए, सत्य का अवलंबन ग्रहण करते हुए, आत्म-सम्मान को दृष्टि-पथ पर रखते हुए निष्काम कर्म में प्रवृत्त होने पर वह कदापि दु:खी न होता पशुधर्म पर आत्मधर्म की विजय अवश्य होती है। सूरदास की मृत्यु से जनसत्तावादियों में एक नयी संगठन-शक्ति उत्पन्न हुई। तत्कालीन वातावरण में यह विजय कम नहीं।

**Lesson Writer**

*ऐनम्पूडि कविता एम.ए.*

**प्रश्न :-**

**2. 'रंगभूमि' उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।**

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथा का विकास क्रम
3. भविष्य वाणी - कथा का विकास
4. वस्तु विन्यास
5. अन्तर कथाएँ
6. दोष
7. निष्कर्ष

**1. प्रस्तावना :-**

काशी के बाहरी भाग में बसे पांडेपुर गाँव को 'रंगभूमि' का कथा-मंच बनाया गया है। ग्वाले, मजदूर, गाडीवान और खोमचे वालों की उस गरीब बस्ती में सूरदास नामक एक गरीब और अन्धा चमार रहता है। वह तो है भिखारी किन्तु पुरखों की 10 बीघा धरती भी उसके पास है, जिसमें गाँव के ढ़ोर चरते -विचरते हैं। सामने ही एक खाल का गोदाम है। उसका आढ़ती है एक ईसाई - जॉन सेवक। वह सिगरा मुहल्ले का निवासी है। 'रंगभूमि' की मुख्य कथा के साथ जुडने वाली उपकथा है - सोफिया और विनय के परस्पर प्रेम का।

जॉन सेवक के परिवार से या का श्री गणेश करने के साथ-साथ सूरदास, सोफिया, जॉन सेवक आदि का सामान्य परिचय उपन्यास के पाठक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। कथा के भावी विकास के लिए सामग्री जुटने लगती है और उस में विश्वसनीयता भी आजाती है।

**2. कथा का विकासक्रम :-**

रंगभूमि में कथा के विकास के लिए संकेत विधि को भी उपन्यासकार प्रेमचन्द ने अपना या है। कथोपकथन द्वारा भावी वे भावी घटनाओं का संकेत देते हैं जैसे- मिसेज सेवक तथा जान सेवक के वार्तालाप द्वारा सूरदास की जमीन लेने की भावी घटना का संकेत मिल जाता है। द्वितीय, संकल्प एवं

प्रतिज्ञा द्वारा भी भावी घटनाओं का संकेत देते हुए कथा का विकास होता है, यथा- सूरदास ताहिर अली के सामने अपना संकल्प बतादेता है, ''मेरे जीते - जी तो जमीन न मिलेगी, हाँ मर जाऊँ तो भले ही मिल जाए।'' यहाँ जमीन के लिए अवश्यंभावी संघर्ष का प्रतीक है। इसी प्रकार सोफिया के संकल्प से उसके घर से निकलने की सूचना मिल जाती है, ''अब इस घर में रहना नरकवास के समान है। इस बेहयाई की रोटियाँ खाने से भूखों मर जाना अच्छा बला से लोग हँसेंगे, आजाद तो हो जाऊँगी। किसी के ताने तो न सुनने पडेंगे।''

## 3. भविष्यवाणी - कथा का विकास :-

'रंगभूमि' उपन्यास में भविष्यवाणी द्वारा भी कथा का विकास हुआ है। यह भविष्यवाणी कहीं शाप के रूप में प्रकट होती है, तो कहीं आशंका के रूप में। उदाहरण के लिए जेलर की भूढ़ी माँ अपने बेटे की हत्या से दु:खी होकर सोफिया को शाप देती है - ''जैसा तूने किया वैसा तेरे आगे आएगा। मेरी भाँति तेरे दिन भी रोते बीतें।'' फलत:, सोफिया और विनय सचमुच विवाह का सुख नहीं भोग पाते अपितु दोनों को आत्महत्या के लिए विवश होना पडता है। इन्दु भी विनय और सोफिया के प्रेमभाव पर अमंगल की आशंका करते हुए कहती है - ''यह आग सारे घर को जला देगी, विनय के ऊँचे-ऊँचे मंसूबे, माता की बडी-बडी अभिलाषाएँ, पिता के बडे-बडे अनुष्ठान सब विध्वांस हो जायेंगे।'' इन्दु की आशंका सत्य-सिद्ध निकलती है।

'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक में कुछ उलझने तथा बाधाएँ होने पर भी कथाक्रम में कहीं रुकावट नहीं आती। औद्योगीकरण की समस्या का विशद चित्रण करके भी कथानक को आगे बढ़ाया गया है। सामन्ववादी समस्या भी इस में सम्मिलित हो गया है। एक ओर जॉन सेवक के हथकण्डे चलते हैं, तो दूसरी और सूरदास का संकल्प अउजाता है। आँद्योगीकरण की विजय के साथ-संघर्ष समाप्त हो जाता है।

## 3. नाटकीय संरचना :-

कथानक को रोचक और उत्सुकता पूर्ण बनाने के लिए 'रंगभूमि' में नाटकीय प्रसंगों और कौतूहलपूर्ण घटनाओं का समावेश हुआ है। सोफिया का घर से निकल पडना, जलती हुई आग में कूद पडना, विनय को आग से बचाना, वीरपाल का जेल में सेंध लगाना, सोफिया के पत्थर लग जाने पर विनय का गोली चला देना, सोफिया का गायब होना, भीलों की बस्ती में सोफिया और विनय का साल भर रहना आदि घटनाएँ रोचकता एवं कौतूहल उत्पन्न करती हैं।

## 4. वस्तु-विन्यास :-

'रंगभूमि' उपन्यास की कथा का वृत्तान्त मूलत: तत्कालीन भारतीय समाज है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने जीवन के प्राय: सभी रूपों का पूर्णतया आभव्यक्त करने का प्रयत्न किया। धार्मिक, सामाजिक तथा मानवीय वर्गों का चित्रण हुआ है। औद्योगीकरण में उत्पन्न विविध समस्याओं का विशद चित्र अंकित किया गया है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने व्यापकता के निर्वाह के लिए कथा के तीन केन्द्र रखे हैं - (1) पहला केन्द्र पांडेपुर। आधिकारिक कथा का केन्द्र सूरदास इसका नायक है। (2) दूसरा केन्द्र काशी है। यहाँ से जॉनसेवक, सोफिया, विनय, राजा महेन्द्रकुमार तथा इन्द्र से सम्बन्धित कथा का पल्लवन होता है। (3) तीसरा केन्द्र उदयपुर की रियासत है। इसके सूत्रधार विनयकुमार हैं।

इन कथाओं के अतिरिक्त अनेक उपकथाएं समानान्तर चलती रहती हैं। - जैसे भैरों-सुभागी, ताहिर अली और उसका परिवार आदि की उपकथाएँ।

रंगभूमि की कथा को प्रेमचन्द ने दु:खान्त में परिवर्तित किया है। वह प्राय: पात्रों की मृत्यु, हत्या अथवा आत्महत्या द्वारा होता है। उपन्यास में इन्द्रदत्त की मृत्यु गोली लगने से होती है, विनय आत्महत्या करलेता है, सोफिया गंगा में डूब कर प्राण खो देती है, सूरदास अस्पताल में मर जाता है, और राजा महेन्द्र कुमार सिंह सूरदास की प्रस्तर प्रतिमा के नीचे दबकर प्राण खो देते हैं। इस प्रकार 'रंगभूमि' उपन्यास की कथा दुखान्त होती है।

## 5. अन्तर कथाएँ :-

कथानक की आधारशिला पांडेपुर में रखी गई है। काशी का घटनाक्रम उस में आकर जुड जाता है और दोनों कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। 'रंगभूमि' उपन्यास का आधार औद्योकीकरण है। औद्योगीकरण की आरम्भिक परिस्थितियों को प्रकट करने के लिए उपन्यासकार ने दो कथाओं की योजना प्रस्तुत की है। दोनों कथाएँ आपस में गुँथ गये हैं। उदयपुर रियासत से सम्बन्धित अनेक घटनाएँ अप्रासंगिक हो गई है। किन्तु, रानी जाह्नवी की विनय के प्रति महत्वाकांक्षा इस कथा का मूल स्रोत है। वह विनय को वीर, कर्मनिष्ठ, आत्म-त्यागी और समाज सेवक के रूप में देखना चाहती है। सोफिया के प्रति उसकी अनुराग-वृद्धि को रोकने तथा इस प्रेम को अशरीरी बनाने के लिए लेखक कुछ समय के लिए उसे मुख्य रंगभूमि से हटाकर जसवन्तनगर भेज देता है।

कथा-शिल्प की दृष्टि से ताहिर अली की कथा भी आलोच्य है। ताहिरअली के और उसके समस्त परिवार की कथा में उपन्यासकार का विशेष उद्‌देश्य है। इस के द्वारा मध्यम वर्गीय परिवार की

समस्याओं का चित्रण हुआ है। दस बीधे भूमि की रक्षा-हित की गई स्वार्थमूलक व्यक्ति परक लडाई न होकर, भारतीय ग्रामीण जीवन तथा निम्न-मध्य वर्ग के अधिकारों की लडाई बन जाती है।

**6. दोष :-**

वस्तु-शिल्प की दृष्टि से 'रंगभूमि' के कथाक्रम में कुछ दोष भी आ ही गये हैं। पहला दोष है कि उपन्यासकार बीच-बीच में आकर बार-बार टीका-टिप्पणी करने लगता है। फलत: कथाकीगति मंद पड जाती है। दूसरा दोष है - कथाक्रम में कुछ घटनाओं का आकस्मिक, अस्वाभाविक एवं अप्रासंगिक रूप में समावेश कई जगह अपने आदर्शों के लिए उपन्यासकार प्रेमचन्द ने कथा को तोडा है। कथानक में उक्त दोष होते हुए थी। 'रंगभूमि' उपन्यास तत्कालीन संपूर्ण समाज को उपन्यासकार अपने कथानक के भीतर समेटे हुए हैं। 'रंगभूमि' में भारतीय समाज की सम्पूर्ण को गाथाबद्ध करने का प्रयास हुआ है।

**7. निष्कर्ष :-**

'रंगभूमि' उपन्यास में उपन्यासकार का व्यापक दृष्टिकोण और कथा की सुदृढ़ पकड दोनों ही सुन्दर बडे हैं। अनेक आख्यानों एवं घटनाओं का विस्तार में चित्रण हुआ है। मानव जीवन के अखण्ड चित्र को चित्रित करने के महान उद्देश्य पर 'रंगभूमि' की रचना हुई है।

**Lesson Writer**

*ऐनम्पूडि कविता एम.ए.*

**प्रश्न :-**

## 3. 'रंगभूमि' में व्यक्त कथा-शिल्प तथा कला-सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. उद्योग और व्यवसाय की समस्या
3. धार्मिक समस्या
4. देशी रियासतों की समस्या
5. राजनैतिक समस्या
6. कथानक
7. सूरदास - नायक
8. विनय - सोफिया

### 1. प्रस्तावना :-

प्रेमचन्द ने स्वयं लिखा है जीवन एक 'क्रीडास्थल' है। इसी कारण उपन्यास का शीर्षक 'रंगभूमि' रखा गया है। धर्म को सदा महान माननेवाला सूरदास इस रंगभूमि का प्रधान खिलाडी है। धर्म के क्षेत्र में कोई उसके साथ विश्वास-घात करे बदले में स्वयं विश्वासघात करना वह नहीं चाहता। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, में संपूर्ण आस्था रखते हुए वह विश्वास रखता है। कि पराजित व्यक्ति को सन्तुलन नहीं खोना चाहिए। निराशा और कुण्ठ सूरदास जैसे खिलाडी की नीति के विरुद्ध है। वास्तव में प्रेमचन्द का दृष्टिकोण यही है। मनुष्य सच्चामर्गा एवं कीर्ति का मार्ग ग्रहण करते हुए जीवन में दिशोन्मुख हो। सूरदास गीता के उस सिद्धान्त का रूप हैं, जिसे हम निष्काम कर्म और स्थितप्रज्ञता से अभिहित करते हैं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

सूरदास पर उस समय का भी प्रभाव है। उस पर गाँधी वाद का भी प्रभाव है। गाँधीजी के साधन की पवित्रता, अक्रोध अपरिग्रह में विश्वास हमें सूरदास में मिलते हैं। रंगभूमि उपन्यास का मूल उद्देश्य है कि मानव को निष्काम कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए और उसके कर्म-कर्तव्य की भावना पर आधारित होने चाहिए। किसी भी व्यक्ति को आत्म-सम्मान पर जीवन की बलि देने होगी। प्रेमचन्द ने 'गोदान' में भी यही सत्य होरी के माध्यम से व्यक्त किया है।

## 2. उद्योग और व्यवसाय की समस्या :-

'रंगभूमि' में व्यवसाय की समस्या पर विचार किया गया है। प्रेमचन्द ने पूँजीवाद को अपना लक्ष्य बनाया। पूँजीवाद मनुष्य के जीवन को कुत्सित बना देता है और उसमें बुर्जुआ मनोवृत्ति भर देता है। प्रेमचन्द को विशेष रुचि नहीं था। वे औद्योगी करण में विश्वास नहीं करते। वे एक ओर प्रगतिशील विश्वासों को अपनाते हैं और दूसरी ओर परिवर्तनशीलता पर अनास्या प्रकट करते हैं। उन्होंने औद्योकिक जीवन और सरल जीवन को तुलनात्मक दृष्टि से परख कर सरल जीवन को ही अधिक श्रेयस्कर और भारतीय व्यवस्था में वौछनीय स्वीकार किया है।

## 3. धार्मिक समस्या :-

उपन्यासकार प्रेमचन्द ने धार्मिकता को भी 'रंगभूमि' में समस्या के रूप में चित्रित किया है। जिस प्रकार प्रसाद जीने अपने नाटकों में राष्ट्रीय उत्साह अभिव्यक्त किया है, उसी प्रकार प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में धार्मिक उत्साह प्रकट किया है। मिसेज सेवक की धार्मिक असहिष्णुता का विरोध सोफिया और प्रभु सेवक दोनों करते हैं। सोफिया घुटनाशील वातावरण से निकल कर स्वतन्त्र रूप से जीवन-यापन करना चाहती है। प्रेमचन्द की दृष्टि में धार्मिक बन्धनों से मानवतावाद अधिक महत्त्वपूर्ण है। मानव-प्रेम की तुलना में धार्मिक संकीर्णता पर प्रहार करते हुए कहते है कि आसमान की बादशाहत में अमीरों का कोई हिस्सा नहीं।

## 4. देशी रियासतों की समस्या :-

इस समस्या पर प्रेमचन्द ने अपने राष्ट्रीय विचार प्रकट किये हैं। जसवन्तनगर में रहते हुए विनयसिंह का जीवन तत्कालीन देशी रियासतों की वास्तविक स्थिति का सजीव चित्रण है। रियासतों का जीवन कितना प्रतिक्रियावादी हो गया था; अन्याय और शोषण किस सीमा तक चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था और जीवन निर्वाह कितना कठिन हो गया था, जसवन्तनगर की कथा इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

## 5. राजनैतिक समस्या :-

मि. क्लार्क, महेन्द्र सिंह और गवर्नर और गवर्नर भारत के राजनैतिक पक्ष को ग्रहण करते हैं। सेवक पक्ष में दो वर्ग हैं - (1) इन्द्रसिंह और विनयसिंह का है, और (2) कुँवर भरतसिंह का है, जो जायदाद-प्रेमी होने के कारण राजनीति में भाग लेना नहीं चाहते। स्वायत्त शासन पर राजा महेन्द्रसिह के माध्यम से प्रेमचन्द ने तीखा व्यंग्य किया है और सम्मिलित परिवार प्रथा पर पर ताहिर अली और

उसके परिवार के माध्यम से प्रहार किया है। उन को सम्मिलित पारिवारिक व्यवस्था का विधान विशृंखलित-सा दृष्टिगोचर होता था।

बीच-बीच में सोफिया या इन्दु के माध्यम से प्रेमचन्द ने नारी समस्या पर भी प्रकाश डाला है कि निराश्रित नारी जीवन-निर्वाह कैसा करे! अन्त में राष्ट्रीय सेवा की समस्या को भी उन्होंने उठाने का प्रयत्न किया है। उपन्यासकार का विश्वास है कि मानव को अपनी निजी कामनाओं एवं आकांक्षाओं से ऊपर उठ कर राष्ट्र-सेवा में संलग्न हो। जाति को, समाज को और देश को प्रेमचन्द ने इन सब का लक्ष्य बनाया है विनयसिंह की माता, जाह्नवी को। भारत को कैसी माताएँ और पुत्र चाहिए यह उनके व्यक्तित्व से स्पष्ट होता है। स्वदेश के लिए एक सन्त तथा संन्यासी की आवश्यकता है, जो देश के लिए न्योछावर हो जाए।

रंगभूमि उपन्यास में वर्णित समस्याओं को प्रेमचन्द ने परिवारों की कथा की सीमाओं में ही बाँधा है। व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में मानकर समाज के प्रति उसका उत्तरदायित्व अवश्य स्वीकार करते हैं। ताहिर अली जॉनसेवक, कुँवर भरतसिंह और राजा महेन्द्रसिंह के परिवारों की कथाएँ वैसे गुम्फित है। विस्तार पूर्वक कथोपकथनों का प्रचलन हुआ है।

## 6. कथानक :-

'रंगभूमि' उपन्यास का कथानक उद्योग, व्यवसाय और राजनीति से सम्बन्धित है और यह कथानक प्रेमचन्द की विकसित कला का द्योतक है। कथानक यथार्थवादी होते हुए आशावादी रहा है। हारने परभी, सूरदास की पराजय के पीछे उसकी आत्मशक्ति छिपी हुई है। उसकी मृत्यु के पश्चात भी प्रेमचन्द ने बताया कि जनसत्तावादियों की संगठन शक्ति अधिक शक्तिशाली है।

'रंगभूमि' गाँधीवादी जीवन-दर्शन से ओतप्रोत है। इसका प्रणयन असहयोग आन्दोलन के उपरान्त हुआ। उपन्यास का मूल उद्देश्य पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग पर आधारित प्राचीन सामन्ती ग्रत्मीण व्यवस्था और प्रतिद्वन्द्विता एवं व्यावसायिक वृत्ति पर स्थित नवीन पूँजीवादी सभ्यता के बीच मौलिक संघर्ष के साथ औद्योगीकरण का विरोध करना है। प्रगतिशील चेतना के अनुसार प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया है व्यक्ति के स्वत्व को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपहृत करने का अधिकार किसी भी शासन व्यवस्था को नहीं है। उन्होंने सूरदास को निजी विचारों का प्रतिनिधि तथा आदर्शों का प्रतीक बनाकर उसके मुख से औद्योगीकरण के दूषणों का विरोध किया है। सूरदास की प्रतिभा गाँधीवादी आदर्श के साँचे में ढ़ली हुई है।

**7. सूरदास - नायक :-**

सूरदास गाँधीजी के सिद्धान्तों का मूर्तमान रूप है। गाँव में रहते हुए उसके चरित्र को प्रस्फुटित होता है, एक जमीन का मामला है और दूसरा सुभागी का मामला, दोनों मामलों में वह दृढ़ता के साथ काम करता है। उसकी धारण है कि किसी न किसी दिन सच्चाई की जीत होगी। गाँधीजी ने कभी भी विपक्षी के हृदय में मालिन्य उत्पन्न होने नहीं दिया। इस प्रकार का व्यवहार सूरदास भैरों के साथ करता है। भैरों की दूकान जलते देख कर, जो कुछ भी वह कर सकता था करता है और भैरों जैसे उद्‌दण्ड व्यक्ति के हृदय में भी परिवर्तन ला देता है। सूरदास का कथन है – ''सच्चेखिलाडी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट-पर-चोट खाते हैं और धक्के - पर धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं।'' मृत्यु शय्या पर पडा हुआ वह कहता है – ''हमारा दम उखड जाता है, हम हाँफने लगते हैं और खिलाडियों को मिला कर नहीं खेलते, आपस में झगडते हैं ...... कोई किसी को नहीं मानता।'' गाँव वालों में ऐक्य, संगठन अथवा परस्पर सहयोग की भावना के अभाव ने पूँजीवादी शक्तियों को उस पर विजयी होने का अवसर दिया है। यह स्थूल रूप से सूरदास की पराजय होने परभी उसकी नैतिक विजय है।

**8. विनय - सोफिया :-**

गाँधी वाद का प्रभाव विनयसिंह पर भी है। वह धन के प्रति कोई मोह प्रकट नहीं करता। उसका कथन है – हम जायदाद के स्वामी बन कर रहेंगे, उसके दास बनकर नहीं। गाँधी जी के आदर्शों के अनुसार ही वह वर्ग- संघर्ष के स्थान पर समाज में वर्ग-समन्वय की स्थापना करना चाहता है। सेवाभाव, त्याग, देश भक्ति आदि उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सोफिया मूल रूप से विनय का नारी संस्करण है। सोफिया के चरित्र के दो रूप हैं – (1) प्रेमिका और (2) क्रान्तिकारिणी। विनय के चरित्र के भी दो रूप देख जाते हैं – (1) सेवा तथा त्याग और (2) प्रेमी।

विनय-सोफिया के पारस्परिक प्रेम से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द को प्रेम की नींव त्याग, बलिदान एवं सेवा-भाव पर स्थापित करना अभीष्ट है। उनके उपन्यासों में प्राय: प्रेम का परिणाम विवाह नहीं होता। इसीलिए सोफिया और विनय आदर्श प्रेम की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील रहते हैं। सामाजिक बन्धनों की समस्या का समाधान हो जाने पर भी प्रेमचन्द कीदृष्टि में उनका विवाह के लिए सहमत हो जाना ही उनकी असफलता का सूचक है। अन्त में दोनों का अपना व्यक्तित्व न रह कर प्रेमचन्द द्वारा नियन्त्रित व्यक्तित्व ही प्रतीत होता है।

**Lesson Writer**

*ऐनम्पूडि कविता एम.ए.*

**प्रश्न :-**

## 4. 'रंगभूमि' में व्यक्त तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. स्वाधीनता संग्राम का युग
3. संस्कार युक्त सामाजिक वातावरण
4. क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लंघन
5. नगर तथा ग्रामीण वातावरण
6. उपसंहार

### 1. प्रस्तावना :-

प्रेमचन्द कृत 'रंगभूमि' उपन्यास में देश-काल एवं वातावरण का चित्रण विशेष महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासकार ने कथानक के अनुसार वातावरण का सृजन किया है। तत्कालीन समाज के गुण-दोषों को स्पष्ट करने के लिए प्रेमचन्द ने तदनुकूल सामाजिक विचारधारा और परिप्रेक्ष्यानुकूल वातावरण पर कथा को प्रतिष्ठित किया है। फलत: 'रंगभूमि' तत्कालीन भारतीय जीवन का प्रामाणिक स्तर बन गया है। व्यक्ति, परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और इतिहास के दर्शन होते हैं।

### 2. स्वाधीनता संग्राम का युग :-

'रंगभूमि' का समाज भारत के स्वाधीनता स्वाधीनता संग्राम के युग का समाज है। रंगभूमि में भारतीय जीवन-संघर्ष का विवरण उपलब्ध होता है। एक ओर पूँजीवाद के बढ़ते हुए प्रभाव का चित्रण है तो दूसरी ओर पूँवादी से लडते हुए स्वाधीनता की आकांक्षा रखनेवाले भारतीय समाज का यथार्थ रूप अंकित हुआ है। सन् 1900 से 1923 के बीच हुए कृषक आन्दोलन के राजनैतिक इतिहास की झलक रंगभूमि में प्रतिबिंबित है। उपन्यास में सामाजिक जीवन के अनेक पहलू चित्रित हुए हैं।

### 3. संस्कार युक्त सामाजिक वातावरण :-

रंगभूमि के सोफिया, सुभागी, विनय, सूरदास आदि पात्रों में धर्म और अन्धविश्वास के प्रति विरोध है तथ राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। गाँव, शहर या कस्बे, जहाँ का भी चित्रण

प्रेमचन्द ने किया है, वहाँ का समूचा जीवन उनके उपन्यासों में स्पष्ट दिखाई देता है। भैरों, बजरंगी और जगधर का पांडेपुर, जानसेवक, कुँवर भरतसिंह और राजा महेन्द्र कुमार सिंह का बनारस तथा सरकारी हुक्कामों की उदयपुर रियासत सभी अपने सम्पूर्ण भूगोल और इतिहास के साथ 'रंगभूमि' के रंगक्षेत्र में उपस्थित हैं। जो स्वाभाविक, सहज रूप से प्रेमचन्द के उपन्यासों का मुख्य आकर्षण बिन्दु है। प्रेमचन्द के उपन्यासों का मुख्य आकर्षण बिन्दु है। प्रेमचन्द स्वयं गाँव के होने के कारण वे उस सामाजिक वातावरण से पूर्णतया परिचित थे। गाँव की धरती सर्वत्र और सदैव उनकी दृष्टि में भारत-भाग्य-विधात्री है।

## 4. क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लंघन :-

प्रेमचन्द के साहित्य में स्थानीय यथार्थवादी चित्रण से प्रारम्भ होकर अन्तर्देशीय बन जाती है। पांडेपुर का वातावरण भारत के प्रत्येक गाँव के वातावरण का दृश्य प्रस्तुत है। देश-प्रदेश, बोल चाल की भाषा, वेष-भूषा, कर्मकांड, दिनचर्या, भाव-विचार आदि सब मिलकर भारतीय सांस्कृतिक स्वरूप है।

वातावरण -चित्रण में प्रेमचन्द ने क्षेत्रीयता को अन्तर्देशीय बनाया है। काल-सीमा को उन्होंने इतिहास के पृष्ठ की भाँति कालातीत बना दिया है। उनके उपन्यासों में समय का थीम 'मिथ' के रूप में आया है। स्वाधीनता के संघर्ष-काल के बीच का समय है वह। प्रेमचन्द ने अपने समय के मनुष्य को अपने उपन्यासों में प्रतिबिम्बित किया है। वह मनुष्य या व्यक्ति भविष्य के मानव का आधार बना है। 'रंगभूमि' के सूरदास, सोफिया, प्रभुसेवक और जॉनसेवक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी शाश्वत मानव-प्रकृति को लेकर सर्वकालीन बन गये।

## 5. नगर तथा ग्रामीण वातावरण :-

देशकाल तथा वातावरण पर विचार करने पर स्पष्ट होता है। कि प्रेमचन्द के उपन्यास अनेक रूपों में परस्पर सम्बद्ध हैं। भारतीय ग्रामीण एवं नागरिक समाज का चित्रांकन हुआ है। एक ओर किसानों की समस्याएँ हैं और दूसरी ओर शासन और शासित हैं, शोषक और शोषित हैं। समाज में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का नारा है। सूरदास विकेन्द्रीकरण के अदर्श की रक्षा के लिए, सामाजिक सुविधाओं के लिए तथा भूमि के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करता रहता है। पूँजीपतियों के उद्योग-धन्धों से गाँवों की आर्थिक स्थिति के दुर्बल हो जाने का वैज्ञानिक तर्क वर्ग-संघर्ष का रूप धारण करता हैं। 'रंगभूमि' तत्कालीन सामाजिक-क्रिया व्यवहारों का दर्पण माना जाता है।

वातावरण की सृष्टि में प्रेमचन्द ने प्राकृतिक स्वरूप का भी सुन्दर चित्रण किया है। सूरदास के भीख माँगते समय प्रकृति का सजीव रूप का चित्रण हुआ है - ''कार्तिक का महीना था। वायु में सुखद

शीलता आ गई थी। संध्या हो चुकी थी। सूरदास अपनी जगह पर मूर्तिवान बैठा हुआ किसी इक्के या बग्धी के आशाप्रद शब्द पर कान लगाये था।''

विनय को बचाने के लिए सोफिया के आग में कूदने के लिए पहले से प्रेरक वातावरण तैयार किया जाता है - ''आत्मसमर्पण और आकर्षण का पवित्र सन्देश विराट आकाश में, नीरव गगन में और सोफिया के अशान्त हृदय में गूँजने लगा। उसके रोम-रोम में भी ध्वनि, दीपक से ज्योति के समान निकालने लगी।''

## 6. उपसंहार :-

सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द सहजीवन वातावरण के सफल चित्रकार है। ग्रामीण वातावरण से जूझते हुए कृषक, आन्दोलनों की आँधी में जन समूह का प्रबल आवेग आदि का सजीव वातावरण प्रस्तुत करते हैं जिस से उनके उपन्यास सहज ही आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं।

**Lesson Writer**

*ऐनम्पूडि कविता एम.ए.*

**प्रश्न :-**

**5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'रंगभूमि' उपन्यास में दर्शित समस्याओं का मूल्यांकन कीजिए।**

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. उद्योग-प्रसार एवं ग्रामीण जीवन
3. पूँजीवाद से उत्पन्न बुराइयों का उल्लेख
4. तत्कालीन रियासतों की दशा
5. उपसंहार

**1. प्रस्तावना :-**

प्रेमचन्द के उपन्यासों की लोक प्रियता का प्रधान कारण उनकी समस्या-मूलकता ही है उपन्यास-कला के तत्त्वों की दृष्टि से भी वे गणनीय है। 'समस्या-निरूपण' की तुलना में 'तत्त्व-निरूपण' का महत्त्व अनिवार्य होने पर भी गोण माना जाता है। प्रेमचन्द अपने उपन्यासों में समस्या-निरूपण के साथ उस का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। 'रंगभूमि' समस्या मूलक उपन्यास है। इस उपन्यास में मुख्यात: दो समस्याओं का विस्तृत निरूपण हुआ है - (1) औद्योगीकरण की समस्या और (2) भारतीय रियासतों की समस्या इन समस्याओं के साथ-साथ 'रंगभूमि' कालीन ग्राम्प और नागरिक समाज के साथ अनेक उपसमस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं- जैसे - राष्ट्रीय एवं राज नीतिक समस्याएँ सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएँ आदि।

**2. उद्योग-प्रसार एवं ग्रामीण जीवन :-**

व्यापारियों तथा उद्योग पतियों के निहित स्वार्थों को आधुनिक महाजनों द्वारा सर्वाधिक प्रोत्साहन मिला है, जिस से हमारे देश की प्राचीन-ग्राम्य व्यवस्था छार-छार हो गई है। प्रतियोगिता, लोभ और स्वार्थ पर आधारित औद्योगिकरण प्रधान समस्या बन कर मौलिक संघर्ष का कार मौलिक संघर्ष का कारण सिद्ध हुआ है। 'रंगभूमि' उपन्यास इस मौलिक संघर्ष का 'महाभारत' है। पांडेपुर औद्योगिक शोषण का केन्द्र है। यह पुरानी ग्रामीण व्यवस्था और नई महाजनी शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष का केन्द्र है। पुरानी ग्राम्य-व्यवस्था पर पडा हुआ पूँजीवादी सभ्यता का तीव्र प्रभाव उपन्यास की वस्तु का प्रेरक-

स्रोत है। औद्योगीकरण के कारण पुरानी सभ्यता के मूल्य टूटने लगे साथ ही गाँव के सामाजिक तथा आर्थिक सूत्र टूटने लगे। जमीन्दार और किसान के बीच का सम्पर्क अब पूँजीपति और मजदूर का सम्पर्क बनने वाला था।

औद्योगिक व्यवस्था का प्रतिनिधि जॉन सेवक है। वह पूँजीपतियों की हर नस से परिचित है। उसके पास पहुँच है, सिफारिशें हैं, चाप लूसी है, कपट है और औद्योगीकरण की दलीलें हैं। समय के रुख को वह भली - भाँति पहचानता है। धन के बलपर ऐसा जाल बनाता है कि जनता, शासन-तन्त्र और नेता सब उस में उलझ जाते हैं। बिना किसी के दु:ख-दर्द का ख्याल रखते हुए पूँजी पति का एक मात्र लक्ष्य धनोपार्जन होता है। ताहिरअली की धर्म भीरुता को त्रस्त करने के लिए वह बडे तार्किक विधान से वार्तालाप करता है।

पांडेपुर के किसानों पर कारखाने के फायदे का रंग चढ़ जाता है। बजरंगी को दूध, मलाई, मक्खन और उपले बेचने की सुविधा, ठाकुरदीन को पान की चौगुनी बिक्रीकी सुविधा, जगधर को निश्शुल्क पढ़ाई के लिए मदरसे की सुविधा, नायकराम के तीर्थ-यात्रियों के लिए धर्म शाला की सुविधा, का बखान कर जॉनसेवक कारखाने से सब का लाभ-ही-लाभ दिखाता है।

औद्योगीकरण का प्रभाव दिखाने में लेखक ने जॉन सेवक के कथनों के द्वारा दोहरी नीति से कामलिया है। (1) पूँजीवादी सभ्यता किस प्रकार राव-राज्यों से लेकर सामान्य जनता तक प्रलोभन पैदा कर रही है और (2) पूँजीपति कितने चातुर्य से सारे समाज को धोका देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। इस प्रकार उपन्यास में औद्योगीकरण के विरुद्ध व्यापक पृष्ठभूमि दिखाई देती है।

### 3. पूँजीवाद से उत्पन्न बुराइयों का उल्लेख :-

सूरदास की कथा गाँवों के औद्योकीकरण के विरुद्ध एक चुनौती है। मुनाफा और प्रतियोगिता पर आधारित औद्योगिक सभ्यता से पारस्परिकता पर आधारित भारतीय ग्राम्य-सभ्यता की टक्कर होती है। पहली का प्रतिनिधि जॉन सेवक है और दूसरी का सूरदास। सूरदास चट्टान की तरह दृढ़ है। वह किसी की मदद पर निर्भर न होकर अपने आत्मबल पर गाँव में सिगरेट का कारखाना खुलने का असुविधाओं के बारे में समझाता है - ''देहात के किसान अपना काम छोड कर मजदूरी के लालच में दौडेंगे, वहाँ बुरी-बुरी बातें सीखेंगे और अपने बुरे आचरण अपने गाँव में फैलाएँगे।' देहात की लडकियाँ, बहुएँ मजदूरी करने आएँगी और यहाँ पैसे के लोभ में अपना धरम बिगाडेंगी।

इस प्रकार प्रेमचन्द औद्योगीकरण के दुष्परिणामों का बीमत्स चित्र प्रस्तुत करते हैं। अपनी पुरानी सामाजिक व्यवस्था के प्रति अनुराग है। औद्योगीकरण को वे मानव-मूल्यों के गौरव को नष्ट करनेवाला मानते हैं। एक प्रकार से 'रंगभूमि' देहाती - जीवन के नाश की कहानी है। उपन्यासकार ने इस में ग्रामीणों की व्यापक दरिद्रता तथा औद्योगिक क्षेत्रों की केन्द्रित पीडा का विस्तार पूर्वक विवरण प्रस्तुत किया है।

4. **तत्कालीन रियासतों की दशा :-**

'रंगभूमि' मैं इस समस्या का सूत्रपात उदयपुर रियासत में जसवंतनगर से होता है। भारतीय रियासतें ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंटो की कठपुतली बनकर जी रही थीं। मुख्य राजा- महाराजा शासक नहीं थे, वरन् वे अंग्रेजी रेजिडेंट थे। दोहरे-तेहरे आतंक और क्रूरता के दमन-चक्र में फँसी हुई प्रजा का दम घुट-घुटकर पिस रहा था।

कैदियों को मुक्त कराने के उद्देश्य से विनय जब उदयपुर के महाराज से मिलता है, तो महाराज को धरती खिसकती हुई नजर आती है। उस दशा पर विनय सोचता है - ''इतना नैतिक पतन, इतनी कायरता, यों राज्य करने से डूब मरना अच्छा है।''

क्लार्क उदयपुर का रेजीडेंट है। रियासत पर अपना अधिकार बताते हुए वह सोफिया से कहता है, ''उसका अधिकार सर्वत्र, यहाँ तक कि राजा के महल के अन्दर भी होता है।'' उस समय देशी रियासतों में शासक और शासित-सम्बन्ध शोषक और शोषित से अधिक कुछ भी नहीं थे।

देशी रियासतों का न कोई कानून था, न न्याय, न न्याय, न नैतिकता, न मर्यादा। विलासिता का नग्न नृत्य था, घूस और रिश्वतखोरी थी, जो नशीले बादशाह को प्रसन्न करने का साधन थी।

'रंगभूमि' उपन्यास में शासन की निरंकुशता, रियासतों की पंगुता, अराजकता, अव्यवस्था, अन्याय तथा भ्रष्टाचार का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

5. **उपसंहार :-**

राजनीतिक आयाम को छूते हुए सामाजिक स्थिति का सही विवरण प्रस्तुत करके 'रंगभूमि' में प्रस्तुत समस्याएँ जन जागरण का संदेश देती हैं। विधान-सभाओं की निष्क्रियता, नगरपालिकाओं की अधिकारहीनता, न्यायालयों का भ्रष्टाचार, पुलिस और जेल अधिकारियों का भ्रष्टाचार-इन समस्याओं को तीखा बना देता है और इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, भारतीय इतिहास सजीव होकर हमारी आँखों के सामने उपस्थित हो जाता है। गाँवों से लेकर नगरों तक की पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याएँ 'रंगभूमि' उपन्यास की मुख्य विषय-वस्तु बन गई है।

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

**प्रश्न :-**

**6. 'रंगभूमि' उपन्यास में व्यक्त 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' का मूल्यांकन कीजिए।**

**अथवा**

**'रंगभूमि' उपन्यास में गाँधी वादी विचार-दर्शन पर विचार कीजिए।**

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. यथार्थवादी कृति
3. प्रधान समस्या
4. आदर्शवाद
5. सुधारवादी दृष्टिकोण
6. उपसंहार

**1. प्रस्तावना :-**

गाँधीवादी विचारधारा की गरिमा को प्रकट करना 'रंगभूमि' उपन्यास का आदर्श उद्देश्य है। प्राय: इसी कारण उपन्यास के अन्त में नैतिक विजय निहित की गई है। गाँधी वादी आदर्श के प्रति श्रद्ध- आस्ता का मर्मस्पर्शी समर्पण व्यक्त होता है जिस में शाश्वत विजय की अनन्त आशा और असीम साहस और अनन्त आत्मबल है।

**2. यथार्थवादी कृति :-**

रंगभूमि उपन्यास के कथानक में वातावरण-निर्माण, चरित्र संयोजन तथा समस्याओं के निरूपण में यथार्थवाद परिलक्षित होता है। रंगभूमि का प्रधान विषय सामाजिक है। वह सामाजिक जीवन ग्राम और नगर दोनों में बिंधा हुआ है। हिन्दू , मुसलमान और ईसाई धर्मों से भी जुडा हुआ है। किशोर, युवक, वृद्ध तीनों अवस्थाओं से और स्त्री-पुरुषदोनों के जीवन की वास्तविकता का उद्घाटन करने में जुरे हुए हैं। भारतीय ग्राम्य जीवन की यथार्थ झलक पांडेपुर, जसवंतनगर की कथा में मिलती है। घूल- धक्कड, टूटी-फूटी सडकें, चुहल-ठठोली, ईर्ष्या-द्वेष, झगडे-टण्टे, भजन-कीर्तन, जादू-टोने, तन्त्र-मन्त्र,

अन्धविश्वास, सरलता-सन्तोष, लूट-खसोट, मारपीट-इन सब को मिलाकर निर्मित होने वाला जीवन सूर की झोंपडी, ठाकुरदीन का मन्दिर, भैरों की ताडी की दूलान, बजरंगी की गाय-भैंस, जगधर की डाह और सुभागी की कलह, भीलनी की जडी है और गंगा की पवित्रता है, बैल हैं, घंटियों की खनक है, खली और भूसे की महक है और आलों में सिकी बाटियों की सोंधी सुगन्ध, ऊबड-खाबड पगडंडियाँ और लुटेरों के अड्डे हैं।

काशी, उदयपुर और जसवन्तनगर के माध्यम से प्रेमचन्दने 'रंगभूमि' में उद्योग पति,राजा-महाराजा, बडे-बडे शानदार महल, घन और मान-सम्पन्न भूख, निर्मम स्वार्थ,थोथे तर्क, क्रूर शासक, लालची व्यापारी जो क्रूर, जटिल, छल-पकट, धोखा, आदि-आदि का चित्रण हुआ है। ये सब मिलकर जोंक की तरह गाँव की जनता से चिपट कर उनका रक्त चूसते हैं, विकास का बहाना कर विनाश के बीज बोते हैं और देश - द्रोह को देशभक्ति की संज्ञा देते हैं।

**3. प्रधान समस्या :-**

रंगभूमि की प्रधान समस्या औद्योगीकरण है। प्रेमचन्द यह समस्या प्रस्तुत कर सिद्ध किया कि औद्योगीकरण राष्ट्र-हितैषी नहीं है, वरन् व्यक्तिपरक स्वार्थीकरण है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है, समाजगत मानवीय गरिमा नहीं। व्यापारियों की चालें, दाँव-पेच, चाटुकारिता, नैतिक पतन और वाक्पटुता का पूर्णतथा विश्लेषण किया गया है। इस प्रधान समस्या के साथ-साथ देशी रियासतों की समस्या को भी उपन्यासकार ने उठाया  है, जिस में राजाओं की पंगुता, कायरता, वैभव-विलास और कुटिलता को प्रकट कर उनके मुखों पर चढ़े हुए झूठी देश भक्ति एवं प्रजा-वत्सलता के चेहरे नोचकर जनता के सामने उनका वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया है। उपन्यास में ताहिर अली की कथा तीसरी पृष्ठ भूमि है, जिसके द्वारा मध्यवर्ग की गरीबी, घुटन, शोषण और सम्मिलित परिवार के झगडों का यथार्थ चित्र भी प्रस्तुत हुआ है।

**4. आदर्शवाद :-**

'रंगभूमि' उपन्यास में नई-नई कथाओं तथा पात्रों का संयोजन हुआ है। उपन्यासकार का उद्देश्य कथा-कहानी कहना मात्र नहीं है, वरन् मानव-जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करना है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने अपने मनोनीत आदर्शों तथा सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए स्थान-स्थान पर कथा को तोडा है, नए चरित्रों को जन्म दिया है और कुछ पात्रों के चरित्र के स्वाभाविक विकास की गति भी रोक दी है।

'रंगभूमि' का मूल कथानक हमारे देश में औद्योगीकरण के आरम्भ के साथ उत्पन्न हुई अनेक समस्याओं से सम्बद्ध है। प्रेमचन्द ने अपने आदर्शवाद को प्रधानता देकर ग्रामीण समाज की कठिनाइयों, इच्छाओं, आशंकाओं तथा नैतिक विचारों को 'रंगभूमि' में प्रकट किया है। जॉन सेवक के द्वारा औद्योगीकरण से समाज और देश के हित की हल्की-सी चर्चा करवाकर उसे चुप कर देते हैं, क्योंकि वह चर्चा उनके आदर्शवादी विचारों तथा उद्देश्य के प्रतिकूल पडती हैं। ताहिरअली और उसके समस्त परिवार की कथा उद्देश्यमूलक है। इस कथा के द्वारा प्रेमचन्द मध्यवर्गीय परिवार की प्रमुख समस्याओं तथा नैतिक मान्यताओं को चित्रित करते हैं।

### 5. सुधारवादी दृष्टिकोण :-

'रंगभूमि' उपन्यास में उपन्यासकार प्रेमचन्द का आधान्त सुधारवादी दृष्टिकोण रहा है। गाँधी वादी प्रभाव पूरे उपन्यास पर व्याप्त हुआ है। सूरदास गाँधीवादी विचारधारा का महान प्रतीक है। उसका समग्र जीवन गाँधीवादी आदर्श का व्यावहारिक रूप है। वह घृणा के बदले प्रेम, द्वेष के बदले सहानुभूति, हिंसा के बदले संतोष दिखा कर सब के हृदय जीत लेता है। भैरों में सद्वृत्तियाँ जाग उठती हैं, उसके घर की कलह मिट जाती है। बजरंगी, नायकराम, जगधर सब के मन शुद्ध होजाते हैं। राजा महेन्द्र कुमार सिंह और जॉनसेवक तक आत्म-ग्लानि का अनुभव करते हैं। हृदय-परिवर्तन का यह आदर्श गाँधीवादी आदर्श ही है। विनज की पथभ्रष्टता सोफिया के द्वारा परिशोधित होती है। वह अपने त्याग और अभिनन्दनीय कार्यों से रानी जाह्नवी का मन भी जीत लेती है। अतः सूरदास, सोफिया, विनय, प्रभुसेवक, इन्द्रदत्त और गांगुली की सर्जना प्रेमचन्द के आदर्शवादी दृष्टिकोण के पात्र हैं।

विनय और सोफिया आदर्श प्रेम के पात्र हैं। उनके प्रेम में कोई वासना नहीं, पवित्रता है; प्राप्ति की आतुरता नहीं, उत्सर्ग की उत्कण्ठ है। त्याग और सेवा-भाव प्रेम के विकास के सम्बल हैं। दोनों एक-दूसरे के लिए आत्मोत्सर्ग करके प्रेम के महान आदर्श की स्थापना करते हैं। वर्तमान युवकों के सामने प्रेमचन्द कर्मठता और लगन का आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं।

### 6. उपसंहार :-

'रंगभूमि' उपन्यास की नींव यथार्थ पर टिकी है और अन्त आदर्शवाद में परिवर्तित हुआ है। सारी विधाओं में 'रंगभूमि' उपन्यास आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद की सफल कृति है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

**प्रश्न :-**

**7. 'रंगभूमि' के 'सूरदास' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

सूरदास 'रंगभूमि' उपन्यास का नायक है। निर्भीक, घुन का पक्का, सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय, नि:स्पृह, शान्त, सेवा-त्याग परोपकारश्त आदि उसके लक्षण है। उसकी अन्तर्दृष्टि सदा खुली रहती है। वह क्षीण-काय है। मानवोचित दुर्बलताओं से समन्वित होते हुए भी वह अनुरागपूण हृदयी और सच्चे अर्थों में वैरागी है सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह का वह मूर्तमान रूप है। वह अभागों का शरणदाता, दीन-दुखियों का सहायक, शत्रु-मित्र का समदरशी एवं गीता के निष्कामकर्म योग का व्यावहारिक रूप है। इसी कारण उस के शत्रु और मित्र शबी उसकी साधुता और दार्शनिकता के कायल हैं।

सूरदास का एक-एक शब्द अनेक ग्रन्थों का समाहार है। उसमें प्रतिशोध की भावना नहीं, वैमनस्य नहीं। वह अपना खेल प्रदर्शित करने आया था और सच्चे एवं पवित्र हृदय से खेल कर चला गया। पत्र-पुष्पों से उसकी झपडी बनी है। सूरदास की भौतिक अपजय में भी आत्मिक विजय का गौरव है और सब से बडी विजय है कि उसके मृत्यु के फलस्वरूप जनसत्तावादियों की शक्ति अनुदिन संघटित होती जाती है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख़ मौला अली*

**प्रश्न :-**

## 8. प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का मूल्यांकन कीजिए।

### उत्तर-प्रेमचन्दयुगीन पृष्ठ-भूमि :-

श्री प्रेमचन्द की औपन्यासिक कला को उनकी युगीन पृष्ठभूमि में ही भली -भाँति समझा जा सकता है। युगीन परिवेश में ही उनके उपन्यास शिल्प का उदय और विकास हुआ है। अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से निस्सन्देह उन्हें उपन्यास रचना की प्रेरणा मिली, उससे वे असंदिग्ध रूप से युग-प्रवर्तक उपन्यासकार बन गये। अत: नाट्य-कला के क्षेत्र में जिस प्रकार श्री जयशंकर प्रसाद ने एक अभिनव दिशा एवं दृष्टि का पथ प्रशस्त किया, उसी प्रकार श्री प्रेमचन्दजी ने भी कथा - साहित्य को अभिनव प्राणों से स्पन्दित किया और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने युग-स्थापना का कार्य किया।

हिन्दी उपन्यास का वास्तविक स्वरूप श्री प्रेमचन्दजी से ही निकलकर आया। पूर्व-प्रेमचन्द उपन्यासों में केवल दगो प्रवृत्तियाँ विशिष्ट थीं- मनोरंजन और मनोरंजन के साथ-साथ सुधारवादी भावना। मनोरंजन में घटना-वैचित्र्य का प्राधान्य, था तो सुधार भावना में उपदेशपरकता का। ये उपन्यास भारत के परम्परागत कथा साहित्य से प्रभावित थे। भारत में कथा - साहित्य की एक अखण्ड धारा रही है, जिसके अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, पुराण, जैन-ग्रन्थ, जातक गाथाएँ, हितोपदेश, पंचतन्त्र, वैताल पंचविंशति आदि का उल्लेख किया जा सकता है। हिन्दी के पूर्व-प्रेमचन्द उपन्यास, पात्रों और उद्देश्यों में यथार्थ को प्रश्रय मिला हो। उपन्यास के पात्र, घटनायें सम्भावित एवं विश्वस्त हों। युग के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्दजी ने ही सर्वप्रथम इस, प्रकार के उपन्यासों का प्रणयन किया। उनके उपन्यासों में, जिस औपन्यासिक शिल्प के दर्शन हुए, उसका संक्षिप्त पश्चिम इस प्रकार है -

### 1. कथानक :-

प्रेमचन्दजी ने उपन्यास को जीवन का चित्रण माना है। प्रेमचन्दजी के सभी उपन्यासों का कथाधार मानव-जीवन है। जीवन जैसा दिखाई दे रहा है, उसके यथार्थ को लेकर प्रेमचन्द के उपन्यासों का कथा-पट तैयार किया गया है। उनके सामने की जीता-जागता युग उनके उपन्यासों में उतर आया है। एक प्रकार से उनके उपन्यासों का कथानक तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का इतिहास है। समाज की अनेक समस्यायें उनमें प्रस्तुत की गई हैं, राजनीति की समस्त गतिविधियों का चित्रण किया गया है। समाजों के अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों की ओर इंगित किया गया है, अर्थजर्जर शोषित वर्ग की करुण कथा सुनाई गई है, मध्यवर्गीय जीवन के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं।

कृषकों, जमींदारों, सरकारी अफसरों आदि से सम्बन्धित घटनायें कथानक में प्रस्तुत की गई है। प्रेमचन्दजी ने अपनी अनुभूति की व्यापकता के कारण जीवन के प्रत्येक पहलू और मानव के सभी वर्गों को अपने कथानक में स्थान दिया है। उनके कथानक जीवन के यथार्थ को ग्रहण करते हैं और अन्त में आदर्श की ओर उन्मुख हो जाते हैं। उनके कथानक मानव की इस धारा से सम्बद्ध है, कल्पना के गगन से नहीं। उनके कथानकों की घटनाएं तथा पात्र सभी चिरपरिचित से जान पड़ते हैं। सभी नियोजित घटनाएँ या तो जीवन में घट ही रडी हैं या घटित होने की पूर्ण सम्भावना है।

वस्तुत: प्रेमचन्द के उपन्यासों की कथा-वस्तु जीवन से सम्बद्ध है। उसमें यथार्थ है और स्वाभाविकता है। वह रोचक तथा कौतूहलपूर्ण है। अधिकाधिक कथा में उनके उपन्यासों की अवान्तर कथाओं का पर्यावसान होता है। संक्षेप में आज के बुद्धिवादी युग में जिस तर्कसंगत एवं स्वाभाविक कथानक की अपेक्षा है, प्रेमचन्द के उपन्यास उसके श्रेष्ठ निदर्शन हैं।

## 2. चरित्र - चित्रण या पात्र :-

प्रेमचन्दजी के उपन्यासों के पात्र इस विशुद्ध धरा-धाम के निवासी हैं, वे धरती-पुत्र हैं। मानवीय गुण-दोषों से वे युक्त हैं। उनके चेहरे चिरपरिचित से मालूम होते हैं। लगता है कि वे हमारे आस-पास मानव की इस ठोस धरा पर ही रहा रहे हैं। उनकी मनोदशा तथा उनके कार्यकलापों से हमारा तादात्म्य होता रहता है। अधिकांश पात्र ग्रामों के शोषित कृषक और पूँजीपतियों द्वारा त्रसित श्रमिक हैं। वस्तुत: उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के पात्रोंको अपने उपन्यासों में प्रतिष्ठित किया है। उनकी व्यापक सहानुभूति ने निर्धन-धनी किसी भी वर्ग के पात्र को उपन्यासों में स्थान पाने से नहीं रोका। जमींदार, मिल-मालिक, पूँजीपति, राजा, नवाब, अँग्रेज शासक, भारतीय शासक, भारत की स्वतन्त्रता के संघर्षकर्त्ता, गाँधीजी के अनुयायी, स्त्री-पुरुष, बच्चे सभी प्रकार के पात्र उनकी लेखनी से उतरकर उपन्यासों में स्थान पा गये हैं। वे सब वास्तविक जीवन जीते हैं। उनसे सम्बद्ध घटनाएँ भी यथार्थ का आँचल नहीं छोड़तीं। प्रेमचन्द की सहानुभूति विशेष रूप से दलित एवं शोषित वर्ग के प्रति रही है और शोषक वर्ग की उन्होंने उन्मुक्त हृदय से भर्त्सना की है, किन्तु वर्ग-संघर्ष से वे सर्वथा मुक्त रहे हैं। गाँधीजी के मत के अनुसार उन्होंने पाप से घृणा की है, पापी से नहीं। इस दृष्टि से उन्होंने जमींदारों, पूँजीपतियों, प्रभुता के उन्माद में प्रवृत्त शासकों के अत्याचारों का चित्रण तो किया है, किन्तु उसकी प्रतिक्रिया में वर्ग-संघर्ष नहीं होने दिया। आर्थिक दृष्टि से जर्जर पात्र उन्हें अधिक प्रिय रहे हैं। संक्षेप में प्रेमचन्द वास्तविक के शिल्पी हैं। अत: उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के पात्रों की अपने उपन्यासों की विस्तृत भूमि पर अवतारणा की है। वे व्यक्ति भी हैं और वर्ग प्रतिनिध भी। उनके चरित्रों का उद्घाटन सर्वथा मनोवैज्ञानिक एवं

स्वाभाविक है। स्वयं के क्रियाकलापों, दूसरे पात्रों द्वारा तथा स्वयं प्रेमचन्द की लेखनी द्वारा उन चरित्रों का चित्रण हुआ है जो सहज एवं बोधगम्य हैं। वस्तुत: चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यास औपन्यासिक शिल्प के स्वस्थ उदाहरण हैं।

**3. उद्देश्य :-**

प्रेमचन्द युग-जीवन की समस्याओं और उनके समाधानों को प्रस्तुत करना चाहते थे। उन्होंने यथार्थ के बीच से आदर्श को झाँककर देखा था। वे एक से एक अच्छे आदर्श स्थापित करना चाहते थे। अत: उनके सभी उपन्यास सोद्देश्य एवं साभिप्राय हैं। ऐसा साहित्य जिससे मानव का कल्याण न हो, उनकी दृष्टि में व्यर्थ था। उन्होंने केवल मनोरंजन के लिए अपने कथा-साहित्य का प्रणयन नहीं किया। वे वास्तविक युग-जीवन को अपने कथा-साहित्य में व्यक्त करने के पक्ष में रहे हैं, किन्तु जीवन के आदर्शों की स्थापना की दिशा में सदा जागरूक रहे हैं। उनके पात्र मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त तो रहे हैं, किन्तु अन्त में उनका हृदय परिवर्तन हुआ है और वे मानव-संस्कृति के उच्च आदर्शों की ओर उन्मुख हुए हैं। इस प्रकार मानव चरित्र की व्याख्या करने के साथ ही साथ जीवन के उच्च आदर्शों की स्थापना उनका परम उद्देश्य रहा है। अपने काव्य में मानव के शिवत्व का जो उद्देश्य महाकवि तुलसी की दृष्टि में रहा था, जन-कल्याण का वही पावन उद्देश्य प्रेमचन्द के उपन्यास में भी सप्राण है।

दासता पीड़ित राष्ट्र-मानव में अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए जो उद्वेलन रहा है, उसको वाणी देना प्रेमचन्द का उद्देश्य रहा है। राष्ट्रीय जीवन के सागर में आने वाली हल्की से हल्की तरंग को भी प्रेमचन्द के उपन्यासकार ने अपने कथा-साहित्य में स्थान दिया है। समाज के स्वरूप, राजनीतिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था और नैतिक परम्पराओं में बड़ी तेजी के साथ जो परिवर्तन आये हैं, उनको उन्होंने चित्रित किया है। प्रेमचन्द पहले उपन्यासकार हैं, जिन्होंने एक विस्तृत चित्रफलक पर अपने युग का सर्वांग सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत प्रेमचन्द ने युगीन जीवन के अनुरूप अपने साहित्य में उपयोगितावाद तथा सुधार- इन दो उद्देश्यों की पूर्ति की है। उक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में उन्होंने नीति एवं विवेक को साधन के रूप में अपनाया है।

अपने साहित्य-सृजन-विषयक उद्देश्य के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं लिखा है - साहित्य का सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि उसकी रचना केवल कला की पूर्ति के लिए की जाये। ......... पर कला के लिए कला का समय वह होता है, जब देश सम्पन्न और सुखी हो। जब हम देखते हैं कि मानव भाँति-भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बन्धनों में जकड़े हुए हैं, जिधर निगाह उठती है, दु:ख और दरिद्रता के

भीषण दृश्य दिखाई देते हैं, विपत्ति का करुण क्रन्दन सुनाई देता है, तो कैसे सम्भव है कि किसी विचारशील प्राणी का हृदय पिघल न उठे। यही कारण है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्वदेश के उद्धार का, सामाजिक जीवन में श्रेष्ठ आदर्शों की स्थापना का, आर्थिक विषमता के निवारण का और नैतिक मूल्यों को जीवन में ग्रहण करने का प्रमुख उद्देश्य रहा है, जिसकी पूर्ति के लिए उनकी सफल एवं सक्षम लेखनी सतत् प्रयत्नशील रही है। इस प्रकार महान् कथा-शिल्पी ने अपने कथा-साहित्य में अपने इस महान् उद्देश्य को पूरा करने की निरन्तर चेष्टा की है।

### 4. देश-काल एवं वातावरण :-

देश-काल का चित्रण किसी भी उपन्यास का ऐसा प्रमुख एवं अनिवार्य तत्व है, जिसकी अवहेलना किसी भी कथा-शिल्पी के लिए असम्भव है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में इस देश-काल का सजीव चित्रण हुआ है। उनके उपन्यास-साहित्य का समस्त कथा-सूत्र, घटनाएँ एवं पात्र देश-काल के रंगमंच पर उतरे हैं जो अत्यन्त स्वाभाविक एवं सजीव हैं। उनके उपन्यासों में उनके युग का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक जीवन चित्रित है। एक प्रकार से प्रेमचन्द-साहित्य अपने युग का विश्वस्त इतिवृत्त है। राष्ट्रीय चेतना से युक्त समस्त भारतीय जीवन उनके साहित्य में चित्रित है। भारतीय परिवर्तित सामाजिक जीवन भी उनके साहित्य में कम नहीं उभरा है। रूढ़ियों एवं गली-सड़ी परम्पराओं का व्यंग्यपूर्ण चित्रण भी उनके साहित्य में विद्यमान है तथा आर्थिक विषमताओं का सांगोपांग चित्रण है। संक्षेप में, देशकाल चित्रण के क्षेत्र में इस कथा-शिल्पी ने जिस कौशल की अभिव्यक्ति की है, वह हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है।

### 5. कथोपकथन :-

कथोपकथन उपन्यास का प्रमुख तत्व है। कथोपकथन से उपन्यास के शिथिल प्रवाह को प्राण मिलते हैं। परिसंवाद से उसमें नाटकीयता आती है। स्वयं बोलते हुए पात्र पाठकों को अधिक आकृष्ट करते हैं और कथा-वस्तु अपने आप आगे बढ़ती है। इससे पात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का भी उद्घाटन होता है, भाषा में गति आती है और कथनों के माध्यम से अनेक सूक्तियों की अवधारणा होती है, जिनमें चिरन्तन सत्य के दर्शन होते हैं।

श्री प्रेमचन्द के उपन्यासों में परिसंवाद का पूर्ण विकास है। उनके सभी पात्र परस्पर अकृत्रिम भाव से बातचीत करते हैं। निस्सन्देह उनके कथा साहित्य में परिसंवादों का स्वाभाविक विकास हुआ है। सभी पात्र अपने स्तर के अनुसार भाषा का प्रयोग करते हैं। निरक्षर, अशिक्षित पात्र सामान्य बोलचाल की भाषा

में बार्तालाप करते हैं। जबकि शिक्षित पात्रों की भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित हैं। कहीं-कहीं लम्बे कथन भी हैं, किन्तु वे कथा प्रसंग के अनुकूल हैं, जिससे प्रवाह शिथिल नहीं हो पाता और पाठक ऊबने नहीं पाते। उपन्यासों की कथा को इनसे गति मिलती है और उपन्यासकार को भी कुछ विश्राम मिल जाता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में कथोपकथन उन सभी गुणों से युक्त हैं, जिनकी उनसे अपेक्षा है। उनमें परस्पर संगति, स्वाभाविकता संक्षिप्तता, कथा-सूत्र को अग्रसर करने की क्षमता तथा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करने की पूरी-पूरी शक्ति हैं। हमारी सम्मति में वे परिसंवाद के कुशल शिल्पी हैं।

### 6. भाषा -शैली :-

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भाषा की दृष्टि से हिन्दी भाषा का परिनिष्ठित रूप अपनाया है। अशिक्षित पात्रों की भाषा में जहाँ स्थानीय तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग है, शिक्षित पात्रों की भाषा प्रयोग में कृत्रिमता कहीं भी नहीं हैं। बीच-बीच में सूक्तियों का प्रयोग किया है। कहावतों तथा मुहावरों से भाषा को व्यवहारिक रूप मिला है। उपमाओं का सफल प्रयोग किया है। अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण में भाषा को विशेष सफलता मिली है। वातावरण की सृष्टि भी भाषा के माध्यम से सजीव हुई है। शिक्षित पात्रों के कथनों एवं उपन्यासकार के अपने निजी विचारों में तत्सम प्रधान भाषा का प्रयोग हुआ है। इससे स्पष्ट है कि प्रेमचन्द की भाषा लोक व्यवहार की भाषा होते हुए भी साहित्यिक, सरल एवं बोधगम्य है। उसमें प्रवाह एवं कोमलता है। उन्होंने प्रसंगानुकूल उर्दू तथा अँग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है, किन्तु इससे भाषा स्तर को कोई व्याघात नहीं पहुँचा। वस्तुतः प्रेमचन्दजी की भाषा सर्वथा कथा-सूत्र के अनुकूल है।

**प्रश्न :-**

**9. प्रेमचन्द के कृतित्व एवं उपन्यासकार के रूप में उनका मूल्यांकन कीजिये।**

**उत्तर :-**

प्रेमचन्द ने अपनी साहित्य-साधना में यद्यपि गद्य-साहित्य की अनेक विधाओं को स्पर्श किया है, किन्तु वास्तव में वे कथा-शिल्पी ही हैं। कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में उनके कथा-शिल्प का विशेष उन्मेष जगा है। वे अपने इस क्षेत्र के एकमात्र सम्राट हैं। उनके कृतित्व का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

**1. सेवासदन :-**

प्रेमचन्द ने जीवनी-लेखकों के आधार पर श्री महावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा से 'सेवासदन' नामक उपन्यास हिन्दी में लिखा और तब से वे निरन्तर हिन्दी में लिखते चले गये। इसके पश्चात् उन्होंने 'रूठी रानी', 'वरदान' और 'प्रतिज्ञा' आदि उपन्यासों की रचना की। इन्हें 1900 ई. से 1906 ई. के बीच की रचनायें माना गया है। 'सेवासदन' उनकी तीसरी औपन्यासिक रचना है जिसे गोरखपुर में सन् 191 ई. में प्रकाशित किया गया। 'सेवासदन' का उर्दू रूप 'बाजर-हुस्न' लाहौर से सन् 1911 ई. के मध्य में दो किस्तों में प्रकाशित हुआ था।

'सेवासदन' को प्रेमचन्द के उपन्यासों और हिन्दी - उपन्यास-साहित्य में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस उपन्यास की मुख्य कथा सुमन की कथा है। उपन्यास की कथा में स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक घटनाओं की अधिकता है। कथा को एक सूत्र में संग्रहीत करने में उपन्यासकार पूर्णत: सफल रहा है। इसमें लगभग 56 पात्र हैं, जिनमें 39 पुरुष करने में उपन्यासकार पूर्णत: सफल रहा है। इसमें लगभग 56 पात्र हैं, जिनमें 39 पुरुष और 17 स्त्री पात्र हैं। डॉ. कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में कहा जा सकता है कि, 'सेवासदन' के एक 'बेहतरीन नॉविल' होने का एक कारण यह भी है कि लेखक एक प्रचारात्मक लेखक के रूप में न आकर एक कलाकार के रूप में सामने आता है।

**2. प्रेमाश्रय :-**

इसका रचनाकाल सन् 1918 ई. है, किन्तु इसका प्रकाशन सन् 1922 ई. में कलकत्ता से हुआ। उपन्यास की सम्पूर्ण कथा ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर नाम के दो बिन्दुओं से संचालित होती है। उपन्यास में कथा-विकास की अनेक विधियों का प्रयोग किया गया है। 'सेवासदन' के समान 'प्रेमाश्रम' में भी लेखक की कथा-चेतना काफी समृद्ध है। उपन्यास में पात्रों की संख्या लगभग 80 है। इन पात्रों में प्रमुख पात्रों की संख्या 30 से अधिक नहीं है लेखक ने पात्रों के चरित्रोद्घाटन के लिए पूर्व विधियों का ही

प्रयोग किया है। प्रेमचन्द ने पात्रों की मुद्रा, मन:स्थिति, मन के रहस्यों, पात्र के स्वभाव, विचारधारा आदि में परिवर्तन को भी अपने शब्दों में प्रकट किया है। प्रेमचन्द ने पात्रों की चारित्रिक, वैचारिक आदि विशेषताओं, पात्रों की दृष्टि से एक-दूसरे की चरित्र रेखाओं को अपनी वर्णन शक्ति से उभारने की भी चेष्टा की है। लेखक ने चरित्रांकन के लिए।

'प्रेमाश्रम' को पात्रों के संवादों में देशकाल और चरित्र -चित्रण की प्रवृत्ति आद्योपांत देखी जा सकती है। इसकी भाषा में अँग्रेजी के लगभग 200 शब्दों का प्रयोग हुआ है।'प्रेमाश्रम' की भाषा में अँग्रेजी, अपभ्रंश, देशज, आवृत्तिमूलक आदि शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में कह सकते है कि, ''निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अपनी कुछ दुर्बलताओं के होने पर भी 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना है। युग के सांस्कृतिक बहाव को चित्रित करने वाला उपन्यास, महाकाव्य की गरिमा से मंड़ित है और वह हिन्दी का प्रथम 'महाकाव्यीय उपन्यास' है।''

## 4. कायाकल्प :-

इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। यह प्रेमचन्द का सर्वप्रथम उपन्यास है, जिसकी मूल पाण्डुलिपि हिन्दी में प्राप्त होती है।'कायाकल्प' की कथा दो विभिन्न एवं स्वतन्त्र कथाओं से निर्मित नहीं हुई है, जैसा कि 'कायाकल्प' के आलोचकों ने समझा। उसकी कथाओं का केन्द्र-बिन्दु एक ही है। 'कायाकल्प' उपन्यास की कथा छ: परिवारों की कथा है, जिनमें यशोंदानन्दन और ख्वाजा महमूद के परिवारों को छोड़कर शेष चार परिवारों का मुख्य कथा से सीधा सम्बन्ध है। उपन्यास की मुख्य कथा चक्रधर की कथा है, जो कथा में आद्योपात चलती है। उपन्यास में लगभग 15 प्रमुख पात्र हैं। 'कायाकल्प' में प्रेमचन्द ने पात्रों के अनुभव, मुख-मुद्राओं के चित्रण में कोई विशेष सजगता प्रकट नहीं की है! इसमें प्रेमचन्द ने पतनोन्मुखी सामंती समाज का यथार्थ चित्र खींचा है। नारी समस्या के चित्रण में उपन्यासकार ने बहुविवाह प्रथा और उसके परिणामों पर दृष्टिपात किया है। प्रेमचन्द ने ऐसी स्त्रियों की समस्या भी प्रस्तुत की है, जिनके कुल-शील का पता नहीं है और जो किसी के आश्रय में पलती हैं। इसमें प्रेमचन्द ने धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता से उत्पन्न परिस्थितियों का चित्रण किया है। संक्षेप में हम कह सकते है कि 'प्रेमाश्रम' या 'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द के 'कायाकल्प' का पूरा आभास मिलता है।

## 5. निर्मला :-

इसका प्रणयकाल सन् 1923 ई. है। सन् 1927ई. इसका लखनऊ से प्रकाशन हुआ। 'निर्मला' में मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द ने समाज-चित्रण के अन्तर्गत समस्या-चित्रण का पूरा ध्यान रखा है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह और दहेज की समस्या पर दृष्टिपात किया गया है। दहेज और अनमेल विवाह का पारस्परिक सम्बन्ध दिखालकर उन्होंने उन कुप्रथाओं को व्यापक सामाजिक दुष्प्रभाव के रूप में प्रकट किया है। उपन्यास की समस्या कथा में बड़ी कुशलता से पिरोई गयी है। निर्मला की माँ दहेज न दे सकने के कारण उसका विवाह तोताराम के साथ करती है। तोताराम आयु में निर्मला के पिता के समान है।

## 6. प्रतिज्ञा :-

'चाँद' पत्रिका में निर्मला के धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुकने के एक मास पश्चात् ही जनवरी सन् 1927 ई. से प्रतिज्ञा 'उपन्यास' धारावाहिक रूप से वर्णनात्मक विधि के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक विधि तथा नाटकीय विधि का भी प्रयोग किया है। उपन्यास में चरित्रांकन की दृष्टि से पात्रों के अन्तर्विवादों का विशेष महत्व है। प्रेमाश्रम में पात्रों के चरित्रांकन में महत्वपूर्ण योगदान किया है।'सेवासदन' की भाँति ही प्रेमाश्रम में भी लेखक ने वर्णन की अपेक्षा पात्रों के संवादों को विशेष महत्व दिया है। उपन्यास के संवादों में कथा-विकास देशकाल-चित्रण व चरित्रांकन की विशेषताएँ विद्यमान हैं।

इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने अपने 20 वर्ष पुराने उपन्यास 'प्रेमा' के कथानक को आधार बनाया और उन्हीं पात्रों को लेकर उपन्यास की रचना की। 'प्रतिज्ञा' एक समस्या प्रधान कहानी के ढाँचे में निर्मित हुआ। विधवाओं की समस्या मुख्य कहानी के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसी के अन्तर्गत प्रेमा और पूर्णा की कथाएँ आती हैं। प्रेमा की कहानी प्रेम और कर्तव्य की कहानी है। विषय की दृष्टि से पूर्णा की कथा प्रधान कहानी की समस्या के अधिक निकट है। उपन्यासकार के कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भी पूर्णा की कथा द्वारा सम्भव हुई है। प्रेमा और पूर्णा की कथाओं को अनुस्यूत करने के लिए प्रेमचन्द ने जिस कौशल से काम लिया है, यह पर्याप्त सफल है। दोनों कहानियों के सम्बन्ध-सूत्र यथेष्ट दृढ़ हैं।

## 3. रंग-भूमि :-

इसकी रचना तिथि सन् 1924-25ई. है। इसका प्रकाश-कार्य सर्वप्रथम लखनऊ में सम्पन्न हुआ। 'रंग-भूमि' विषय-वस्तु की दृष्टि से 'प्रेमाश्रम' से जुड़ी और आगे बढ़ी एक कड़ी है। 'रंग-भूमि' की सृजन प्रक्रिया और उसकी आधारभूमि को समझने के लिए लेखक द्वारा अँग्रेजी की व्यावसायिक

सभ्यता, मशीनी युग, औद्योगीकरण, शासन-नीति, देशी राज्य और लिबरल दल, स्वदेशी उद्योग, ग्राम्य जीवन आदि व्यक्त विचारों को देखना आवश्यक है। प्रेमचन्द औद्योगीकरण के पूर्णत: विरोधी नहीं थे। उपन्यास की मुख्य कथा सूरदास की कथा है। सूर की मुख्य कथा अनेक आरोह-अवरोहों एवं मोड़ों से होकर विकसित है। 'रंग-भूमि' के कथा-शिल्प की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लेखक ने सूर की कथा को भी विकसित किया है। उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ यथार्थ और प्रमाणिक हैं। 'रंग-भूमि' में कथा-शिल्प के लिए लेखक ने संकेत विधि का पर्याप्त उपयोग किया है। इसके लिए लेखक ने पात्र के संकल्प, आशंका, भविष्यवाणी आदि से भावी-कथा का संकेत किया है। उपन्यास की कथा-संरचना की कुछ ऐसी भी विशेषताएँ हैं। 'रंग-भूमि' की कथा को सुसम्बद्ध बनाने के लिए लेखक पूर्णत: सचेष्ट है। 'रंग-भूमि' में पात्रों की संख्या 100 से भी अधिक है। इन पात्रों में 45 के लगभग तो नामधारी पात्र हैं और शेष पात्रों को लेखक ने अनाम ही छोड़ दिया है। पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए 'रंग-भूमि' में लेखक ने अपनी पूर्व विधियों का प्रयोग किया है।

उपन्यास में पात्रों के सर्वप्रथम प्रवेश करने पर लेखक ने उनके जो शरीरिक चित्र अंकित किये हैं, उनमें 'रंग-भूमि' के अन्य स्थलों पर किये गये शरीरिक अवयवों के चित्रण से अधिक स्पष्टता है। उपन्यास में पात्रों की स्थिति विशेष की मुखाकृति, स्वर, अनुभव आदि का चित्रण तो अवश्य हुआ है, लेकिन वह 'रंग-भूमि' में यत्र-तत्र ही दृष्टिगत होता है। उपन्यास में लेखक ने पात्रों के चरित्रों को मनोवैज्ञानिक आधार भी प्रदान किया है। इस उपन्यास में पात्रों के अन्तर्विवादों की जिस मात्रा में संयोजना हुई है, उस मात्रा में अन्तर्द्वन्द्व अथवा भावनाओं के संघर्ष की स्थितियाँ विद्यमान नहीं हैं। इस उपन्यास में पात्रों की ग्रन्थियों कुण्ठाओं एवं अवचेतना मन के द्वन्द्वों तथा अन्धे व्यक्ति (भिखारी) की मनोवैज्ञानिक मन:स्थितियों को चित्रित करने में लेखक ने अपेक्षाकृत अधिक रुचि दिखाई है।

**7. गबन :-**

इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। 'गबन' मध्यमवर्गीय समाज का चित्रण करता है इसमें नारी की सामाजिक - आर्थिक स्थिति पर दृष्टिपात किया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने भारतीय पुलिस विभाग की कार्य प्रणाली का बड़ी निर्भीकता से पदाफाश किया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने उन नेताओं की आलोचना की है जो देश के हित से अधिक व्यक्तिगत हित साधन में लगे रहते हैं। शोषण का प्रतिकार प्रेमचन्द की आत्मा का स्वर है। 'गबन' में समस्याएँ कथा द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। वे कहानी से पृथक् नहीं हैं, इसलिए उपन्यास की कलात्मकता अक्षुण्ण है।

## 8. कर्म-भूमि :-

इसका प्रकाशन सन् 1932 ई. में हुआ। 'कर्म-भूमि' का प्रणयन गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन और उत्तर प्रदेश के किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर हुआ है। 'कर्मभूमि' की रचना के कुछ ही समय पूर्व 1928 में बारदोली के किसानों का आन्दोलन सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका था। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने हमारे समाज की आर्थिक विषमता का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। ये सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत तीन प्रश्नों पर व्यापकता से विचार किया गया है। ये हैं – पारिवारिक जीवन की समस्या, पतित स्त्रियों की समस्या और छुआछूत का प्रश्न। 'कर्मभूमि' की धार्मिक प्रवृत्तियों के मेल में पाखण्ड है। शिक्षा संस्थाओं की अर्थनीति का भी इस उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया गया है। जनहित की दृष्टि से बनी म्युनिसिपैलिटी जैसी संस्थाएँ भी समर्थ और सम्पन्न व्यक्तियों के स्वार्थों को अग्रसर करने का साधन बन गई हैं। 'कर्मभूमि' के समाज पर गाँधी–युग की प्रवृत्तियों का व्यापक प्रभाव पड़ा है।

## 9. गोदान :-

इसका प्रकाशन सन् 1936 ई. में बनारस से हुआ। प्रेमचन्द की उपन्यास कला के सर्वोत्कृष्ट रूप के दर्शन उनके अन्तिम उपन्यास 'गोदान' में हुए थे। 'गोदान' को एक स्वर से हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास घोषित कर दिया गया था। प्रेमचन्द सैद्धान्तिक यथार्थवाद के पोषक थे। सैद्धान्तिक स्तर पर सामाजिक यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व अपने पूर्ण अर्थों में सर्वप्रथम 'गोदान' में ही हुआ।

'गोदान' प्रेमचन्द का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। जमींदारी पद्धति द्वारा शोषण के अन्तर्गत जमींदार, उसके कारिंदे आते हैं, महाजनी शोषण का भी बड़ा चित्रण 'गोदान' में हुआ है। ब्रिटिश नौकरशाही के 'हाकिम हुक्काम' अमले भी परोक्ष रूप से किसानों का शोषण करते हैं। गाँव के पंचों और बिरादरी का भय भी गरीबों को खा रहा है। प्रेमचन्द ने सम्पत्ति को ही सब प्रकारकी विपत्ति का मूल कारण माना है- वह चाहे सामंतीय सम्पत्ति हो या पूँजीवादी। 'गोदान' तक आते–आते ईश्वर और तथाकथित धर्म के प्रति प्रेमचन्द का मन विशेष रूप से अविश्वासी हो गया था। नगरों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण नर–नारियों में स्वच्छन्द विहार और फैंशनपरस्ती की बुराई हद तक बढ़ती जा रही थी। गाँवों में अशिक्षा के कारण किसानों में अंधविश्वास, छुआछूत, जाति–पाँत, विधवा की विडम्बना, सास–बहू, ननद–भौजाई, पति–पत्नी, पिता–पुत्र, देवरानी–जेठानी के पारिवारिक झगड़े आदि बुराइयाँ पाई जाती हैं। प्रेमचन्द का उद्देश्य इन सब बुराइयों के प्रति हमारी घृणा जगाकर समाज की इस कुरूपता को बदलने की प्रेरणा देता है।

**10. मंगल-सूत्र :-**

प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास 'मंगल-सूत्र' जिसकी रचना वे 1936 ई. में कर रहे थे। इसके चार परिच्छेद ही लिखे जा सके थे कि उपन्यासकार का देहावसान हो गया। 'मंगल-सूत्र' वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रति उपन्यासकार का बढ़ता असन्तोष व्यक्त करता है। इनमें नारी समस्या पर भी दृष्टिपात किया गया है। 'मंगल-सूत्र' अपूर्ण उपन्यास है, जिससे इसके लक्ष्य-संधान के सम्बन्ध में अन्तिम मत नहीं दिया जा सकता। ''किन्तु यह नि:संशय है कि इसके प्रत्येक परिच्छेद में आर्थिक सामाजिक अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का विधान लोकमंगल के अदम्य विश्वास से अनुप्राणि है।''

संक्षेप में प्रेमचन्द के समस्त उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द सुधारवादी थे और इसलिए वे वस्तु का चित्रण यथार्थ में करते हुए भी आदर्श उपस्थित करने का प्रयास करते हैं।

**11. मंगलाचरण :-**

प्रेमचन्द के कुछ प्रारम्भिक उपन्यास जो अभी तक अनुपलब्ध थे, 'मंगलाचरण' शीर्षक से प्रकाशित हुए। 'मंगलाचरण' में उनके चार प्रारम्भिक उपन्यास 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य', 'हमखुर्मा हमअसवाद', 'प्रेमा' तथा 'रूठी रानी' संकलित हैं। इनमें से दो उपन्यास 'असरारे मआबिद' एवं 'रूठी रानी' हिन्दी के लिए अज्ञात थे। प्रेमचन्द ने उन्हें उर्दू में लिखा और ये दोनों ही उर्दू पत्रिकाओं में क्रमश: छपे थे। 'असरारे मुआबिद' प्रेमचन्द की रचनाओं में सबसे पुरानी है। 'प्रेमा' हिन्दी में प्रकाशित होने वाला प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास है। यह बाबू नवाबराय 'बनारसी' के नाम से प्रकाशित हुआ था।

'किशना' (कृष्णा) का प्रकाशन सन् 1908 ई. में बनारस से हुआ था। 'रूठी रानी' का प्रकाशन उर्दू साप्ताहिक 'जमाना' में अप्रैल 1907 से अगस्त 1907 तक धारावाहिक रूप में हुआ था। 'वरदान' उपन्यास की रचना सन् 1905-06 के बीच में हुई थी। इस उपन्यास की मुख्य कथा प्रतापचन्द के जीवन की कथा है। 'वरदान' उपन्यास में वर्णनात्मक तथा नाटकीय विधियों से ही पात्रों का अधिकांश चरित्रांकन हुआ है। 'वरदान के शिल्प-विधान के आधार पर इसे एक साधारण कथाकार का साधारण उपन्यास ही माना जा सकता है।'

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

# प्रेमचन्द
# मानसरोवर भाग - 1

**अनुक्रमणिका :-**

1. प्रेमचन्द के कथाशिल्प पर अपने विचार प्रकट करते हुए उनकी कहानियों में व्यक्त भाव-विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. कहानी - कला के तत्त्वों के आधार पर 'अलग्योझा' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
3. कहानी के तत्त्वों पर 'ईदगाह' का मूल्यांकन कीजिए।
4. 'बेटोंवाली विधवा' कहानी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।
5. कहानी - कला के तत्त्वों के आधार पर 'बडे भाई साहब' की समीक्षा कीजिए।
6. 'नशा' कहानी का तात्त्विक अनुशीलन कीजिए।
7. कहानी-कला के तत्त्वों पर 'पूस की रात' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
8. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी का तात्त्विक विवेचन कीजिए।
9. 'झाँकी' कहानी का विवेचन कीजिए।

**1. प्रेमचन्द के कहानी -शिल्प पर अपने विचार प्रकट करते हुए उनकी कहानियों में व्यक्त भाव-विचारों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-कहानी-क्षेत्र में अद्वितीय तथा अनुपम प्रेमचन्द :-**

जिस प्रकार प्रेमचन्द उपन्यास-क्षेत्र में अपनी एक मूर्धन्य स्थान रखते हैं, उसी प्रकार उनको वैसा ही स्थान कहानी-क्षेत्र में भी प्राप्त है। हिन्दी-साहित्य के एक ऐसे कहानीकार के रूप में, जिसने हिन्दी-साहित्य को लगभग 670 कहानियाँ देकर समृद्ध ही नहीं किया, बल्कि अपने विशिष्ट शिलप से उसे गौरवान्वित भी किया, सदैव उच्च शिखर पर विराजमान रहेंगे। वह अपने ही युग के नहीं, बल्कि आज के कहानीकार के रूप में सर्वश्रेष्ठ कहे जा सकते हैं। अपने कहानी-साहित्य से उन्होंने हिन्दी-गद्य को प्रारम्भ में इतना समृद्ध कर दिया था कि आज भी वह उस समृद्धि पर गौरव अनुभव कर सकता है। प्रेमचन्द-साहित्य के सृजन पर विश्वास करते थे, इसी विश्वास को उन्होंने सामाजिक संदर्भों में कहानी-लेखन द्वारा प्रकट भी किया। उन्होंने एक प्रकार से अपने साहित्य में अपने युग का पूरी चिन्तन कर दिया है। उनका यह चिन्तन युग की विराट संभावनाओं को समेटकर ही जैसे एक दर्शन बनकर उनके उपन्यासों की तरह उनकी कहानियों में भी प्रकट हुआ है।

**कहानी- कथ्य की गहरी छाप :-**

एक कहानीकार के रूप में उनका 'कथ्य और शिल्प' अद्वितीय है। शिल्प सृजन की गढ़न से सम्बन्धित है और कथ्य सृजन के आभरण और उसकी आत्मा का द्योतक है। यदि लेखक का अभिव्यक्ति-पक्ष सबल और अन्तरंग है तो निश्चय ही वह अपने कथ्य की छाप पाठक के हृदय पर लगा ही देगा। प्रेमचन्द का अनुभूति-पक्ष अत्यन्त गहन और व्यापक था सम्प्रेषण-कला के वे अति धनी थे ही, अत: कहानी के शिल्प को उन्होंने कथ्य द्वारा जो सजीवता दी, वह सदा अनुकरणीय रहेगी और भविष्य के कहानीकार सदैव ही उनसे प्रेरणा प्राप्त करते रहेंगे।

**कुरुचिपूर्ण यथार्थ भी सुरुचि-सम्पन्नता से मण्डित :-**

मानव-जीवन के यथार्थ में से प्रेमचन्द ऐसा कुछ निकालते थे कि यथार्थ की कुरुचि की ओर ले जाने में सहायक हो सके, क्योंकि उनका विश्वास था कि साहित्य वही है जो सुरुचि प्रदान कर सके तथा आध्यात्मिक और मानसिक परितुष्टि दे सके। अपनी कहानियों में वह इसी बात को उसी दक्षता से लाने में सफल हुए हैं, जिस प्रकार वह इसे अपने उपन्यासों में लाये हैं। कुछ समीक्षक उनके उपन्यासों को श्रेष्ठ मानते हैं तो कुछ उनकी कहानियों को। अत: यह मान लेना चाहिए कि वह दोनों ही क्षेत्रों पर समान गरिमा से शासन करते थे।

## मध्यवर्गीय चेतना का विविध-रूप जागरण :-

उपन्यासों की तरह ही उन्होंने मध्यवर्गीय चेतना से उसके विविध रूपों में अपने कहानी–साहित्य में प्रवेश किया। उनके मध्य–वर्ग का सम्बन्ध विशेष–रूप में ग्रामीण चेतना के साथ रहा है, अत: उन्हे 'ग्राम्य जीवन का चितेरा' भी कहा जाता है। प्रेमचन्द ग्राम्य जीवन की परिस्थितियों और वातावरण में पले–बढ़े पात्रों के हृदय–पक्ष को टटोलने में समर्थ थे, वैसी सामर्थ्य किसी अन्य कहानीकार में नहीं दिखायी देती। उन्होंने ग्राम्य जीवन के भाव–पक्ष को कथ्य का विषय देकर जिस तरह शिल्प में संगठित किया है, वह अद्‌भुत है। न तो उन्होंने शिल्प के मोह में अपनी सहज अनुभूतियों के साथ अन्याय किया है और न भावों की अभिव्यक्ति में शिल्प को आड़े आने दिया है। अत: उनके कहानी शिल्प में एक सहज–स्वाभाविक सौन्दर्य और रुचि के दर्शन होते हैं।

## कथानक की परतों का कुशल आवरण :-

'कथानक' जैसा कि सर्वविदित है, कथा–साहित्य के प्राण होते हैं। अत: कथानक ही कहानी का भी आधार – स्थल है। कथानक अपने विकास–क्रम में कई परतों के आवरण में होता है, कुशल कहानीकार उस पर से उन्हीं परतों को उतारकर उसे जाग्रत करता है। वस्तुत: यह उसी तरह की बात है, जैसे सांसारिक वातावरण और परिस्थितियों की परतों में उसके जीवन के किसी अध्याय को उद्‌घाटित करके स्पष्ट रूप से सामने लाना। हिन्दी के प्रारम्भिक स्थान–काल में ही प्रेमचन्द की कहानियों ने उसके साहित्य को दृढ़ समृद्धि दी थी। कहानी तत्वों की दृष्टि से उनकी कहानियाँ श्रेष्ठ कोटि की हैं।

## ग्राम्य और नगर-जीवन का विश्लेषण :-

वैसे तो प्रेमचन्द को ग्राम्य जीवन का विशेषज्ञ कहा जाता है, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार शहरी जीवन का विश्लेषण अपनी कहानियों में किया है, वह भी कम श्लाघनीय नहीं है। जैसी प्रवृत्ति उपन्यासकार प्रेमचन्द की है, वैसी ही उनके कहानीकार रूप की भी है। उनकी कहानियों में प्रमुख कथानक जीवन के यथार्थ बोध पर स्थित है, किन्तु उनका रुझान किसी न किसी आदर्श बिन्दु की ओर सदैव झुका रहता है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में व्यक्ति की दुर्बलता तो दिखायी देती है, परन्तु मानव- रूप की ऊर्ध्वग्रामी गति के साथ उनकी अपनी एक अलग शैली है, जो 'वर्णन' और 'विवरण' प्रधान है। इसलिए उनके कथानकों में सहज–रूप से घटनाओं के घटाटोप का प्राचुर्य रहता है। इस कारण उनमें कुछ दोष भी इंगित होते हैं, विशेष रूप से वह कहानियाँ जो तत्कालीन गाँधीजी के

आन्दोलनों का आधार लेकर लिखी गयी हैं, वह उपदेशात्मक ही नहीं कुछ-कुछ प्रचारात्मक भी हो गयी हैं। उनमें प्रभावोत्पादक शक्ति का भी अभाव आ गया है।

## विस्तार में प्रयोग-पात्र :-

कथानक के दो प्रमुख तत्व होते हैं - केन्द्रीय कथा अर्थात् आधिकारिक कथा, तथा प्रासंगिक कथा। प्रेमचन्द ने अपनी बाद की कहानियों में मुख्य अर्थात् केन्द्रीय कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं को भी जोड़ा है। इस कारण उनके कथानक अनावश्यक विस्तार-दोष को उजागर करते हैं। इससे कथानक उद्देश्य तक पहुँचते-पहुँचते प्राय: बिखर-सा जाता है, यही दोष उनके उपन्यासों में भी आया है। वस्तुत: वह कहना अधिक चाहते हैं और अधिक को समेट लेने के लिए जब आगे बढ़ते हैं। तो उन्हें कृति का विस्तार-भय सताने लगता है और वह नीरसता और अस्वाभाविकता के जाल में फँस जाते हैं। इसका कारण है उनका व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में परखने की उपेक्षा, वह उसे सामाजिक दृष्टि से अपनी परख का प्रयोग पात्र बना देते हैं। इसके लिए वह कथा को उसी दृष्टि से मोड़ देते हुए देखे जाते हैं।

## भारतीय समाज की समस्याएँ :-

उपन्यासों की तरह उनकी कहानियाँ भी भारतीय सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण करती हैं। उनकी प्रसिद्ध सामाजिक कहानियों - बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर, शंखनाद, अमावस्या की रात्रि, शान्ति, कायर, शक्ति का मार्ग, माता का हृदय, नशा, बड़े भाईसाहब, बूढ़ी काकी, घरजमाई आदि का विद्वानों ने बार-बार उल्लेख किया है। **'बड़े घर की बेटी'** की समस्या परिवारिक है। केवल इसी में नहीं, प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियाँ ही पारिवारिक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी हैं। प्राय: परिवार में छोटी-छोटी बातें बहुत बड़ी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। 'बड़े घर की बेटी' में दाल में घी न डाल पाना कहानी का मुख्य बिन्दु है। **'पंच परमेश्व'** में शत्रु-भाव के होते हुए भी जुम्मन शेख पंच बनने पर उसे भूलकर न्याय ही करता है और कहानी का केन्द्र - बिन्दु है - बैल की मृत्यु, जिसे जहर देने के लिए जुम्मन शेख को शक के दायरे में लाया जाता है। **'शंखनाद'** में एक नाकारा भाई जब देखता है कि उसका लड़का खोमचे वाले से कुछ नहीं ले पाता, जबकि उसके कर्मठ भाइयों के पुत्र मिठाइयाँ लेकर खाते हैं, तो वह कर्मठ होने का संकल्प कर लेता है। **'अमावस्या की रात'** में वैद्य को बिना फीस लिये भरती हुई गिरिजा को न देखने आने की कथा है, जो उसके मर जाने पर अपनी लोभ-प्रवृत्ति को त्यागता है। **'शान्ति'** में पाश्चात्य समस्या में रँग देते हैं, तो जब वह स्वयं बीमार पड़ते हैं और पाश्चात्य सभ्यता में रंग चुकी पत्नी के पास उनकी देख-भाल का समय नहीं रहता, तो अपनी पत्नी का पहला स्वरूप ही प्रिय लगने लगता है। **'प्रेमा'** में एक प्रेम-तिरस्कृता, जो जाति-भिन्नता के कारण प्रेमी से

विवाह न कर पाई, की आत्महत्या की कथा है। **'मुक्ति-मार्ग'** में गाँव में फैले आपसी वैमनस्य का रूप दिखाया गया है, जिसके कारण बछिया को विष दे देने का प्रकरण पैदा होता है, जिससे बेचारा बुद्धू प्रायश्चित के फेर में पड़ जाता है और बरबाद हो जाता है। इस कहानी का केन्द्र-बिन्दु है - बुद्धू की भेड़ें, जो झींगुर के खेत में चली जाती हैं। **'माता का हृदय'** की नायिका माधवी अपने मातृहृदय की विशालता के भाव से अनुप्राणित होकर अपने मन में बगची के प्रति शत्रुता पालकर भी उनके पुत्र का पालन-पोषण करती है। **'नशा'** में अमीरी का नशा किस प्रकार एक गरीब को अहंकारी बना देता है, यह दिखाया गया है। **'बड़े-भाईसहेब'** में छोटे भाई द्वारा बड़े भाई के आदर-सम्मान की रक्षा दिखाई गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेमचन्द ने अपनी सामाजिक कहानियों में भाव की प्रगाढ़ता में आदर्श का समन्वय बहुत संवेदनात्मक रूप से किया है।

## देश-प्रेम की कहानियाँ :-

प्रेमचन्द की **'सोजे-वतन'** और **'समरजमा'** की कहानियाँ देश-प्रेम की कथावस्तु पर आधारित हैं। यह कहानियाँ तत्कालीन स्वाधीनता आन्दोलन, साम्प्रदायिकता और मजदूरों के शोषण से संबंध रखती हैं। **'सत्याग्रह'** में तात्कालिक काँग्रेसियों और उनके गुर्गों के हथकण्डों का भण्डाफोड़ हुआ है। **'मैकू'** वैसे तो राजनैतिक कहानी कही गई है, परन्तु है वह भावना से प्रताड़ित व्यक्ति की कहानी, **मैंकू** स्वयं ताड़ीखाने पर पिकेटिंग करने वाले एक स्वयंसेवक को मारकर भाग जाता है, लेकिन वहाँ पहुँचकर उसे अपने किये का बोध होता है और वह ताड़ीखाने के पियक्कड़ों पर टूट पड़ता है, न तो वह स्वयं पीता है, न औरों को पीने देता है।

## साम्प्रदायिकता सम्बन्धी कहानियाँ :-

साम्प्रदायिकता सम्बन्धी कहानियों में प्रेमचन्द ने हिन्दू-मुसलमानों को एक-साथ रखकर उनकी मौलिक समस्याओं को दिखाया है। परन्तु किस प्रकार वह दोनों स्वार्थ- साधकों के फेर में पड़कर मौलिक समस्याओं को भूल जाते हैं। यह बात प्रेमचन्द उजागर करते हैं।

## शोषण से सम्बन्धित कहानियाँ :-

प्रेमचन्द की शोषण और गरीबी का चित्रण करने वाली कहानियों में 'दूध का दाम, सद्गति, कफन, सवा सेर गेहूँ, पूस की रात आदि अत्यन्त संवेदनात्मक कहानियाँ हैं।'

**ऐतिहासिक कहानियाँ :-**

इनके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने ऐतिहासिक कहानियाँ भी लिखी हैं। इस क्षेत्र में भी वह अपनी अभिव्यञ्जनात्मक शक्ति के द्वारा किस प्रकार मानवतावाद के शुष्क स्थल को सरस बना देते हैं, यह दर्शनीय बात है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

# कला

## 2. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'अलग्योझा' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथानक
3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन
5. देश-काल तथा वातावरण
6. भाषा-शैली
7. उद्देश्य

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट' तथा, 'कलम का सिपाही' मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कयाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं।

### 2. कथानक :-

'अलग्योझा' कथा भारतीय ग्रामीण किसान परिवार की है।

भोला महतों पहली पत्नी का देहान्त होने के पश्चात पन्ना नामक रूपवती स्त्री से विवाह कर लेता है। प्रथम पत्नी का रग्धू की उम्र उस समय दस साल की है। बचपन से वह खेती के कामों पर वह लगा रहता है। पन्ना के तीन बेटे केदार, खुन्नू लछमन और झुनिया बेटी हुए। आठ साल गुजरने के साथ ही भोला का देहान्त होता है। घर का सारा बोझ रग्धू ढ़ोने लगता है। खेती और घर अठारह साल की उम्र में वह सम्हालने लगता है। बच्चे केदार, खुन्नू, लछमन और झुनिया भैया रग्धू से प्यार करने लगते है। काकी पन्ना रग्धू पर कृतज्ञता ज्ञापन करती रहती है।

पाँच साल गुजर जाते हैं। रग्धू विवाह के विरुद्ध होने पर भी पन्ना समझाती है। रग्धू को शंका होती है कि उसके विवाह के पश्चात बहू अलग चूल्हा सुलगायेगी और बेचारे बच्चे बेबस हो जायेंगे। किन्तु काकी पन्ना मुलिया  नामक एक सुन्दर लडकी के साथ रग्धू का विवाह करवाती है।

रग्धू का दिन-रात काम करना बहू मुलिया को न सोहता। अब पन्ना का बडा लडका केदार चौदह साल का हो जाता है और दुनिया दारी भी समझने लगता है। घर में हर बात पर बिगड कर अपना चूल्हा अलग कर देती है। रग्धू बेचारा निस्साहय रह जाता है।

पाँच साल और बीत जाते हैं। अट्ठाईस साल का रग्धू दोनों बच्चों का बाप बन जाता है। उधरपन्ना के बच्चे भी खेती में लगे रहते हैं। दिन-रात काम में लगे रहने के कारण रग्धू बीमार पड जाता है। आखिर एक दिन रग्धू का टिमटिमाता हुआ जीवन-दीपक बुझ जाता है। मुलिया का जीवन अन्धकारमय होजाता है और उसका सारा घमण्ड चूर-चूर हो जाता है। सारी खेती तहस-नहस हो जाती है।

केदार अब पूरे तौर से समझदार हो है और सारे परिवार की देखभाल करता रहता है। पन्ना और केदार बहू मुलिया का संरक्षण भी करते रहते हैं। केदार से पन्ना विवाह की चर्चा करती है तो वह सुमुखता प्रकर नहीं करता । उसका कथन है - ''औरतों से कौन सुख! मेहरिया घर में आयी और आदमी का मिजाज बदला। माँ-बाप, भाई-बन्धु सब पराये हैं। बिना ब्याह किये दो बेटे मिल गये, इससे बढ़ कर और क्या होगा। जिसे अपना समझे, वह अपना है, जिसे गैर समझो, वह गैर है।''

इतना कहते जाने पर भी केदार का मन मुलिया की ओर आकर्षत है। पन्ना केदार का हृदय पहचान कर केदार और मुलिया का विवाह करखा देती है।

वैधव्य के शोक से मुरझाया हुआ मुलिया का पीत वदन कमल की भाँति अरुण हो उठता है। दस वर्षों में जो कुछ खोया था मुलिया को मानो ब्याज के साथ मिल जाता है।

वही लावण्य, वही विकास, वही लोच!

**3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-**

**(अ) रग्धू :-** कथावस्तु देहाती किसान परिवार से सम्बन्धित है।

भोला महतो किसान है। दस साल के लडके रग्धू को छोड कर भोला महतो की पत्नी चल बसती है। दस साल की उम्र से सारे परिवार का बोझ उठा कर, दिन-रात परिवार के लिए पसीना बहा कर अट्ठाईस साल की उम्र में ही जीवन बिताने वाला कर्मठ किसाना का प्रतिनिधित्व करता है 'रग्धू'।

**(आ) पन्ना :-**

पन्ना, भोला महतो किसान की पत्नी, केदार, खुन्नू, लछमन और झुनिया की माँ है। रग्धू की सौतेली माँ होने पर भी रग्धू की कर्मठता के सामने सिर नवाती है। रग्धू की कृतज्ञता ज्ञापन उसकी नस-नस में भरी रहती है। रग्धू विताह के विरुद्ध होने पर भी उसे समझा बुझा कर मुलिया के साथ उसका विवाह करवाती है। बीमार होकर अट्ठारवें साल की उम्र में ही रग्धू का देहान्त होने पर अपने पुत्र केदार के साथ विधवा बहू मुलिया का विवाह करवाती है ताकि मुलिया और उसकी सन्तान अनाथ न हो।

**(इ) मुलिया :-**

मुलिया रग्धू की पत्नी है। जैसे बहुत सी नारियाँ सम्मिलित परिवार के विरुद्ध होती हैं, मुलिया भी उसी के नारे में चलती है। पति के समझाने पर भी अपनी हाण्डी लिए अलग चूल्हा सुलगाती है। पन्ना और बच्चे पहले-पहले कुछ कष्ट भोगते हैं एवं असुविधाएँ झेलते हैं। पति रग्धू बीमार होकर अट्ठाईस साल की उम्रमें ही वह देह त्यागता है। उसका मांगल्य पाँच साल में ही मिट जाता है।

पन्ना अपने लडके केदार के साथ मुलियाका पुनर्विवाह करवाती है।

**(ई) केदार :-**

केदार समझदार, सहृदयी, कर्मठ और सब से बढ़ कर कृतज्ञ है। भैया रग्धू की विधवा पत्नी मुलिया की मांग में पुन: सिदूर भरता है और उसके बच्चों को अपनाता है।

**4. कथोपकथन :-**

चरित्र-चित्रण कथानक को आगे लेजाता है तो कथोपकथन के द्वारा चरित्र-चित्रण प्रसारित होता है। यह कहानी कथोपकथनों की भरगार है। कथोपकथन छोटे-छोटे होकर पात्रों के हृदयों का चित्रांकन करते हैं। उदाहरण के लिए रग्धू और मुलिया के बीच वार्तालाप देखिए -

मुलिया - तुम्हें इस तरह गुलामी करनी होतो करो, मुझ से न होगी।

रग्धू - तो फिर क्या करूँ, तूहीं बता? लडके तो अभी घर का काम करने लायक भी नहीं हैं।

मुलिया - लडके रावत के हैं, कुछ तुम्हारे नहीं है।

पन्ना केदार से - ''रग्धू तुम्हारा भाई नहीं, तुम्हारा बाप है।''

पन्ना और मुलिया के बीच वार्तालाप देखिए -

पन्ना - केदार का घर भी बस जाता, तो मैं निश्चिन्त हो जाती।

मुलिया - वह तो करने ही नहीं कहते।

पन्ना - कहता है, ऐसी औरत मिले, जो घर में मेल से रहे, तो कर लूँ।

मुलिया - ऐसी औरत कहाँ मिलेगी? कहीं ढूँढो।

पन्ना - मैंने तो ढूँढ़ लिया है।

मुलिया - सच! किस गाँव की है? कहाँ रहती है, मैं जाकर उसे मना लाऊँ!

पन्ना - तू चाहे, तो मना लो तेरे ही ऊपर है।

मुलिया - मैं आज ही चली जाऊँगी अम्मा। उसके पैरों पडकर मना लाऊँगी।

पन्ना - बतादूँ! वह तू ही है!

मुलिया - तुम तो अम्माजी, गाली देती हो।

पन्ना - गाली कैसी, देवर ही तो है।

### 5. देश-काल एवं वातावरण :-

'अलग्योझा' कहानी भारतीय किसान परिवार पर आधारित है। खेती बाडी करना, मेले में जाना रग्धू और मुलिया का विवाह, मुलिया और पन्ना के बीच मतभेद, मुलिया का अलग चूल्हा जलाना आदि सब भारतीय ग्रामीण सम्मिलित परिवार का वातावरण है। रग्धू का बीमार होना और उसकी मृत्यु होना - किसान परिवार की विडंबना है।

### 6. भाषा - शैली :-

कबीर की तरह प्रेमचन्द भी 'वाणी के टिक्टेटर' हैं उर्दूमिश्रित व्यावहारिक खडी बोली में कहानी ढ़लती है। ग्रामीण लोगों में प्रचलित मुहाबरों की भरमार में कहानी सनी गयी है। 'माँ के आते ही चक्की

में जूतना पडा', 'चोली दामन का नाता', 'ऊख की गडेरियाँ बनाना', 'सूना-सूना गला', 'मुहर पहनना', 'रत्ती का रंग-ढ़ंग', 'कपोलों पर हल्की सुर्खी', 'सत्तू खाना', 'प्रियजन के श्राद्ध का भोजन', 'मजाक उडाना', 'टिमटिमाना', 'औरतों का कौन सुख', 'मिजाज बदलना' आदि - आदि महावरे और लोकोक्तियों से कहानी रंगी हुई है। प्रेमचन्द की शैली अद्वितीय है। वे अपनी कलम जिधर चाहे उधर घुमा सकते हैं। इसीलिए वेकलम के सिपाही हैं।

**7. उद्देश्य :-**

कहानीकार प्रेमचन्द का उद्देश्य इस कहानी में 'भारतीय सम्मिलित परिवार का समर्थन करना' है। कहानी की नींव यथार्थ पर आधारित है और कहानी का निर्माण आदर्श में परिवर्तित होता है। शीर्षक 'अलग्योझा' भी अत्यन्त उपयुक्त है।

केदार के साथ मुलिया का विवाह करवाकर प्रेमचन्द ने 'विधवा पुनर्विवाह' का आदर्श - प्रसारित किया। कहानी समापन में प्रेमचन्द लिखते हैं - 'वैधव्य के शोक से मुर झाया हुआ मुलिया का पीत वदन कमल की भाँति अरुण हो उठा। दस वर्षों में जो कुछ खोया था, इसी एक क्षण में मानो ब्याज के साथ मिल गया। वही लावण्य, वही विकास, वही आकर्षण, वही लोच।'

आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद पर यह कहानी खरी निखरी है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

**3. कहानी के तत्त्वों पर 'ईदगाह' का मूल्यांकन कीजिए।**

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथानक
3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन
5. भाषा-शैली
6. देश-काल एवं वातावरण
7. उद्‌देश्य

**1. प्रस्तावना :-**

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट' तथा 'कलम का सिपाही' मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों अन्र्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ काहायिाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं।

कहानी-शिल्प की दृष्टि से 'ईदगाह श्री प्रेमचन्दजी की एक सफल कहानी है। कहानी- कला के प्रमुख आधार हैं - कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, कथोपकथन अथवा सम्वाद, भाषा-शैली, देश-काल एवं वातावरण तथा उद्देश्य। इन तत्वों के आधार पर प्रस्तुत कहानी का मूल्यांकन इस प्रकार है-

## 2. कथानक या कथावस्तु :-

'ईदगाह' कहानी की कथावस्तु का परिवेश प्रेमचन्द की सर्वव्यापक सहानुभूति एवं गरीब मुसलमान समाज का मूर्तिमान स्वरूप साकार कर देता है। पूरी कहानी का स्वर धार्मिक न होकर मानवीय है-

### (क) कहानी का आरम्भ :-

कहानी का आरम्भ बड़े प्रभावशाली ढंग से हुआ है। कहानी का नायक हामिद अपनी बूढ़ी मेला देखने के लिए उत्साह से तैयार होकर जा रहे हैं। मेले में जाकर बच्चों को तरह-तरह की मिठाइयाँ खाने और अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार खिलौनों को खरीदने आदि का स्वाभाविक वर्णन है।

### (ख) कहानी का विकास :-

कहानी के द्वितीय चरण में वातावरण को साकार किया गया है। 'ईदगाह' से सभी बच्चे अपनी-अपनी पसन्द के खिलौने खरीदकर लाते हैं। बहुत से बच्चे झूला झूलते हैं। हामिद अलग दूर हटकर खड़ा हो जाता है। मेले में कुछ दुकानें लोहे की चीजों की हैं। अन्य बच्चों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। सब आगे बढ़ गये। हामिद लोहे की दुकान पर रुक गया। अनेक चिमटे रखे हुए थे। उसके मन में विचार आया कि दादी के लिए चिमटा ले जाकर दूँगा तो वे अत्यन्त प्रसन्न हो जायेंगी।

### (ग) चरमोत्कर्ष एवं समाप्ति :-

इसके बाद कहानी चरम बिन्दु की ओर बढ़ती है। हामिद चिमटे का दाम पूछता है तो मालूम होता है कि छः पैसे का है। अन्त में सौदा तीन पैसे में पट जाता है। चिमटा पाकर हामिद बहुत प्रसन्न होता है। घर पहुँचने पर अन्य बच्चों के खिलौने टूट-फूट जाते हैं। हामिद को चिमटा खरीदकर लाया देखकर उसकी बूढ़ी दादी ने उसे गोद में उठाकर और दामन फैलाकर दुआएँ देना शुरू किया। हामिद ने कहा - ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिये।'' यह सुनकर बुढ़िया कर हृदय गद्‌गद हो गया। हृदय की साक्षी आँसुओं के रूप में बहने लग गयी। अबोध हामिद इस रहस्य को समझने में असमर्थ था।

संक्षेप में कथानक बहुत छोटा है। हामिद के मन में अपनी बूढ़ी दादी के प्रति तवे से रोटियाँ उतारते समय उँगलियाँ जल जाने का रहस्य छिपा हुआ है। यह मानवता की कहानी कहता है।

## 3. पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

'ईदगाह' कहानी के पात्र हैं – हामिद, उसकी बूढ़ी दादी, मोहसिन तथा गाँव के दूसरे बच्चे।

### हामिद :-

प्रस्तुत कहानी में हामिद का चरित्र अपना अलग महत्त्व रखता है। उसके माता-पिता मर चुके हैं। उसका लालन-पालन उसकी बूढ़ी दादी करती है। बालकों में मेला जाने की उत्सुकता हुआ ही करती है। यह अभिलाषा परिवर्तित होती है मिठाई खाने और खिलौनों को खरीदने में, परन्तु हामिद में त्याग और सहानुभूति की भावना विद्यमान है। वह बालक होकर भी बूढ़ों के स्वभाव के समान कार्य करता है। वह साहसी है, उसमें अपनी दादी के लिए स्वाभाविक स्नेह है। वह त्याग एवं सहनशीलता के गुणों से परिपूर्ण है।

कहानी के सभी पात्र सजीव हैं। यह कहानी बाल-मनोविज्ञान पर आधारित है। इसमें बाल-स्वभाव का सरस, भावपूर्ण विवेचन है। बालक स्वभाव से ही सरल भोले-भाले और अबोध होते हैं। उनमें सांसारिक ज्ञान का अभाव होता है। वे दूसरों की बातों पर सहज ही विश्वास कर लेते हैं, परन्तु हामिद के विषय में यह बात नहीं है। इसके विषय में प्रेमचन्द ने लिखा है – ''बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था।'' छोटे से बालक का यह बड़े-बूढ़ों-जैसा व्यवहार उसकी गरीबी ने उत्पन्न किया था, अन्यथा वह भी अन्य बच्चों की तरह मिठाई या खिलौनों की ओर ललचाता। उसकी आशा-निराशा, बाल-सुलभ चेष्टा, उसका त्या आदि अत्यन्त प्रभावशाली है।

## 4. कथोपकथन :-

कथोपकथन के अभाव में भी कहानी, कहानी रह सकती है, किन्तु अच्छी कहानी में कथोपकथन से जीवन्तता आ जाती है। इनके द्वारा कहानी का मौन भंग हो जाता है और वह पाठकों से बातचीत करने हेतु सचेतन हो जाती है। प्रस्तुत कहानी का आदि और अन्त दोनों सम्वादों में होते हैं। कहानी का प्रारम्भ हामिद का ईदगाह का मेला देखने जाने के लिए अपनी बूढ़ी दादी से आज्ञा माँगने से होता है। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है –''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले जाऊँगा। बिल्कुल न डरना।'' कथोपकथन इतना स्वाभाविक एवं मार्मिक है कि वह हृदय पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाता है। हामिद और चिमटा बेचने वाले का सम्वाद कितना सुन्दर है –

''यह तुम्हारे काम का नहीं है।''

''बिकाऊ क्यों नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये हैं?''

''तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे  का है?''

''छ: पैसे लगेंगे।''

''हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'' हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा - ''तीन पैसे लोगे।''

कितना सरल और स्वाभाविक वार्तालाप है। इसी प्रकार जहाँ कहानी का प्रारम्भ रोचक है, वहीं उसका अन्त भावपूर्ण एवं मार्मिक है।

वस्तुत: कहानी में सम्वाद के लिए अधिक अवकाश नहीं है। सम्वाद छोटे-छोटे व स्वाभाविक और परम्पर सम्बद्ध हैं। कहानी में इनसे सचेतनता, नाटकीयता एवं रोचकता की वृद्धि हुई है। सम्वादों ने कथानक को आगे ही नहीं बढ़ाया है, अपितु उन्हें सुगठित होने में भी सहायता प्रदान की है। कहानी के सम्वादों द्वारा पात्रों के चित्रण-चित्रण में भी सहायता मिली है। साथ ही पात्रों और पाठकों के बीच में व्यवधान दूर किया है तथा उनके बीच तादात्म्य स्थापित किया है।

**5. भाषा-शैली :-**

प्रेमचन्दजी की भाषा का रूप सर्वजन-सुलभ बोलचाल का है। इसके मुहावरे, रवानगी, चटपटापन एवं चुस्ती बेजोड़ है। उन्होंने संस्कृत के सरल तत्सम शब्दों के अतिरिक्त अपनी हिन्दी में अरबी, फारसी, उर्दी तथा अँग्रेजी के शब्दों का भी उन्मुक्तता से प्रयोग किया है। उनकी भाषा में वातावरण को सजीव करने की अद्‌भुत शक्ति है।

'ईदगाह' कहानी की भाषा जनवादी तत्वों से परिपूर्ण है। उसमें भावाभिव्यक्ति की क्षमता, बोधगम्यता एवं सरलता है। देशकाल और वातावरण के वह सर्वथा अनुकूल है। पात्रों तथा उनके भावों को व्यक्त करने की भी उसमें असाधारण क्षमता है। वस्तुत: जन-भाषा में रचित होने के कारण प्रेमचन्द जी का समस्त साहित्य अधिक लोकप्रिय हो गया है। वे कथा-साहित्य के तुलसी हैं।

भावाभिव्यक्ति में भाषा की स्वाभाविकता निम्नलिखित पंक्तियों में दृष्टव्य है -

''खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी

ने सोहन-हलवा। सब मजे से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक् है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता है? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।''

सम्वादों में भी स्वाभाविकता भाषा के माध्यम से ही आती है। निम्नलिखित सम्वाद भाषा की व्यंजकता, चुस्ती एवं चटपटेपन के लिए उल्लेख्य हैं-

**मोहसिन -** अच्छा, अब की जरूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जा।

**हामिद -** रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

**सम्मी -** तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या - क्या लोगे?

**अहमद -** हमसे तो गुलाबजामुन ले जाव हामिद! मोहसिन बदमाश है।

**हामिद -** मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

**मोहसिन -** लेकिन दिल में कह रहे होगे कि मेले में तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

**महमूद -** हम समझते हैं इसकी चालाकी! जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जायेंगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा।

### 6. देशकाल एवं वातावरण :-

कहानी का महत्त्वपूर्ण अंग है - देशकाल एवं वातावरण। कहानी कीस्वाभाविकता की दिशा में देशकाल अथवा वातावरण का भी प्रमुख स्थान होता है। पाठकों के हृदय में कहानी में वर्णित सत्य तब तक विश्वस्त नहीं बन पाता, जब तक उसे युग के अनुकूल सजीव वातावरण से परिवेष्टि न किया जाये। मुंशी प्रेमचन्द अपनी कहानियों में वातावरण की सजीवता के प्रति विशेष सजग प्रतीत होते हैं।

### मानसिक वातावरण :-

कहानी में गरीबी से उत्पन्न विवेक हामिद को इतना व्यावहारिक बना देता है कि उसके चिमटे के तर्क के आगे अन्य सब बच्चे मौन हो जाते हैं।

### प्राकृतिक वातावरण :-

प्रेमचन्दजी को प्रकृति एवं मानव-जगत् का सहज एवं विस्तृत ज्ञान है - ''उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। इतने बड़े हो गये, अभी तक पढ़ते जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर?'' उन्होंने इस कहानी में मुसलमान जाति के त्यौहारों का सच्चा और मार्मिक वर्णन सरस एवं मनोहर शैली में किया हैष साथ ही निर्धनों की विवशता और गरीबी का जैसा वर्णन है, वह हृदय को प्रभावित करता है।

पूरी कहानी का वातावरण बड़ा ही प्रभावशाली है। ऐसा लगता है कि वातावरण स्वयं एक चरित्र बन गया है। लेखक बाल - मनोविज्ञान के सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय तो देता ही है, साथ ही ईद के वातावरण में शहर के प्रति गाँव के बच्चों का दृष्टिकोण भी ध्यान देने योग्य है।

**7. उद्देश्य :-**

प्रेमचन्द शोषित, दलित एवं अभावग्रस्त वर्ग के सच्चे समर्थक हैं। मानव-मानव के बीच का वैषम्य उन्हें खलता है। प्रस्तुत कहानी का नायक हामिद ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधि है। अन्यबालकों की तरह वह नहीं हैस जो मिठाई और खिलौनों में अपने मेले का आनन्द साकार करते हैं। हामिद विषमता और परेशानी  दूर करने के लिए अपनी बूढ़ी दादी के लिए लोहे का चिमटा खरीदता है। रोटियाँ उतारते समय उसकी दादी के हाथ की ऊँगलियाँ जलती है। यह सब सोच कर वह अपने खिलौने खरीदने के पैसे चिमटा खरीदने के लिए व्यय करता है। इस कहानी में बाल-मनोविज्ञान की सरस एवं मार्मिक झाँकी प्रस्तुत की गई है।

प्रेमचन्द की महत्त्वर्ण कहानियों में 'ईदगाह' एक है।

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

## 4. 'बेटों वाली विधवा' कहानी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथावस्तु
3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन
5. देश-काल एवं वातावरण
6. भाषा - शैली
7. उद्‌देश्य

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट' तथा 'कलम का सिपाही' मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरुक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सो कहानियाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ मानसरोवर के आठ खण्डों में सकलित हैं।

### 2. कथावस्तु :-

पण्डित अयोध्या नाथ का देहान्त होता है। चार बेटे और एक बेटी उनकी सन्तान है। पक्का मकान, दो बगीचे, कई हजार के गहने और बीस हजार नकद सम्पत्ति से परिवार परिपुष्ट है।

पण्डित अयोध्यानाथ की पत्नी फूलमती पति के जीवित समय घर की मालकिन एवं आदरणीया रहती है। चारों लडके एक-से -एक सुशील, चारों बहुएँ एक-से-एक बढ़ कर आज्ञाकारिणी। साँझ होने पर चारों बाहुएँ बारी-बारी से उसके पाँव दबाती हैं, वह स्नान करके उठती तो साडी छाँटती हैं। सारा परिवार फूलमती के इशारे पर चलता रहता है। बडा लडका कामता एक दफ्तर में नौकर है, छोटा उमानाथ डॉक्टरी पास कर चुका है, तीसरा दयानाथ बी.ए.फेल है, चौथा  सीतानाथ बी.ए.पास करके एम.ए. की तैयारी में लगा हुआ है।

चालीस वर्षों से हर मामले में फूलमती  की बात सर्वमान्य रहती हैं। 'काल की गति टारे नहिं टरै' के अनुसार परिवार में बहुत से परिवर्तन आते हैं, फूलमती की बात का कोई आदर नहीं रहता ।

बडा लडका कमतानाथ खुलकर माँ का विरोध करता है। उमानाथ और दयानाथ अपने-अपने कारोबारों के लिए माँ फूलमती का जेवर बेच डालते हैं। धीरे-धीरे उसका स्तर गिरता जाता है और वह निरादर का केन्द्र बनती है। बडा लडका कामतानाथ कटु स्वर में कहता है - "आप को कुछ भी खर्च करने  का अधिकार नहीं है।" उमानाथ और आगे जाकर कहता है, "माँ का हक केवल रोटी-कपडे का है।"

फूलमती को अनुभव होने लगता है कि उसकी कमर टूट गयी है। पति के मरते ही अपने पेट के लडके उसके शत्रु हो जायेंगे, उसको स्वप्न में भी गुमान नहीं था। जिन लडवों को अपने हृदय का रक्त पिला-पिला कर पाला वही आज उसके हृदय पर आघात कर रहे हैं। अब तक वह स्वामिनी बन कर रही, अब लौंडी बन कर रहना पडा है। वह अपनी दशा पर रोती रहती है। लडकी कुमुद का विवाह चालीस साल की उम्र वाले दीन दयाल से कर वाती है। चारों बेटों ने समझा, मानो उनके हृदय का काँटा निकल गया है।

जी-तोड कर घर का काम करना और अन्तरंग नीति से अलग रहना फूलमती का नियम हो जाता है। सारा घर सोता रहता है और वह आँगन में झाडू लगाती रहती है। आग जला कर चावल-दास की कंकडियाँ चुनती रहती है। उसके मुख पर जो आत्मगौरव झलकता रहता था उसकी जगह आज गहरी वेदना छा जाती है।

काल की गति नहीं रुकती। फूलमती का कमरा घर के सब कमरों में बडा और शानदार है। वह बडी बहू के लिए खाली कर देती है और खुद एक छोटी-सी कोठरी में रहने लगती है। जैसे कोई भिखारिन हो। बेटों और बहुओं से अब उसे जरा भी स्नेह नहीं है। अब वह घर की लौंडी बनती है। वह केवल इसीलिए जीति है कि मौत न आती। सुख या दु:ख का उसे लेरामात्र भी ज्ञान नहीं।

उमानाथ का औषध लय खुलता है, मित्रों की दावत होती है, नाच-तमाशा होता है। दयानाथ के प्रेस खुलने पर जलसा होता है। सीता नाथ को वजीफा मिलने पर विलायत जाता है। फिर उत्सव होता है। कामतानाथ महीने भर टाईफाइड बीमार होता है। दयानाथ अपने पत्र का प्रचार बढ़ाने के लिए एक आपत्तिजनक लेख लिखने पर उसे छः महीनों की सजा दी जाती है। एक फौजदारी के मामले में रिश्वत लेकर गलत रिपोर्ट लिखने पर उमानाथ की सनद छीन ली जाती है।

फूलमती के जीवन में अब कोई आशा, कोई दिलयस्पी, कोई चिन्ता नहीं। उसकी जिन्दगी दो काम हैं - पशुओं की तरह काम करना और खाना, बस! वह बेकहे काम करती है, पर खाती है, विष के कौर की तरह, महीनों सिर में तेल न पडता है, महीनों कपडे न छुलते कुछ परवाह नहीं। वह चेतनाशून्य हो जाती है।

सावन की झडीलगी होती है। आकाश में मटियाले बादल घिर आते हैं। फूलमती घर के सारे बर्तन माँजती है, पानी में भीग कर सारा काम करती है। आग जला कर चूल्हे पर पतीलियाँ चढ़ा देती है। उसी वर्षा में गंगाजल लाने निकलती है।

गंगा समुद्र की तरह बढ़ी होती है। सामने का किनारा क्षितिज से मिला लगता है। किनारे के वृक्षों की केवल फुनगियाँ पानी के ऊपर रह जाती हैं। घाट ऊपर तक पानी में डूब जाते हैं। फूलमती कलसा लिए नीचे उतरती है। पानी भरकर ऊपर जाती रहती है कि पाँव फिसलता हैं। संभल न पाती है और पानी में गिर पडती है। पल भर में वह लहरों में समाजाती है।

### 3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-

कहानी आद्यन्त फूलमती को आधार बनाकर चलती है।

फूलमती पण्डित अयोध्या नाथ की पत्नी है। घनी, सांस्कृतिक एवं आदर पूर्ण परिवार है उसका आज्ञाकारी पुत्र, बारी-बारी से पाँव दबाने वाली बहुएँ और इशारे पर चलनेवाले परिवार की वह मालकिन है।

अयोध्यानाथ का देहान्त होने के पश्चात परिवार में फूलमती का अनादर, अपमान, विरोध एवं धिक्कार होने लगता है, लडके उसका जेवर बेचकर इधर-उधर का कारोबार करने लगते हैं। बहुएँ स्नेहभाव के स्थान पर तिरस्कार प्रकट करती हैं। फूलमती को धीरे-धीरे अनुभव होने लगता है कि उसकी कमर टूट गई है। पति के मरते ही अपने पेट के बच्चे शत्रु हो गये है। वह स्वामिनी के पद पर से लौंडी बनकर घर के काम में सदा लगी रहती है। जी-तोड कर घर का काम करना फूलमती का नियम हो जाता है। आखिर अपना कमरा खाली कर छोटी सी कोठरी में रहना पडता है।

बेटों का करोबार भी बिगड जाता है। फूलमती के जीवन में अब कोई आशा, कोई दिलचस्पी, कोई चिन्ता नहीं रहती। महीनों सिर में तेल न पडता है, महीनों कपडे न घुलते। वह चेतनाशून्य हो जाती है।

सावन के महीने में घर का काम उतार कर फूलमती चूल्हे पर पतीलियाँ चढ़ा देती है। वर्षा में वह गंगाजल लाने निकलती है। बाढ़ उमड कर नदी समुद्र सी लगती है। फूलमती कलसा में पानी भर कर ऊपर जाती रहती है, पाँव फिसलकर जलमग्न हो जाती है।

औषधालय खोलकर मित्रों को दावत देनेवाला उमानाथ, माँ के गहने बेचकर प्रेस सुकने पर जलसा मचाने वाला दयानाथ, वजीफ मिलने पर विलायत जानेवाला सीनानाथ, लडके के यज्ञोपवीत संस्कार पर घूमधाम मचानेवाला कामतानाथ - फूलमती के चारों पुत्ररत्न समाज के लिए कलंक हैं। बेटी उमा, फूलमती के नदी में समाये जाने पर करुणा प्रसारित करने वाले सामाजिक जन आदि का भी कहानी में अपना - अपना स्थान है।

## 4. कथोपकथन :-

'बेटों वाली विधवा' कहानी में कथोपकथन कम हैं, लेकिन वे कहानी के तत्त्व को आगे बढ़ाते हैं। कथोपकथनों में चारित्र्यक विशेषता प्रकट होती हैं। फूलमती और पुत्रों के बीच वार्तालाप देखिए-

फूलमती - किस की राय से आटा काम किया गया?

कामतानाथ - हम लोगों की राय से।

फूलमती - तो मेरी राय कोई चीज नहीं है?

कामतानाथ - क्यों नहीं, लेकिन अपना हानि-लाभ तो हम भी समझते हैं।

इस प्रकार फूलमती और बडी बहू के बीच वार्तालाप देखिए -

फूलमती - जब तक हिसाब - किताब न हो जाय, रुपये कैसे दिये जायेंगे?

बहू - हिसाब किताब सब हो गया है।

फूलमती - किसने किया

बहू - अब मैं क्या जानूँ किसने किया?

जाकर मरदों से पूछो।

कामतानाथ – वह रुपये तुम्हारे नहीं रहे, हमारे हो गये हैं।

फूलमती – तुम्हारे होंगे, लेकिन मेरे मरने के पीछे।

कामतानाथ – नहीं, दादा के मरते ही हमारे हो गये हैं।

फूलमती के गंगा की लहरों में विलीन होते समय- एकने पूछाा – वह कौन बुढ़िया थी?

अरे, वही पण्डित अयोध्यानाथ की विधवा है।

अयोध्यानाथ तो बडे आदमी थे।

उनके लडके बडे–बडे हैं और सब कमाते हैं।

हाँ, सब हैं भाई, मगर भाग्यमें तो कोई वस्तु नहीं।

इस प्रकार कथोपकथन छोटे होकर नाटकीय विधान में रचे गये हैं जिस से पात्रों का मनोभाव व्यक्त होता है।

**5. देश-काल एवं वातावरण :-**

बिशदरी का वातावरण कहानी में एक भाग है।

'बेटों वाली विधवा' कहानी में वातावरण का सजीव निर्माण हुआ है। यह कहानी प्राय: अस्सी साल के पहले रची गयी है जो वातावरण आज भी विद्यमान है। पिता के जीवित रहते तक माँ एक दीवी मानी जाती है, पिता के चलबसने के पश्चात माँ एक लौंड बन कर घर कारारा कामा –काज सिर पर लादती है। उस को पूछने वाला कोई नहीं रहता । बेटे–बहू अपने–अपने सुख –भागों में लिप्त होते हैं।

**6. भाषा - शैली :-**

कहानी की भाषा व्यावहारिक खडीबोली है। स्वादु तथा शीघ्र शैली में त्वरित गति में कहानी आगे बढ़ती है। पाँव दबाना, साडी छाँटना, खून का घूँट पीकर रह जाना, हृदय का काँटा निकल जाना, बेकसों का अवलंब, अपनी दशा पर रोना, विषके कौर निगलना, राज करना आदि मुहावरों का सफल प्रयोग हुआ है।

**7. उद्देश्य :-**

मातृदेवो भवा; यत्र नार्युस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता: आदि सूक्तियाँ भारत के कोने–कोने में हर समय–हर व्यक्ति रटता रहता है। किन्तु नारी का दमन जितना भारत में होता रहा है, उतना प्राय: बहुत

कम प्रान्तों में होता होगा। जननी फूलमती का स्थान गिर कर लौंडी तक बन जाती है। वह निरादर तथा अपमानों का केन्द्र बनती है।

अपने पेट के लडकों की दृष्टि में फूलमती का स्थान देखिए -

''आप को कुछ भी खर्च करने का अधिकार नहीं है।'' **- कामतानाथ**

''माँ का हक केवल रोटी - कपडे का है।'' **- उमानाथ**

''पति के मरते ही अपने पेट के लडके उसके (माँके) शत्रु हो जाते हैं'' - यह विषय बताना ही कहानी कार प्रेमचन्द का उद्देश्य है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

## 5. कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'बडे भाई साहब' की समीक्षा कीजिए।

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट', तथा 'कलम का सिपाही', मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर अपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ मानसरोवर के आठ खण्डों में संकलित हैं।

'बड़े भाई साहब' कहानी प्रेमचन्दजी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इसमें बाल-मनोविज्ञान का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है।

1. कथानक, 2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन अथवा से वाद, 4. देशकाल एवं वातावरण चित्रण, 5. भाशा - शैली, 6. शीर्षक।

### 1. कथानक :-

कथानक इस कहानी में नाममात्र का है। दो भाई होस्टल के विद्यार्थी हैं। बड़ा भाई पढ़ने में दिन-रात लगा रहता है, परन्तु मंद बुद्धि होने के कारण परीक्षा में सफल नहीं होने पाता। छोटा भाई खेल-कूद में समय अधिक देता है, परन्तु तेज बुद्धि होने के कारण वह परीक्षा में सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करता है। बड़ा भाई मंद बुद्धि होने की दुर्बलता पर पर्दा डालने के लिए छोटे भाई को खेलने-कूदने से मन हटाक खूब पढ़ने का उपदेश दिया करता है।

जब-जब बड़े भाई साहब फेल होते और छोटा भाई उत्तीर्ण होता, तब-तब बड़े भाई ने छोटे भाई के उत्तीर्ण होने को 'अंधे के हाथ बटेर लगना' बताया और अपने फेल होने का कारण परीक्षाकों की असावधानी बताया। छोटा भाई अपना अधिकांश समय खेलने में लगा देता था, बड़े भाई साहब ने उसका

टाइम-टेबिल बना दिया। छोटा भाई उस पर चलने में असमर्थ रहा। छोटा बेतहाशा दौड़ रहा था। सहसा बड़े भाई साहब से छोटे भाई की मुठभेड़ हो गयी। वे बाजार से लौट रहे थे। उन्होंने नहीं छोटे भाई का हाथ पकड़ लिया और पतंग के पीछे दौड़ने के लिए लज्जित करने लगे। जब छोटे भाई ने आँखों में आँसू भरकर कहा कि आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सच है। गलती मेरी ही है। तभी एक कटी पतंग ऊपर से निकली, लम्बी होने के कारण बड़े भाई साहब ने उसे पकड़ लिया और होस्टल की ओर बेतहाशा भागे। छोटा भाई उनके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

इस कहानी का मुख्य उद्देश्य वास्तव में बड़े भाई साहब का चरित्र-विश्लेषण करना ही है। इसलिए कथानक में अन्य कोई विशेषता नहीं है। उसमें किसी प्रकार की घटनाओं का चित्रण नहीं है। कहानी के चरित्र-प्रधान होने से कथानक का रूप गौण हो गया है। कहानी में उसका विशेष महत्त्व नहीं है।

## 2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

प्रस्तुत कहानी वस्तुतः चरित्र-प्रधान कहानी है। इस कहानी में दो प्रमुख पात्र - बड़े भाई साहब और छोटे भाई के चरित्र-विश्लेषण द्वारा बाल-मनोविज्ञान का प्रप्तिपादन करना ही कहानीकार का मुख्य उद्देश्य है। सारी कहानी प्रारम्भ से लेकर अन्त तक दोनों भाइयों की चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए चली है। छोटा भाई पढ़ने-लिखने की अपेक्षा खेल-कूद में अधिक रुचि लेता है, परन्तु कक्षा में सदैव प्रथम आता है। बड़े भाई साहब पढ़ने-लिखने में ही दिन-रात जुटे रहते हैं, पर कक्षा में पास नहीं होने पाते। वे अपनी कमजोरी को छोटे भाई को उपदेश देने में छिपाते हैं।

इस कहानी में दो पक्ष हैं - छोटा भाई और बड़ा भाई। पूरी कहानी छोटे भाई ने आत्मकथा के रूप में वर्णित की है। उसने अपने बड़े भाई तथा अपने विषय में जो कहा है उसी से इन दोनों के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है-

### (क) बड़े भाई का चरित्र :-

इस कहानी में प्रधान पात्र बड़ा भाई है। उसी के आधार पर कहानी का नाम बड़े भाई साहब रखा गया है। बड़े भाई साहब अत्यन्त परिश्रमी हैं। वे रात-दिन पढ़ने में लगे रहते हैं। खेलने से उन्हें घृणा है। इतने पर भी परीक्षा में बार-बार अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। उनका छोटा भाई प्रतिवर्ष परीक्षा उत्तीर्ण करता है और कभी तो प्रथम स्थान भी पा जाता है। बड़े भाई साहब इतने पर भी उसे डाँटते-फटकारते रहते हैं तथा अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते रहते हैं। कनकौआ लेकर होस्टल की ओर दौड़ना यह सिद्ध करता है कि बड़े भाई साहब की गम्भीरता वास्तविक नहीं है।

### (ख) छोटे भाई का चरित्र :-

छोटा भाई इस कहानी का वक्ता है। उसका मन पढ़ने में नहीं लगता। परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर उत्तीर्ण होना उसे गर्व से भर देता है। बड़े भाई साहब की उबऊ बातें उसकी समझ में नहीं आतीं। वह उनसे सहमत नहीं है, फिर भी बड़े भाई को आदर देने के हेतु वह उनकी बातों का विरोध नहीं करता।

इस प्रकार चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह कहानी बड़ी सुन्दर बन पड़ी है। लेखक ने इसमें बाल-मनोविज्ञान का बड़ा कुशल प्रतिपादन किया है।

### 3. कथोपकथन :-

कथोपकथन के अंश इस कहानी में कम हैं। इसका कारण यही है कि यह कहानी नाटकीय शैली में न लिखी जाकर वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। इसके वर्णन बहुत लम्बे हो गये हैं, परन्तु भाषा के प्रवाह ने उन्हें बड़ा रोचक बना दिया है। सारी कहानी का वर्णन छोटे भाई के मुँह से हुआ है। फलत: कथोपकथनों का इस कहानी में विशेष महत्त्व नहीं है। उदाहरण के रूप में एक ऐसा स्थल प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे किसी प्रकार संवाद कहा जा सकता है -

बड़े भाई साहब ने कहा - ''तो भाईजान! यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतन्त्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरी बातें तुम्हें जहर लग रही हैं।''

मैंने सजल आँखों से कहा - ''हरगिज नहीं। आप जो फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है और आपको उसको कहने का अधिकार है।''

### 4. देश-काल एवं वातावरण :-

जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, प्रस्तुत कहानी घटना-प्रधान न होकर चरित्र-प्रधान है। इस कहानी में स्कूली छात्रों के रूप में कहानी के प्रमुख पात्रों के चरित्र पर कहानीकार ने प्रकाश डाला है। छात्रावास का जीवन कैसा होता है, वहाँ हमारे छात्र किस प्रकार पढ़ाई-लिखाई करते हैं, इन सब बातों के बड़े गहरे चित्र कहानीकार ने चित्रित किए हैं। यही नहीं, हमारे स्कूलों में आज जिस प्रकार की शिक्षा छात्रों को दी जाती है, छात्र समुदाय के लिए वह अनुकूल नहीं होने पाती। इन सब बातों को भी कहानीकार प्रकाश में लाया है। इस कहानी का देश अर्थात् स्थान कोई भी शहर या कस्बा हो सकता है। इसका काल अर्थात् समय भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने से बहुत पूर्व का है। इसका प्रमाण यह है कि भारत के स्वन्त्र होने के लगभग बारह वर्ष पूर्व ही प्रेमचन्दजी की मृत्यु हो चुकी थी।

इस कहानी में प्रेमचन्द ने पतंग उड़ाने वाले बच्चों के हुड़दंग का वर्णन किया है। इस वातावरण को प्रस्तुत करते हुए प्रेमचन्दजी ने छोटे भाई से कहलवाया है – ''मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया और अब सारा समय पतंगबाजी की भेंट होना था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग लूटना आदि की तैयारियाँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह सन्देह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान मेरी नजरों में कम हो गया है।''

एक दिन संध्या के समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा, दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नये संस्कार ग्रहण करने जा रही है। शासकों की पूरी सेना लागी और झाड़दार बाँस लिए उसका स्वागत करने को दौड़ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटर कारें हैं, न ट्रेन, न गाड़ियाँ।

इस कहानी की सर्वजन मनोहारिणी भाषा का एक स्थल उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है –

''भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़ा देखता हूँ। इस साल पास हो गये और दरजे में अब्वल आ गये तो तुम्हारा दिमाग हो गया है, मगर भाईजान! घमण्ड तो बड़ों-बड़ों का नहीं रहा, तुम्हारी क्या होस्ती है? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया। यों ही पढ़ गये? महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं है, चीज है उससे बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ते हो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भू-मण्डल का स्वामी था, ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते।''

### 5. भाषा - शैली :-

इस कहानी की सबसे प्रधान विशेषता इसकी भाषा-शैली है। लोच और रवानगी से भरी सरल, सरस मुहावरेदार भाषा के प्रेमचन्द धनी हैं। इस दृष्टि से यह कहानी प्रेमचन्दजी की सर्वोत्तम कहानी है। भाषा का ऐसा चलता हुआ व्यावहारिक रूप अन्यत्र नहीं मिल सकता। भाषा में कहीं भी कृत्रिमता नहीं, आडम्बर नहीं। पग-पग पर उसकी सहजता तथा सरलता फूट पड़ती है। मुहावरों के सफल प्रयोग ने भाषा के सौन्दर्य में चार चाँद जड़ दिये हैं। उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत सभी प्रकार के शब्दों का भावों के अनुकूल कहानीकार ने प्रयोग किया है।

### 6. उद्देश्य एवं शीर्षक :-

'बड़े भाई साहब' कहानी चरित्र-प्रधान कहानी है और बड़े भाई साहब का चरित्र-चित्रण करना ही इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है। अत: इस कहानी का 'बड़े भाई साहब' शीर्षक सर्वथा उचित है। 'बड़े भाई साहब' शीर्षक को पढ़कर हमें यह भी बोध होता है कि बड़े भाई के साथ कहानी में छोटा भाई भी होना चाहिए वस्तुत: कहानी में ऐसी ही बात है। छोटा भाई कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र है। उसका चरित्र बड़े भाई साहब के चरित्र का उद्घाटन करने में सहायक सिद्ध हुआ है। फलत: 'बड़े भाई साहब' शीर्षक को इस कहानी के लिए सब दृष्टियों से उचित कहा जा सकता है।

### निष्कर्ष :-

अन्त में निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि यह कहानी बाल-मनोविज्ञान पर लिखी गई हिन्दी की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है। कहानी - कला के सभी तत्त्वों की दृष्टि से यह कहानी बड़ी सफल और सुन्दर रचना बन पड़ी है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

## 6. 'नशा' कहानी का तात्त्विक अनुशीलन कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथानक
3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन
5. देश-काल एवं वातावरण
6. भाषा - शैली
7. उद्‌देश्य

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट', तथा, 'कलम का सिपाही', मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ, प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं।

### 2. कथानक :-

ईश्वरी जमींदार का लड़का था। एक गरीब क्लर्क कोई दलील न थी। वह प्रकृति से ही विलासी और अबकी दशहरे की छुट्टियों में मैंने निश्चत किया कि घर न जाऊँगा। जो कुछ देते हैं वह उनकी हैसियत से बहुत ज्यादा है। लेकिन जब ईश्वरी ने मुझे अपने घर चलने का नेवता दिया, तो मैं बिना

आग्रह के राजी हो गया । ईश्वरी के साथ परीक्षा की तैयारी खूब हो जायेगी। वह अमीर होकर भी मेहनती और जहीन है। निन्दा बिगड जायेगा और मेरे घरवालों को बुरा लगेगा।

सेकेण्ट क्लास तो क्या मैंने कभी इण्टर क्लास में भी सफर बजे रात को आती थी, यात्रा के हर्ष में हम शाम को ही स्टेशन जा पहुँचे। मालिक कौन है और पिछलग्गू खानसामों ने ईश्वरी को सलाम किया। मेरी ओर देखा भी नहीं। की लालच से इतना इनके रक्त में प्रयाग तो प्रतापगढ़ जाकर सेवक भी इतना समझता है, और बीचवाले बर्थ पर बैठ गया। मुरादाबाद मुसलमान था, रियासत अली; दूसरा ब्राह्मण था, रामहरख अपरिचित नेत्रों से देखा, तुम कौवे होकर हंस के साथ कैसे?

साहब क्या आपके साथ पढ़ते हैं? साथ पढ़ते भी हैं, और साथ रहते भी हैं? इलाहाबाद पड़ा हुआ हूँ, नहीं कब का लखनऊ चला आया होता। ओर चकित नेत्रों जाने की चेष्टा करते हुए जान पड़े।

महात्मा गाँधी के भक्त हैं ढाई लाख सालना की रियासत आपने महाराज चाँगली को देखा होता, सफेद झूठ उस वक्त उसके प्रत्येक समीपतर आता कलाँ-रास घोड़े हमारे लिए तैयार खड़े थे। मेरी तो जान ही निकल गयी। घर क्या था, किला था। हमामबाड़े का-सा फाटक, नौकरों का कोई हिसाब नहीं, एक हाथी बाँधा हुआ। ईश्वरी ने अपने पिता, सबसे मेरा परिचय कराया, और उसी अतिशयोक्ति के साथ। घर के लोग भी मेरा सम्मान हुजूर-हुजूर कहने लगे। बड़े शैतान हो यार क्यों पलीद कर रहे हो?

नाई हमारे पाँव दबाने आया। रईसों का गधापन पोतड़ों का रईस बनने का स्वाँग भर रहा था! कहार ने उसके पाँव धोये। मैंने भी पाँव बढ़ा दिये। कहार ने मेरे पाँव भी धोये। मेरा वह विचार न जाने कहाँ चला गया था। देहात में एकाग्र होकर खूब पढ़ेंगे; सारा दिन सैर-सपाटे नदी में बजरे सैर कर रहे हैं; मछलियों या चिडियों खेल कहीं पहलवानों की कुश्ती देख रहे हैं; कहीं शतरंज मँगवाता और कमरे में 'स्टोव' पर आमलेट बनते। आदमी नहलाने को पंखा झलने मैं महात्मा गाँधी का कुँअर चेला मशहूर कोई साढ़े ग्यारह बजे महरा आया।

ईश्वरी एक दिन किसी जगह दावत में गया हुआ था। शाम हो गई; लैम्प न जला। पत्र आया रखा हुआ था। उन्हीं पर उबल पड़ा, ऐसी उल्लू हो रियासत अली ने काँपते हाथों से लैम्प मनचला आदमी था, महात्मा गाँधी का चेला समझकर मेरा बड़ा लिहाज करता था; यहाँ सुराज जायेगा तो जमींदार न रहेंगे। मैंने शान जमाई यह लोग गरीबों खून चूसने के सिवा और क्या करते हैं? ठाकुर मेरे पाँव दबाने लगा। बड़ा जुलुम करते हैं भी हुजूर अपने इलाके में थोड़ी-सी जमीन दे दें; तो चलकर वही आपकी सेवा में रहें। अख्तियार नहीं है मैं सबसे पहले तुम्हें बुलाऊँगा। तुम्हें मोटर-ड्राइवरी सिखाकर अपना अपनी स्त्री को खूब पीटा और गाँव के महाजन से लड़ने पर तैयार हो गया।

मैं भी अपना पार्ट खूब सफाई से खेला और अपनी तो चाहता था, हरेक को अचन्छा इनाम दूँ। सेकेण्ड क्लास में तिल रखने की जगह इण्टर क्लास की हालत उससे भी बड़ी मुशिकल से तीसरे दर्जे में जगह मिली। अंग्रेजी राज्य की तारीफ करते जा रहे थे। खुद बादशाह पीठ पर गठरी रखने की जगह पीठ पर बाँधे हुए था। गठरी से रगड़ना मुझे गँवार का आकर मेरे मुँह पर खड़ा उठकर दो-तीन तमाचे मुझ पर बौछार तो अव्वल दर्जे में क्यों नहीं बैठे? और मेरा नशा कुछ-कुछ उतरता हुआ मालूम होता था।

**3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-**

'नशा' कहानी में प्रधानथा दो पात्र हैं। ईश्वरी एक जमीन्दार का लडका है और लेख का एक गरीब क्लर्क का लडका है, जिसके पास मेहनत मजदूरी के शिवा और कोई जायदाद न थी।

ईश्वरी और लेखक प्रयाग में पढ़ते रहते हैं।

**ईश्वरी :-**

ईश्वरी की दृष्टि में सारे मनुष्य बराबर नहीं होते। लेखक इस विषय पर ईश्वरी से वाग्विवाद करते रहते हैं। ईश्वरी प्रकृति से ही विलासी और ऐश्वर्य-प्रिय है। वह नौकरों पर सदा दबाव रखता है। दशहरे की छुट्टियों लेखक को भी साथ लेकर वह अपने गाँव जाता है। वहाँ अपनी जमीन्दारी में लेखक की गरीबी को छिपाने के लिए उसे महात्मा गाँधी का भक्त बताता है और ढ़ाई लाख सालाना की रियासत है। नाई आकर पाँव दबाना, कहान पाँव घोमा आदि जमीन्दारी रिवाजों का वह आदी है।

**लेखक :-**

लेखक एक गरीब परिवार का लडका है जिसके पास मेहनत-मजदूरी के सिवा और कोई जायददा नहीं। ईश्वरी के साथ किले में जमीन्दारी विलासमय जीवन कुछ दिन बिताने पर उसे नशा चढ़ जाता है। रेल में जो गरीब - देहाती लोग चढ़ते हैं उन पर चिढ़ता है। आखिर ईश्वरी - "What an idiot you are" कहने से उसका सारा नशा कुछ-कुछ उतरता हुआ मालूम होता है।

**4. कथोपकथन :-**

कथोपकथन पात्रों की आत्मा है। लेखक रेलयात्रा में अन्य यात्री को तमाचे देता है, तो चारों ओर से उस पर बौछारें पडने लगती हैं -

"अगर इतने नाजुक मिजाज हो, तो अव्वल दर्जे में क्यों नहीं बैठते?"

"कोई बडा आदमी होगा जो अपने घर का होगा मुझे इस तरह मारते, तो दिखा देता।"

"अमीर होकर क्या आदमी अपनी इन्सानियत बिलकुल खो देता है?"

"यह भी अंग्रेजी राज है, जिसका आप बरवान कर रहे थे!"

"दफतरन माँ घुसन तो पावत नहीं, उस पर इत्ता मिजाज!"

"What an idiot you are!"

**5. देश-काल एवं वातावरण :-**

अंग्रेजी राज का समय था। जमीन्दारी वातावरण में नौकरों को फटकारना, नाई पाँव दबाना, महरा पाँव घोना आदि विषयों का प्रस्ताव हुआ है। रेल गाडी में उन दिनों प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय कक्ष होने का विवरण है। जमीन्दार का आदर हर जगह होता है क्योंकि वह पैसा बिखेरता है।

**6. भाषा-शैली :-**

नशा कहानी उर्दूमिक्षित खडीबोली में अग्रसर होती है। भाषा मुहावरे दार होकर शैली में गति है। गठरी रगडना, पौछार पडना, तमाचे लगाना, बेदर्दी होना, बदतमीजी, सफेद झूठ बोलना, रईसों का गधापन, पाँव दबाना, गरीबों कर खून चूसना आदि महावरों का प्रयोग हुआ है। पाठक कहानी एकदी साँस में पढ़ लेता है। कहानी आत्म-कथात्मक शैली में चलती है।

**7. उद्देश्य :-**

जमीन्दारी जीवन विधान में जमीन्दार तो जमीन्दार होते हैं। एक गरीब को कुछ दिन जमीन्दारी विलास जीवन प्राप्त होने पर उसकी आँखें चढ़ जाती हैं। पहले जमीन्दरी विधान के विरुद्ध बर्ताव करनेवाला। झूठा जमीनदार बनकर शान चलाने लगता है। 'What an idiot you are!' शब्दों को सुनने से उसका नशा उतर जाता है।

'नशा' कहानी चरित्र तथा वातावरण प्रधान है जो समूचे यथार्थवाद पर ठहरती है शीर्षक 'नशा' अत्यन्त उपयुक्त है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*

## 7. कहानी कला के तत्त्वों पर 'पूस की रात' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथानक
3. पात्र तथा चरित्र- चित्रण
4. कथोपकथन
5. भाषा-शैली
6. देशकाल एवं वातावरण
7. उदेदेश्य
8. विशेषताएँ

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट', तथा, 'कलम का सिपाही', मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कृतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ, प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी हैं। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं।

'पूस की रात' मुन्शी प्रेमचन्द की यथार्थवादी रचना है। ग्रामीण किसान के दयनीय जीवन को लेकर यह कहानी लिखी गयी है। सदा ऋण के बोझ से दबे हुए ग्रामीण किसान को आधार बना कर मुन्शी प्रेमचन्द 'पूस की रात' कहानी प्रस्तुत करते हैं।

**2. कथानक :-**

प्रेमचन्द ने अपनी सभी कहानियों करे कथानक वास्तविक जीवन से लिये है। 'पूस की रात' का काथानक ऐसे किसान के जीवन की गाथा है जो छोटा-सा किसान होते हुए भी मजदूरी करने पर विवश है। खेतों में बहुत कम उपज होती है। हल्कू मजदूरी करके कम्बल खरीदने के लिए जो धन एकत्र करता है, वह जमींदार की गालियों और घुड़कियों से डरकर लगान के रूप में दे देता है। उसे पूस की कड़कड़ाती ठण्ड वाली रात में गाढ़े के पुराने चादरे के सहारे सोना पड़ता है। उसके साथ में जबरा नाम का पालतू कुत्ता है। वह भी ठण्ड से परेशान हल्कू बदबू मारते कुत्ते को प्यार से पुचकारकर अपनी गोदी में सुला लेता है। किसी जानवर की आहट पाकर जबरा भाग जाता है तो हल्कू फिर ठण्ड से काँपने लगता है। विवश होकर वह थोड़ी दूर पर स्थित बाग में जाकर सूखे पत्ते एकत्र करके आग जलाकर तापने लगता है और आग बुझ जाने पर राख की गर्मी के सहारे सो जाता है। खेत में नीलगायें फसल खाती रहीं और जबरा भौंकता रहा, पर ठण्ड में हल्कू की हिम्मत खेत तक जाने की नहीं हुई। सबेरे हल्कू की पत्नी मुन्नी ने उसे जगाकर बताया कि सारी फसल नष्ट हो गई। यह सुनकर हल्कू को इस बात का सन्तोष हुआ कि अब ठण्ड में बाहर नहीं सोना पड़ेगा।

'पूस की रात' कहानी का यह संक्षिप्त एवं सुसंगठित कथानक केवल एक रात का है। भारतीय कृषक की विपन्नता एवं विवशता स्पष्ट करने में इसकी घटनाएं सर्वथा समर्थ हैं।

**3. पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-**

इस कहानी में तीन पात्र हैं - मुन्नी अर्थात् हल्कू किसान की पत्नी, हल्कू एवं उसका पालतू कुत्ता जबरा। इस कहानी का प्रधान पात्र हल्कू ही है जोभारतीय किसान का प्रतिनिधि है। पात्र-योजना की दृष्टि से यह कहानी अत्युत्तम है। अधिक पात्रों वाली कहानी में प्रमुख पात्र के चरित्र पर ठीक से प्रकाश नहीं पड़ पाता। हल्कू की पत्नी मुन्नी निर्भय, स्वाभिमानिनी एवं विचारशील है। मजदूरी से कमाये हुए तीन रुपये वह जमींदार के सेहना को नहीं देना चाहती। हल्कू गालियों एवं धमिकयों से डरता है, पर मुन्नी निर्भय होकर कहती है - ''गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?''

मुन्नी की अपेक्षा हल्कू झंझट से दूर रहने में ही प्रसन्न है। हल्कू की सहनशीलता रात में खेत पर गाढ़े की पुरानी चादर के सहारे सोने से स्पष्ट है। रात की ठंड हल्कू को बदबूदार कुत्ते को दोगी में सुलाने पर विवश कर देती है। हानि-लाभ की अपेक्षा हल्कू को ठण्ड से बचनेका सुख अधिक आकर्षक प्रतीत होता है। हल्कू को मजदूरी करके मालगुजारी चुकाने में प्रसन्नता है, पर रात में खेत पर सोना बुरा लगता है।

तीसरा पात्र जबरा एक स्वामिभक्त कुत्ता है। उसका मालिक ठण्ट के कारण कर्तव्य में चूक कर दे, पर वह अपना कर्तव्य पूरा करता है। जानवर की आहट मिलते ही उसका हल्कू की गोद से उठकर भाग जाना एवं बाग में अलाव की राख की गर्मी के सहारे सोते हुए हल्कू को भौंक-भौंककर जगाना इसका प्रमाण है।

**4. कथोपकथन :-**

कहानी में स्वाभविकता लाने के लिए संवाद या कथोपकथन रखे जाते हैं। इस कहानी में कथोपकथन कम हैं, वर्णन अधिक हैं। इसका कारण कहानी का छोटा होना एवं पात्रों की संख्या कम होना है। इस कहानी में जो भी संवाद हैं, वे छोटे, सरल एवं स्वाभाविक हैं। उनसे कथानक को आगे बढ़ाने एवं पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने में पूरी सफलता मिली है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित संवाद प्रस्तुत हैं -

मुन्नी कह रही थी - ''क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गये और उधर सारा खेत चौपट हो गया।''

हल्कू ने उठकर कहा - ''क्या तू खेत से होकर आ रही है?''

मुन्नी बोली - ''हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसा भी कोई सोता है! तुम्हारा यहाँ मड़ैया डालने से क्या लाभ हुआ?''

हल्कू ने बहाना किया - ''मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूँ।''

**5. भाषा-शैली :-**

प्रेमचन्द भारत के ग्रामीण जीवन एवं वहाँ की दलित व शोषित जनता के कथाकार हैं। उनकी भाषा सरल एवं व्यावहारिक खड़ीबोली है। उनकी भाषा में पात्रों के अनुसार परिवर्तन होता है। इस कहानी के पात्र ग्रामीण हिन्दू हैं, उनके संवादों की भाषा सरल होनी ही चाहिए। लेखक ने वर्णन करने

के लिए भी सरल एवं प्रवाहमयी भाषा का ही प्रयोग किया है, जैसे-''जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा की धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से न जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थी, पर उसे वह अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था जो इधर महीनों से उसे न मिला था।''

### 6. देशकाल एवं वातावरण :-

कहानी जिस स्थान एवं समय अर्थात् देशकाल से सम्बन्धित हो, उसे भी प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। इसके बिना भी कहानी में वास्तविकता नहीं आती। यह कहानी अंग्रेजी शासन के ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित है। लेखक जमींदार द्वारा सेहना भेजकर मालगुजागी मँगाने और किसान द्वारा मालगुजारी न दिये जाने पर उसे धमकाने एवं गाली देने का वर्णन करके अंग्रेजी राज के समय का वातावरण प्रस्तुत करता है। हल्कू का पुरानी चादर के सहारे खेत पर रात में सोना, कुत्ते का साथ होता,बार-बार चिलम पीना एवं बागद में जाकर सूखे पत्तों की आग से तापना ग्रामीण जीवन की विवशता को प्रस्तुत कर देता है।

### 7. उद्देश्य :-

प्रेमचन्द शोषित, दलित एवं अभावग्रस्त वर्ग के सच्चे हिमायती हैं। मानव-मानव के बीच का वैषम्य उन्हें अखरता है। प्रस्तुत कहानी का नायक हल्कू ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधि है। वह रात-दिन परिश्रम करके भी खेत में इतनी उपज नहीं कर पाता कि लगान की 'बाकी' तक चुका दे। उसे पूरा लगान चुकाने को दूसरों के खेतों में मेहनत-मजदूरी करनी पड़ती है। महाजन और जमींदार जिनका प्रतिनिधि सेहना है, न जाने कितने हल्कू - जैसे मजदूर कृषकों का शोषण करते हैं। उत्तर प्रदेश के इस कृषक वर्ग के अभ्यावग्रस्त जीवन का चित्रण इस कहानी में प्रेमचन्द का प्रमुख उद्देश्य रहा है। पूस की शीत से भरी रात काटने को बेचारे हल्कू ने जो मेहनत-मजदूरी करके तीन रुपये एकत्र किये थे, वे गला छुड़ाने के लिए सेहना को भेंट कर दिये। ऋणग्रस्त की कितनी विपन्नावस्था है? बेचारा एक कम्बल तक नहीं खरीद पाता और रात भर पूस के महीने में ईख के पत्तों से बनी मढ़ैया में ठिठुरता रहता है। शीत से उसका रकत तक जम जाता है। अन्त में बेचारा शरीर को गर्माकर सो जाता है। उधर जबरा के गला फाड़कर भौंकने के बावजूद भी नीलगायें सारी फसल चौपट कर जाती हैं। भारतीय कृषकों के इस अभावग्रस्त जीवन के प्रति उत्पन्न संवेदना को कहानी के रूप में प्रस्तुत करना कहानीकार का उद्देश्य रहा हैष ग्रामीण कृषक के जीवन की अत्यन्त करुण परिस्थिति इस कहानी में साकार हुई है। कहानीकार पाठकों को बताना चाहता है कि परिश्रम करने वाले के लिए पर्याप्त वस्त्रों का भी अभाव है और शोषकों को वैभव और विलासमय जीवन बिताने के लिए धन की कमी नहीं है। यह भारतीय समाज की घोर

विषमता है। श्रमिक वर्ग के प्रति यह अन्याय है। कृषकों का अभावग्रस्त जीवन भारतीय समाज के ललाट का कलंक है, जिसे मिटाना साहित्यकार का परम कर्तव्य है। महाजनों तथा जमींदारों के अत्याचारों की ओर संकेत करना भी कहानीकार का उद्देश्य रहा है। इसके अतिरिक्त, फूस की रातों के घोर शीत और वातावरण का चित्रण भी प्रेमचन्दजी का लक्ष्य रहा है। कृषकों में चिलम पीने का व्यसन, आलस्य के कारण कर्तव्य से पलायनवाद तथा स्वामिभक्त कुत्ते का मनोवैज्ञानिक चित्रण गौण रूप से कहानीकार के उद्देश्य रहे हैं। वस्तुत: प्रेमचन्द ने अभावग्रस्त कृषक के यथार्थ जीवन को प्रस्तुत कहानी में साकार किया है।

सारांश यह है कि तात्विक दृष्टि से प्रस्तुत कहानी में प्रमचन्दजी का कहानी-शिल्प विशेष रूप से प्रशंनीय है। यह कहानी वातावर-प्रधान है जो यथार्थ का चित्रण करते - करते अपने झीने आवरण में आदर्श सामाजिक व्यवस्था की ओर लोक-जीवन का ध्यान आकृष्ट करती है। कथानक सूक्ष्म है, वातावरण सही है, सम्वाद स्फूर्त एवं स्वाभाविक हैं, भाषा मुहावरेदार एवं सरल है और उद्देश्य शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति जगाकर 'सर्वे भवन्तु सुखिन: ' की ओर उन्मुख करना है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी कहानी-शिल्प की दृष्टि से प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है जो युग-बोध की गरिमा से मण्डित, यथार्थ से अनुप्राणित और आदर्श की ओर उन्मुख है।

**8. विशेषताएँ :-**

प्रेमचन्द पूस की रात कहानी में भारतीय किसान की दयनीय स्थिति का विवरण देते हैं। फसल उगायें किसान, कीचड में काम करें किसान, ठण्डी रातों में खेत की रखवाली करें किसान, भूखे रहें किसान किन्तु उपज भोगों साहूकार और लूटखोर।

भारतीय किसान के हीन, दीन तथा नैराश्य जीवन का यथार्थवर्णन करना 'पूस की रात' कहानी का उद्देश्य है। कथानक लंबी न होकर एक रात की घटना तक सीमित है। पात्रों का चरित्र-चित्रण यथा-तथ्य हुआ है। पूस की ठण्ड में सोने से डरनेवाला और ऋणदाता की गालियों से डरनेवाला दीन हल्कू प्रधान पात्र है। कथा की पुष्टि में यथार्थ जीवन को लेकर चलनेवाली 'मुन्नी' है। जबरा किसान का विश्वासपात्र कुत्ता है। ऋण के बोझ से वे दबते रहते हैं। किसान के घर के गरीबी वातावरण का चित्रांकन हुआ है। कथोपकथन छोटे होकर नाटकीय विधान में चलते हैं। उर्दू मिश्रित बोलचाल कीखडी बोली में शीघ्र शैली में कहानी आगे बढ़ती है। प्रेमचन्द अपनी कलम को जिधर चाहे उधर मोड सकते हैं। इसीलिए कलम का सिपाही कहलाते हैं। पूस की रात प्रेमचन्द की उच्च कोटि की यथार्थवादी सफल कहानियों में एक है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख़ मौला अली*

## 8. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी का तात्त्विक विवेचन कीजिए।

**रूपरेखा :-**

1. प्रस्तावना
2. कथानक
3. पात्र ताथा चरित्र - चित्रज
4. कथोपकथन
5. देश-काल एवं वातावरण
6. भाषा-शैली
7. उद्धेश्य
8. शीर्षक

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट' तथा 'कलम का सिपाही' मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कुतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी है। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खणडों में संकलित हैं।

## 2. कथानक :-

जोखी और गंगी दलित परिवार के दम्पति हैं। जोखू लोरा मुँह से लगाता है तो पानी में बदबू आती है। वह पिछले दिन का पानी था। कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरने से बदबू आती है। अब उनको पानी कैसे मिले और कहाँ से लाए।

उस गाँव में और दे कुएँ हैं। एक ठाकुर का और दूसर साहू का ठाकुर के कुएँ के पास जाने की हिम्मत किसी को नहीं, दूर से ही लागे डाँर बताते है। साहू का कुआँ गाँव के दूसरे सिरे पर हैं, परन्तु वहाँ भी पानी कोई भी न भरने देगा। उस गाँव और कोई कुआँ तो नहीं जहाँ पानी प्राप्त हो।

जोखू बहुत दिन से बीमार है। वह प्यास नहीं पाता किहै। पत्नी गांगी से थोडा सा वही गंदा पानी गाँगता है। एक धूँर पाने से कुछ आराम मिले। गंगी पति को पानी न पिलाकर घडे में पानी भर लाने के लिए ठाकुर के कुएँ की ओर चल पडती है। गंगी के जोखऊ रोकना चाहता है, डर के मारे। किन्तु गंगी डरते - डरते ठाकुर के कुएँ के पास पहुँचती है।

रात के नौ बजते हैं। ठाकुर के दरवाजे पर दस-पाँच लोग रहते हैं। घुँघली-घुँघली रोझनी में कगंगी कहीं आड में बैठी रहती है। उस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। गंगी जैसे बदनसीब लोग मात्र वहाँ से पानी न भर सकते, गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबन्दियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगाता है। - ''हम क्यों नीच हैं और वे लोग क्यों ऊँच हैं ? इसलिए कि वे लोग गले में जनेउ पहनते हैं। उन सब का झूठा व्यवहार है। चोर, रिश्वरतखोर जुआ खेलने वाले हैं।''

इतने में किसी के आने की आहट होती है। गंगी घडा और रस्सी उठा कर, झुक झुक कर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खडी होती है। सारा वातावरण ज्ञाति होने के्बाद ठाकुर का्दरवाजा बन्द हो जाता है। क्षणिक सुख की साँस लेकर देने पाँव वह कुएँ के पास पहुँचती है।

गंगीने रस्सी का फंदा घडे में डालती है। दायें -बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखती है, जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख कर रहा हो। पकडी जाने पर माफी या रिआयत की रत्ती भर भी उम्मीद नहीं। अन्त में देवताओं का नाम लेकर कलेजा मजबूत करके गडा कुएँ में डाल देती है।

बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता घडा पानी में गोता लगाया जाता है। दो-चार हाथ गंगी जल्दी-जल्दी चलाती है। घडा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचता है। गंगी झुककर घडे को पकडे लेने जाती है। एकाएक ठाकुर साहब का दखाजा खुल जाता है। प्राय: शेर का मुँह भी इस से अधिक भयानक नहीं होता है। गंगी के हाथ से रस्सी छूट जाती है। रस्सी के साथ घडा घडाम से पानी में गिरता है और कई क्षणों तक पानी में हलकोरे की आताजें सुनाई देती रहती हैं।

''कौन है, कौन है?'' पुकारते हुए ठाकुर कुएँ की ओर आता रहता है और गंगी कुएँ से भाग जाती है।

घर पहुँचने पर लोटा मुँह से लगाये वही गंदा पानी पीते हुए जोखू को देखती है।

## 3. पात्र तथा चरित्र-चित्रण :-

घडे भर पानी के लिए जोखू और गंगी तरसता रहते हैं। गले में जनेऊ पहन कर चोरी या जाल-फरेब कर के झूठे मुकद्दमें चलनेवाले लोग, गडरिए की भेड को चुरा कर खाने वाले ठाकुर, बारहमास जुआ खेलनेवाले पण्डित, घी में तेल मिला कर बेचनेवाले साहू, काम करा कर मजदूरी न देनेवाले जमीन्दार, किसी युवती को रस भरी आँखों से देखने वाले लोग, हर विषय में अपने को ऊँचे समझनेवाले प्रतिष्ठित व्यक्ति आदि-आदि पात्र हमारे सामने आते हैं।

## 4. कथोपकथन :-

ठाकुर का कुआँ कहानी में कथोपकथन अधिक नहीं है। जोखू और गंगी के बीच का वार्तालाप कहानी को अग्रसर करता है। जोखू-दूसरा पानी कहाँ से लाएगी?

''ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?''

''हाथ-पाँव तुडवा आयेगी और कुछ न होगा। ''

ब्राह्म देवता आशीर्वाद देंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं। तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?

पानी भरने वाली कुछ स्त्रियों के वार्तालाप से वातावरण व्यक्त होता है -

''कभी गाँव में जाती हूँ, तो रस भरी आँखों से देखने लगते हैं, जैसे सब की छाती पर साँपलोटने लगता है।''

''हम लोगों को आराम से बैठे देख कर जैसे मरदों को जलन होती है।''

''बस हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।''

## 5. देश - काल एवं वातावरण :-

ठाकुर का कुआँ कहानी वातावरण (समाज) प्रधान है। जाति-पाँत एवं छुआ-छूत के कारण भारत में दीन - दलित प्रजा की दुखद अवस्था का विवरण हुआ है। वायु और जल प्रकृति जन्य होने पर भी दलित लोगों के लिए पहुँच नहीं है। थडे भर पानी के लिए दलित तरसते हैं -'गरीकों का दर्द कौन समझता है' प्रश्न हमेशा-हमेशा के लिए बना रहता है।

**6. भाषा - शैली :-**

प्रेमचन्द की कहानियों की विशेषता भाषा- शैली है। सरल, उर्दू मिश्रित मुहावरेदार भाषा में कहानी ढ़लती है। मुहावरों के सफल प्रयोग ने भाषा के सौन्दर्य में चार चाँद जड दिये हैं।

कुछ मुहावरे –

‘गरीबों का दर्द कौन जानता है।’

‘छाती धक-धक करने लगती है।’

‘लहू थूकता रहा।’

‘रोटी – कपडा पाना’

‘रस भरी आँखों से देखने लगना।’

**7. उद्‌देश्य :-**

भारत में नीच जातिवालों की दुर्दशा का चित्रण करना एवं ऊँच जातिवालों के दुराचारों को सामने लाना काहानी का उद्‌देश्य है।

**8. शीर्षक :-**

‘ठाकुर का कुआँ’ कहानी का केन्द्र बिन्दु है अत: उपयुक्त शीर्षक बना है।

कहानी जितनी छोरी है उतनी महत्त्वपूर्ण तथा हृदय-स्पर्शी है।

**Lesson Writer**

***डॉ. शेख मौला अली***

## 9. 'झाँकी' कहानी का विवेचन कीजिए।

### 1. प्रस्तावना :-

'उपन्यास सम्राट', 'कहानी सम्राट' तथा 'कलम का सिपाही' मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। आप के साहित्य में राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को तथा भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को लेकर आपने 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' को जन्म दिया है। आपके साहित्य में समाज की कुरीतियाँ, राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण हुआ है। आपकी कुतियों में दलित एवं शोषित के प्रति आंतरिक संवेदना पाठक को जागरूक करती है।

प्रतिज्ञा, निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि बारह उपन्यास और करीब तीन सौ कहानियाँ प्रेमचन्द की कलम से निकल पडी है। आप का सारा साहित्य विश्व की प्रसिद्ध भाषाओं में और भारत की सारी भाषाओं में अनूदित हुआ है। आप की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खणडों में संकलित हैं।

### 2. कथानक :-

माँ और बहूँ के बीच झगडा चलता रहता है। उस वातावरण में छोटी लडकी भी घबराती रहती है। सास और बहू के बीच अन्योक्तियाँ भी चलती रहती है। बार-बार गृहस्थी के जंजाल पर तबीयत झुँझलाती है। घर के लोगों में कोई परस्पर प्रेम-भाव नहीं। ऐसी गृहस्थी में सदा आग सुलगती रहती है।

जन्माष्मी के दिन घर में दिया नहीं सुलगाया जाता है। पत्नी नहीं मानती है। लेखक परास्त होकर बाहर चलेजाते हैं और अंधेरी कोठरी में बैठते हैं। इतने में पण्डित जयदेव आकर झाँकी देखने के लिए कहते हैं। लेखक उदासीन रहते हैं।

कहानी का आरम्भ घर की गडबडी से होता है, सास-बहू के झगडे से, लेखक कहीं अंधेरी कोठरी में अन्य मनस्क बैठते हैं। पण्डित जयदेवजी आकर इधर - उधर की बेकार बातें करने लगते हैं। लेखक को चुप रह कर सुनना ही पडता है। उस में सेठे घूरेलात सेले कर, भिक्षुक का सत्युग्रह आदि विषयों का विवरण हुआ है। पंडित घूरेलाल के यहाँ एक लाख ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

जयदेव और लेखक दोनों ठाकुर द्वारे में पहुँचते हैं। दर्शकों की भीड लगी रहती है। मन्दिर की बनावट और सजावट में लेखक को ऐसा लगता है कि कृष्ण की आत्मा कहीं खो गई है। उनकी रत्न

- जटित, बिजली से जगमगाती मूर्ति देख कर लेखक लेखक के मन में ग्लानू होने लगती है। मंदिर में जयदेव को सब लोग जानते हैं।

केलकर जी अपने अपने गान्धर्व-विद्यालय के कई शिष्यों के साथ तंबूरा लिए बैठते हैं। पखावज, सितार, सरोद, वीणा और अन्य अनेक वाद्ययन्त्रों के साथ संगीत माधुरी की लहर पल्लवित होती है। उसमें बिजली की चकाचौंध, रत्नों की जगमगाहट था कोई भौतिक विभूतियों का समाशेह नहीं है। लेखक की भावना में यमुना का तट, गुल्म-लताओं का घूँघट मुँह पर डाले हुए। वहाँ मोहनी गायें, गोपियों की जलक्रीडा, वंशी की मधुर ध्वनि, शीतल चाँदनी, और प्यारा नन्द किशोर लहराते रहते हैं।

लेखक उसी आनन्द विभूति की दशा में रहते हैं, कंसर्ट बन्द हो जाता है। आचार्य केलकर के एक किशोर शिष्य घुरपद अलापना शुरू करता है। उसके कण्ठ स्वर में ऐसा मादकता भरा लालित्य होता है कि प्रत्येक स्वर लेखक को रोमांचित कर देता है उस स्वर में जादू भरी शक्ति होती है। मन के एक नये के एक नये संसार की सृष्टि होने लगती है। ऐसा जान पडता है कि दु:ख केवल चित्त की वृत्ति है, सत्य हैं केवल आनन्दा एक स्वच्छ करुणाभरी कोमलता, जैसे मन को मसोसने लगती है।

लेखक कुछ समय तक अतीत में चले जाते हैं। उनका छोटा भाई बहुत दिन हुए उनसे लडकर रंगून भाग गया था और वहीं उसका देहान्त हुआ। वह अब स्मृति -मूर्ति बन कर लेखक के मन को मुखरित करने लगता है।

गाना बन्द हो जाता है। सब लोग उठ कर जाने लगते हैं। लेखक अपनी कल्पना - सागर में ही डूब बैठते हैं।

सहसा जयदेव पुकारते हैं- ''चलते हो, या बैठे ही रहोगे?''

3. कथोपकथन :-

कहानी पारिवारिक वातावरण पर निर्मित है और कथोपकथन सास-बहू के झगडों को सूचित करते हैं। पति (लेखक) और पत्नी के बीच वार्तालाप में पत्नी की बेपरवाही व्यक्त होती है -

पति - क्या आज घर में चिराग न जलेगें?

पत्नी - जला क्यों नहीं लेते! तुम्हारे हाथ नहीं हैं?

पति - अच्छा चुपरहो, बहुत बढ़ो नहीं

पत्नी - ओहो! अगर एक कहोगे, तो दो सुनो गे!

पति - इसी का नाम पतिव्रत है।

पत्नी - जैसे मुँह होता है, वैसे ही बीडे मिलते हैं।

## 4. विशेषताएँ :-

'झाँकी' कहानी में भगवान कृष्ण के दर्शन की विशेषता का विवरण बताया गया है। पण्डित जयदेव जी आकर लेखक को खृष्णचन्द्र की झाँकी में लेजाते हैं। वहाँ भोजन आदि के प्रबन्ध की प्रशंसा होती है।

भगवान कृष्ण के अतिश्य अलंकरण को देख कर लेखक को लगता है कि कहीं आत्मा खो गई हो। भगवान के नाम पर होने वाले दर्प को देखकर लेखक को ग्लानि होती है। अन्त में संगीत - मण्डली की स्वरमाधुरी में लेखक तल्लीन हो कर बैठते हैं। और अन्त में लेखक तल्लीन हो कर लेखक को ग्लानि होती है। और अन्त में जयदेव उनको चौकस कर के घर लौटा लाते हैं।

कहानी में पति - पत्नी के अलावा अधिक पात्र - वैचित्रि नहीं है। मेले या झाँकी में होनेवाले भौतिक वातावरण का विवरण हुआ है। भाषा साधारण खडी बोली है।

'झाँकी' पारिवारिक यथार्थ कथा है। आत्म - कथात्मक शैली में कहानी की रचना हुई है।

**Lesson Writer**

*डॉ. शेख मौला अली*